वर्ष 26 | माघ-फाल्गुन | फरवरी-2022 | अंक 1 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023
मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

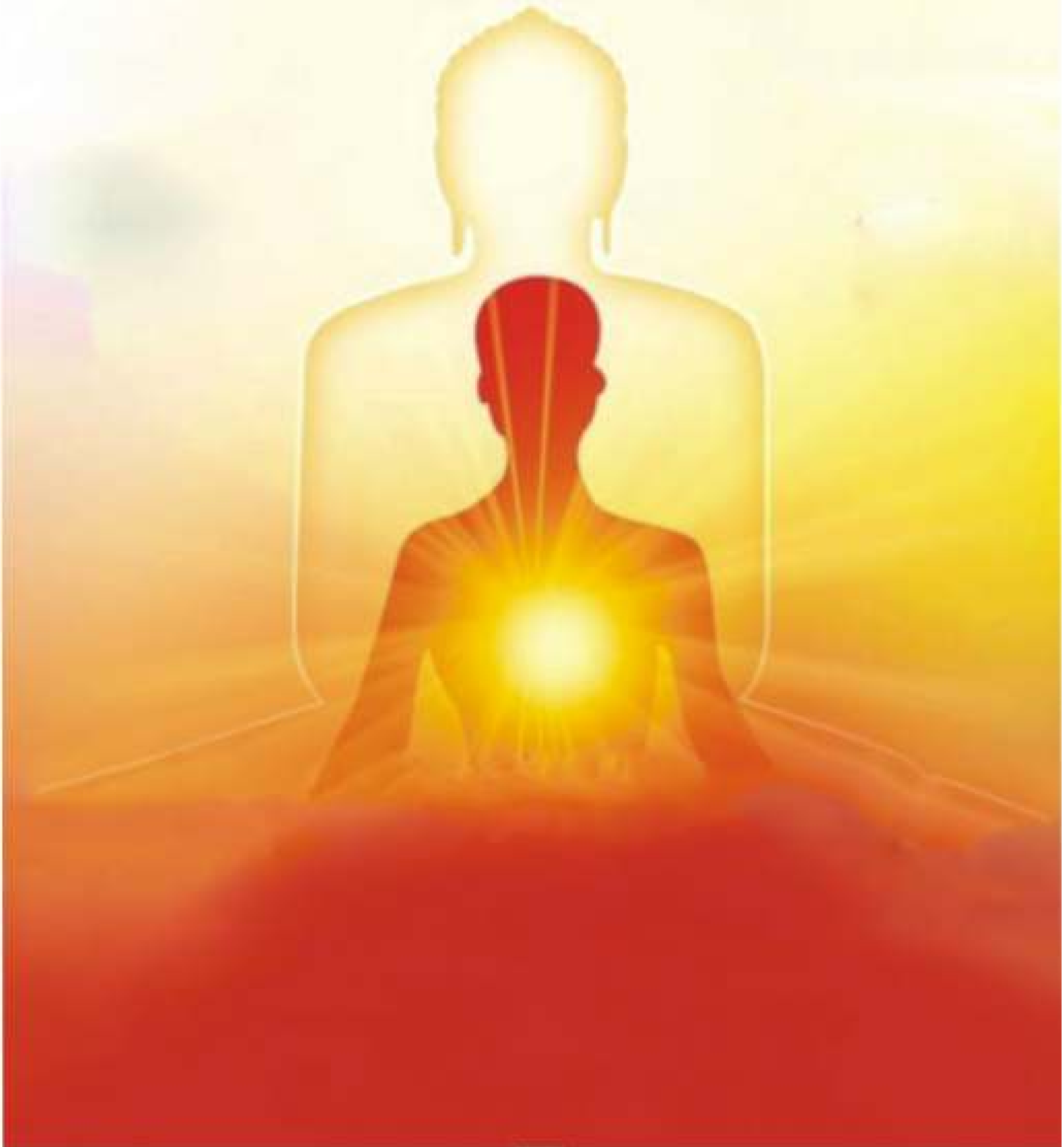

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

आत्महित के लिय सत्संग जैसा प्रबल और कोई निमित्त दिखाई नहीं देता परन्तु जो जीव लौकिक भाव से अवकाश ग्रहण नहीं करता, उसे यह सत्संग भी प्राय: निष्फल जाता है और यदि सत्संग थोड़ा फलदायी हुआ हो तो भी लोकावेश अधिकाधिक रहता हो तो वह फल निर्मल होने में देर नहीं लगती।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

दुल्लहे खलु माणुसे भवे, चिरकालेण वि सव्वपाणिणं।
गाढ़ा य विवाग कम्मुणो, समयं गोयम ! मा पमायए॥

निश्चय ही मनुष्य-भव-योनि में जन्म पाना बहुत दुर्लभ है। सभी प्राणियों को यह बड़े दीर्घकाल के बाद प्राप्त होता है। कर्मो के फल बड़े गाढ़-तीव्र होते हैं। हे जीव ! क्षण भर के लिये भी प्रमाद मत कर। - **उत्तरा. सूत्र, 10.4**

पाथेय

प्रात: के इस उगते हुए सूर्य के सम्मुख, मैंने इस विश्व की प्रशंसा के गीत गाए, केवल जिसमें यह सम्भावना निहित है कि वह तुम्हारी चाहना कर सकता है और तुम्हें प्राप्त कर सकता है यहां तक जिसमें स्वयं तुम ही बन जाने का ज्ञान है वर्तमान। मैं आश्चर्य करता हूं उन प्रज्ञ-जनों पर जो इस विश्व को छोड़ किसी अन्य लोक में प्रवेश करने की करते है तीव्र कामना हे नाथ, हे मेरे प्रभु, तुमने मेरे हृदय में भर दिया है अगाध संतोष मैं प्रत्येक परिस्थिति में पाता हूं स्वयं को सहज शान्त, सन्तुष्ट तो भी मेरी अन्तरंग सत्ता करती है अनवरत अभीप्सा तुम्हारा अधिकाधिक प्रेम एवं सौंदर्य पाने के लिए तुम्हारा ज्ञान एवं प्रकाश उपलब्ध करने के लिए मैं पूर्णतया तुम्हारी इच्छा पर निर्भर हूं, प्रभु तुम अपनी अपार कृपा वश, मेरी समूची सत्ता का करो रुपान्तर।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-27 माघ-फाल्गुन फरवरी 2022 अंक-2

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- अपरिग्रह : आज की आवश्यकता है (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन	5
4- आदिनाथ ऋषभदेव एवं आदिदेव शिव के समन्वय बिन्दु- ललितकुमार नाहटा	6
5- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा., प्रधान द्रव्य आज्ञा	7-9
6- धर्मकार्य मे विघ्न डालने के कटु फल.... मीठा बनो, मीठा बनाओ	10
7- मैं राजरानी (साध्वी)-पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.	11-13
8- सर्वश्रेष्ठ अध्यात्म शास्त्र, धर्म-बीज का रोपण	14
9- गुणों की माला पहनें...., प्रेम प्रभु	15-17
10-हार न मानो, सतत संघर्ष करो, संयम ही जीवन है	18-20
11-सफल कैसे हों ?, ज्ञान और कर्म	21-22
12-हृदय रोगों को हम स्वयं आमंत्रित करते है, प्रबुद्धता जगाएँ....	23-24
13-जन-जन की भागीदारी ही बचाएगी पर्यावरण को	25-26
14-54 जिनालयों में पूजा करने वाले सुश्रावक ''जिनदास''	27-28
15-वर्गपहेली- 321 - जयंतीलाल जैन	29
16-ज्ञान गंगोत्री- 321 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.	30
17-शासन-समाचार	31-41
18-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है	42

मालव भूषण गुरुदेव की छटी पुण्यतिथि पर देशभर के श्री संघों में गुरु समर्पण भाव से मनाई गई

उज्जैन- पूज्यपाद गुरुदेव मालवभूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराजा की छटी पुण्यतिथि दिनांक 23 जनवरी को गुरु समर्पण और भाव स्मरण के साथ मनाई गई। भारतभर के जैन श्री संघों में गुरु स्मरण में रथयात्रा, आयंबिल, अनुकम्पा दान, गौशाला दान के साथ मनाई गई। सामूहिक जाप, सामायिक के आयोजन भी हुए। भोपावर, नागेश्वर उज्जैन, मुंबई, पालीताना जैसे अनेक श्रीसंघों को पूज्यपादश्री को भाव से स्मरण किया गया। भक्तों ने अपनी वंदना अर्पित की।

संपादकीय

अपरिग्रह : आज की आवश्यकता है

भगवान श्री महावीर का चिंतन मौलिक एवं त्रैकालिक है। प्रभु ने जो कहा वह अनुभूतिजन्य था। प्रभु का दर्शन,व्यक्ति का नहीं आचरण का पुजारी है। आज हम जिस तरह से जीवन को जी रहे है वहां जीवन में दर्शन नहीं प्रदर्शन और दिग्दर्शन दिखाई देता है। सर्वोदयी तीर्थ स्थापक प्रभु वीर ने आचार के सिद्धांतों की जनमानस के लिये बात इसीलिये कही है कि व्यक्ति का आचरण शुद्ध होगा तो राष्ट्र का आचरण विशुद्ध रहेगा। विचारों में तो शुद्धता होनी ही चाहिये परन्तु आचरण में रही विशुद्धता व्यक्ति को स्वयं को उज्जवलता प्रदान करने से कहीं अधिक दूसरे अन्य लोगों को प्रभावित करती है। सर्वज्ञ तीर्थंकर परमात्मा ने मानव समाज एवं राष्ट्र को मोह से दूर रखने के लिये सर्वकालीन उपयोग पांच व्रत,सिद्धांतों को हमें प्रदान किया है, वे अहिंसा,सत्य,अस्तेय ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह है सिद्धांतों का आरंभ अहिंसा से होता और उसका चरम आदर्श अपरिग्रह में समाहित हो जाता है। प्रभु ने अपरिग्रह को अंत में रखकर इसके महत्व को प्रतिपादित कर दिया है।

जिस प्रकार सोने की थाली में कोई लोहे की कील ठोक दें उसी प्रकार आज की अगर कोई समस्या है तो वह परिग्रह की है। सेठियों,अधिकारियों,व्यापारियों के द्वारा किये जाने वाले धन संग्रह के वृतांत अक्सर हम समाचार पत्रों में पढ़ते है एक परिग्रही अधिकारी तो ऐसे थे जो नोटों को गादी के नीचे बिछा कर उस पर सोते थे जब पकड़े गये तो न गादी रही न नोट। परिग्रह को बड़े भाई भ्रष्टाचार ने हमारे देश से पवित्र सदाचार को जैसे विलोम कर दिया है। छोटे से छोटे कार्य को करने के लिये भ्रष्टाचार के रुप में देश में फैल रहे परिग्रह की बात लोग करते है उसके बगैर तो कोई कार्य होता नहीं है। आचारहीनता को बढ़ावा देनेवाला परिग्रह आज के लिये नासुर बन गया है। परिग्रह के संवर्धन ने समाज में अनैतिकता और स्वार्थ को बढ़ावा दिया। तो क्या श्रीमहावीर के सिद्धांत अप्रसांगिक हो गये है? प्रभु की वाणी झूठी सिद्ध हो रही है ? पर मैं कहता हूं ऐसा नहीं है। सम्पन्नता संचय के लिये पीछे पागल होकर जीवन का महत्वपूर्ण समय धन के पीछे दीवाना होकर गंवा देने वाले भी उपयोग तो अन्यायों की तरह सीमित ही कर पाते है। वे भी कोई सोने के बिस्कुट या सोने चांदी के दाल-चांवल तो नहीं खाते है ? धरती का सबसे बुद्धिमान एवं विकसित प्राणी जब सब कुछ होते हुए भी परिग्रह संवर्धन में लगकर जानवरों से भी अधिक निचले स्तर का काम करें तो उसे क्या कहा जाये ?अनियमित असीम परिग्रह भष्टाचार को ही जन्म देता है, भ्रष्टाचार मनुष्य में भ्रष्ट आचरण पैदा कर उसे नैतिकता,सत्यता से दूरकर स्वार्थी भाव से भर रहा है। हमारे देश की परम्परा आध्यात्मिक रही है। जीयो और जीने के मंगलसूत्र हमारे सहस्त्रमुखों में बसे हुए है इसलिये यह बढ़े खेद की बात है कि जिस देश की धार्मिकता और सांस्कृतिक विरासत में तन को भी परिग्रह माना जहां **"सर्वे भवन्तु सुखर्नः"** का संदेश दिया गया आज उसी आर्यावृत्त भरत देश में विषम वासनाओं ने अपना अधिकार कर लिया हैं सादा जीवन उच्च विचार की बात अब बेमानी दिखाई देती है। किंतु परिग्रह के परिणामों ने यह सिद्ध कर दिया है कि प्रभु वीर का सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है इसके परिणामों में कहीं कोई अंतर नहीं आया है, 2500 वर्ष बीत जाने पर भी आज भी यह सिद्धांत शाश्वत ही लगता है।

"लोभी मूलमनर्थानाम्" लोभ अनर्थो का मूल है। अपने पास बहुत अधिक धन होना कोई गलत बात नहीं है पर यह ख्याल तो होना ही चाहिये कि वह धन किस मार्ग से आप तक पहुंचा है,कहीं इसके मूल में मायाचार,पापचार का आधार तो नहीं है,अगर ऐसा है तो फिर यह निश्चित है कि परिग्रही व्यक्ति में सत्य का लोप हो जाता है। परिग्रही ,हिंसा,मिथ्या,स्वार्थ जैसे दुगुर्णों से युक्त हो जाता है और ऐसा व्यक्ति निश्चित रुप से फिर समाज का शीलभंग करता है। जबकि अपरिग्रही व्यक्ति सर्वस्व हरण की भावना से होने वाली भाव हिंसा के दोष से भी बच जाता है, न्यायोचित उर्पाजन से प्राप्त धन को वह सद्व्यय कर लक्ष्मी का अपमान भी नहीं करता एवं आचार भ्रष्ट हो जाने से भी बच जाता है।

आज जब चारों ओर प्रत्येक व्यक्ति कौड़ीपति से कोटिपति होने के लिये प्रयत्नशील है तो एक बार उसे ऐसे परिग्रही व्यक्तियों की और एक नजर उठाकर देख लेना चाहिये कि वे करोड़पति होने के बाद भी मिठाई खाने से वंचित क्यों है ? दो रोटी खाने से मोहताज क्यों हो गये है ? क्यों वे अपने धन का उपयोग अपने लिये ही नहीं कर पा रहे है ? यह देख पाने की शक्ति व्यक्ति को परिग्रही नहीं बनने देगी।

तो आईये ! आवश्यकता से अधिक की बात करने से हम बचे, सत्य से सरोकार रखे यही जीवन में आनंद की स्थिति पैदा करेगा। आज हम सबको वास्तव में यहीं चाहिये भी।

**** डॉ. सुभाष जैन***

आदिनाथ ऋषभदेव एवं आदिदेव शिव के समन्वय बिन्दु

✻ ललितकुमार नाहटा

परमात्मा ऋषभदेव जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर है। मानव जाति को असि (अस्त्रा), मसि (स्याही/कलम), कृषि, लिपि ज्ञान, अंक ज्ञान, पशुपालन, शिल्पकला आदि का ज्ञान प्रदान करनेवाले ऋषभदेव ही हैं, जिन्हें बड़े प्रेम व श्रद्धा से आदिनाथ भी कहते है। तीर्थकर आदिनाथ ऋषभदेव मूलतः वैदिक परम्परा के प्रतिष्ठित प्रागैतिहासिक शलाका पुरुष हैं। उनकी तीर्थ-यात्रा की पदचाप ब्राह्मण परम्परा से श्रमण-परम्परा तक समभाव से अनुगुंजित है व समन्वय-बिन्दु के रुप में लोकाकृत तीर्थ पुरुष हैं। वेदों में ऋषभदेव का जगह-जगह उल्लेख इसका प्रमाण है।

ऋषभदेव जैनों के आदि तीर्थकर है तो वैदिकों के लिये साक्षात विष्णु का अवतार है। शिवपुराण के अनुसार अट्ठाईस योगावतारों में ऋषभदेव की भी गणना हुई है। ऋग्वेद के सूत्र (10.136.1) में केशी की स्तुति है जो ऋषभदेव के लिये ही है। जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में मात्र ऋषभदेव की मूर्तियों में ही केश (जटा) उत्कीर्ण करने की परम्परा प्राचीनकाल से है, जो आज तक अक्षुण्ण रुप से चली आ रही है।

ऋग्वेद के उल्लेखानुसार ऋषभदेव अनंत चतुष्टय रुपी चार श्रृंगों में सम्यक ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र रुपी तीनों पदों से युक्त हैं। ज्ञानोपयोग व दर्शनोपयोग, ऐसे दो सिरों के धारक हैं। पांच इन्द्रियों, मन एवं बुद्धि ऐसे सात हाथों से युक्त है। वे तीनों योगों से बद्ध होकर मृत्यों में निवास करते हैं।

श्रीमद् भावगत में ऋषभदेव की पांच पीढ़ियों-स्वायंभुव मनु, प्रियव्रत, आग्नीध्र, नाभि तथा ऋषभ का वर्णन मिलता है व उनकी माता मरुदेवी का भी। ऋषभदेव ही शिव है, उनका मोक्षमार्ग ही शिवमार्ग है व मोक्ष ही शिवगति है। ऋषभ को केशी कहा है, जिनका शाब्दिक अर्थ जटाधारी होता है। जैसे तीर्थंकर परमात्मा ऋषभदेव पाप रुपी अंधकार, काम, लोभ, मोह, राग-द्वेष आदि प्रवृत्तियों के विनाशक है, वैसे ही शिव को इसी प्रवृत्तियों के लिये संहारक कहा गया है।सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यग्चारित्र के प्रतीक त्रिशुल को शिव ने धारण किया है।

हिन्दू संस्कृति श्रमण व ब्राह्मण संस्कृतियों का सम्मिलित रुप है। ऋग्वेद हिन्दू साहित्य का प्राचीनतम ग्रंथ है, जिसमें ऋषभदेव व श्रमण संस्कृति का पर्याप्त उल्लेख मिलता है तो वहीं हड़प्पा व मोहनजोदड़ों में भी इस ग्रंथ में अनेक स्थलों पर ऋषभदेव की स्तुति महादेव के रुप में की गई है। जैन धर्म को प्राचीनकाल में आर्हत व ब्राह्मण धर्म को बार्हत के नाम से जाना जाता था जिसे ऋग्वेद में भी उल्लेखित किया गया है।

हिन्दू परम्पराओं में जो अवतारों की चर्चा है, उसमें ऋषभदेव का क्रम 8 वां है, किन्तु यदि मानवीय रुप में अवतार की दृष्टि से विचार करें तो लगता है कि मानव रुप में वे प्रथम अवतार हैं।

परवर्ती ग्रंथ श्रीमद् भागवत् में ऋषभदेव को आदि-पुरुष सिद्ध किया है। लिंगपुराण, शिवपुराण, आग्नेय पुराण, ब्रह्ममाण्ड पुराण, विष्णु पुराण, कर्म पुराण, वाराह पुराण और स्कन्द पुराण में ऋषभदेव का उल्लेख एक धर्म प्रवर्तक के रुप में हुआ है। शिव पुराण में शिव का आदि तीर्थकर ऋषभदेव के रुप में अवतार लेने का उल्लेख है। प्रभास पुराण में भी इसी प्रकार का उल्लेख प्राप्त है। अपने देश में ही नहीं, विदेश में भी ऋषभदेव मानव सभ्यता के सूत्रपात करने वाले महापुरुष के रुप में पूज्य रहे हैं। चीनी त्रिपिटकों में उनका उल्लेख है। जापानी उनको रोकशाब कहकर पुकारते हैं। मध्य एशिया, मिस्र, यूनान तथा फणिक लोगों की भाषा में उन्हें रेशफ कहा गया है, जो ऋषभदेव का अपभ्रंश रुप है।

अक्कड़ व सुमेरों की संयुक्त प्रवृत्तियों से उत्पन्न बेबीलोनिया की संस्कृति व सभ्यता बहुत प्राचीन मानी जाती है। उनके विजयी राजा (2123-2018 ईसा पूर्व) के शिलालेखों से ज्ञात होता है कि स्वर्ग और पृथ्वी का देवता ऋषभ हैं।

हित्ती जाति पर भी ऋषभदेव का प्रभाव है। उनका मुख्य देवता ऋतुदेव था। उसका वाहन बैल था जिसे तेशुव कहा जाता है जो तित्थयर उषभ का अपभ्रंश ज्ञात होता है। ऋषभदेव के पुत्र भरत और बाहुबली में चक्रवर्ती को लेकर प्रतिस्पर्द्धा हुई, वहीं शिव पुत्र गणेश और कार्तिकेय में भी प्रतिस्पर्द्धा हुई। ऋषभदेव को आदिनाथ कहते हैं तो शिव को आदिदेव। शिव को देवों के देव महादेव कहते हैं तो ऋषभदेव को भी देवाधिदेव।

वैदिक परम्परा में शिव का वाहन वृषभ (नन्दी) है व जैन परम्परा में ऋषभदेव का लांछन (चिन्ह) वृषभ (नन्दी) है। ऋषभदेव व शिव, दोनों जटाधारी हैं। आदिदेव शिव और आदि तीर्थकर ऋषभ के स्वरुप गुण, तप, ज्ञान और चैतन्य में इतना साम्य है कि ऐसा लगता ही नहीं कि इनका पृथक-पृथक अस्तित्व हो। अधिक उपयुक्त यह लगता है कि व्यक्तित्व एक ही है, जिसे भिन्न-भिन्न रुचि व भिन्न धारणा के लोग भिन्न नामों से जानते है और मानते हैं। शिव को कैलाश-वासी कहा जाता है। तीर्थंकर ऋषभदेव की तप व निर्वाण भूमि अष्टापद है, जो संभवतया कैलाश या कैलाश क्षेत्र ही है।

शिव के प्रमुख अनुयायी गण कहलाते हैं। उसी प्रकार ऋषभदेव के प्रमुख शिष्यगण कहलाते है व उन गणों के अधिनायक गणधर कहे जाते हैं। शिव के प्रमुख नायक (गण) उनके पुत्र गणेश थे, वहीं ऋषभदेव के पुत्र ही प्रमुख गणधर ऋषभसेन थे।

पाप की सजा भारी...! *प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

देवगति में किल्बिषिक का जन्म :-

मानों कि कोई निंदक वृत्ति वाला परपरिवादी अच्छा धर्दिष्ठ हो। स्वभाव से, वृत्ति प्रवृत्ति से महानिंदक हो, लेकिन प्रतिदिन सामायिक पूजा प्रतिक्रमण आदि धर्म प्रवृत्ति भी करता हो और शुभ प्रवृत्ति में मानो किसी जीव ने देवगति का आयुष्य कर्म उपार्जन भी किया हो तो वह देवगति में जाएगा जरुर, देव बनेगा भी सही इसमें शंका नहीं है। परन्तु कैसा देव बनेगा ? क्या होगा इस विषय में उपाध्यायजी स्वयं कहते हैं-

देव किंल्बिषिक ते उपजे, ए फल रोकारोक हो ॥

वैमानिक देवलोक में किंल्बिषिक नामक हल्के देव के रुप में उत्पन्न होता है। ये हलकी कक्षा के देव होते हैं जिन्हें वहां के अन्य देवगण हल्की दृष्टि के गिनते हैं। हल्के मानते हैं। जो ईन्द्रादि के अनुचर-सेवक-नौकर के रुप में रहते हैं। साफसूफी-सार संभाल आदि कार्यो की नौकरी उनको करनी पड़ती है। ईन्द्रादि की आज्ञानुसार काम करना पड़ता है। गति की दृष्टि से कहलाएगा जरुर देवलोक। लेकिन नौकरी का हल्का काम करना पड़ेगा। अतः उसकी यहां की धार्माराधना जरुर पुण्योपार्जन कराएगी और वह पुण्य देव गति में भी ले जाएगा, लेकिन इतने से राजी होने जैसी बात नहीं है वहां किंल्बिषिक देवपना नौकरी की हीनपता, हल्कापना, दुःखदायी है, यह निंदा का फल है। किंल्बिषिक देवता के 3 उत्पति स्थान है।

उसी तरह अशाता वेदनीय कर्म तथा आयुष्य कर्म भी निंदक अशुभ कर्मो का उपार्जन करता है। उसी तरह कहते है- **''तत्प्रदोष निन्हवमात्सर्यान्तराया सादनो पघाताज्ञान दर्शना वरणयोः''** इसमें निन्हववृत्तिवाला मत्सरवृत्तिवाला निंदा की प्रवृत्ति करने से ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्म दोनों ही बांधता है। उसी तरह से पडिणिओ-प्रत्यनीक अर्थात् शत्रुता की वृत्ति से भी वह दर्शन मोहनीय कर्म उपार्जन करता है। उसी तरह अन्तराय कर्म के विषय में कहते हैं- **जिण पूआ विग्घ करो, हिंसाई परायणी जयइ विंग्घ''** ॥ कर्मग्रंथ में देवेन्द्रसूरि महाराज यहां ''हिंसाई'' शब्द में आदि शब्द से हिंसा आदि 18 ही पाप स्थान लेते हैं और इन 18 ही पापों के सेवन से तथा जिन पूजा आदि में विघ्न को वृत्ति से अन्तराय कर्म का उपार्जन करता है। इस तरह परपरिवाद निंदा पापस्थानक का सेवन करने वाला सब अशुभ कर्मो का सेवन करता है और उन पापकर्मो के उदय में आने से महादुःख भिन्न गतियों में भोगता है।

मुनि निंदा के पाप और कलंक लगाने का फलः-

राम-सीता की रामायण आपने सबने सुनी है। सीता को राम ने निकाल दिया और सती सीता जंगल में आश्रम में गई। वहां रही। गर्भ का पोषण किया और अन्त में लव-कुश को जन्म आश्रम में दिया ! लव-कुश बड़े हुए और रामचंद्रजी से युद्ध भी हुआ। और अन्त तक सीता राम से पुनः न मिली और सीता भूमि में समा गई। यह जो वृत्तांत है। इस विषय में जैन रामायण के अंतर्गत- सीता के ऊपर आए कलंक के कारण सीता ने अपने पूर्व जन्म में बांधे हुए पाप कर्म कारण भूत है ! उपदेश प्रासाद के कर्त्ता पू. लक्ष्मीसूरि महाराज इस संबंध में सीता का पूर्व जन्म और उस पाप को प्रगट करते हुए लिखते हैं कि-

इसी भरत क्षेत्र में मृणालकुंड नगर में श्रीभूति नामक पुरोहित पंडित रहते थे। उनको सरस्वती नामक पत्नी से एक कन्या की प्राप्ति हुई थी। उस पुत्री का नाम वेगवती रखा था। (यही सीता का जीव था) यह ब्राह्मण परिवार लोक में प्रसिद्ध था। लोक इन्हें आदर-सम्मान देता था। एक बार इसी मृणालकुंड नगर में एक ज्ञानी-ध्यानी महायोगी महान तपस्वी मुनि महाज्ञानी भी थे। चार्तुमास वहां हुआ। प्रवचन के प्रभाव से एवं तप की महिमा से हजारों लोग मुनि के दर्शनार्थ आने लगे। काफी भीड़ जमने लगी। मुनि की प्रशंसा सर्वत्र सुगंध की तरह फैलने लगी। इधर श्रीभूति पुरोहित का ब्राह्मण परिवार पहले के जितना सन्मान नहीं पाता था। अपनी प्रतिष्ठा कम हो गई, कोई पूछता नहीं है इस बात से उपाश्रय के समीप रहते हुए इस परिवार की वेगवती स्त्री से मुनि महात्मा की प्रशंसा सहन नहीं हुई। मनुष्य की यह एक विचित्र कमजोरी है कि यश-प्रतिष्ठा-धन-संपत्ति ऐश्वर्यादि अपने स्वयं को नहीं मिला है इस विषय का ज्यादा दुःख नहीं है परन्तु ये ही वस्तुएं दूसरे को अधिक मिली है इससे यह ज्यादा दुःखी है। अब इस दुःख को मिटाने के लिये भी ईर्ष्याद्वेष-मत्सरादि वृत्ति से

निंदा-परपरिवाद करने में वह सुख मानता है। राजी होता है। कुत्ता भी हाथी को भूंकते हुए भौं....भौं करके, जाते हुए हाथी को मैंने भगाया, जाते हुए मनुष्य को (चोर समझकर) भी मैंने भगाया यह मानकर कुत्ता भी खुश होता है। राजी होता है। संतोष मानता है। अपने आपको बहादुर समझता है। उसी तरह परपरिवादी-निंदक वृत्तिवाला भी किसी की निंदा करके, किसी पर कीचड़ उछाल कर खुश होता है। 4-5 जन की टोली में बैठकर गप्पे लगाते हुए, किसी के विषय में सुनी-सुनाई, सच्ची-झूठी भिन्न-भिन्न बातें करते हुए 2-4 घंटे का समय बिताते हुए संतोष मानता है। प्रसन्न होता है और अपने आपको दिल्ली का शहनशाह मान लेता है। अक्सर लोगों का विपरीत स्वभाव है। किसी के गुणों की गुणानुवाद सभा में बैठेंगा तो सिरदर्द होगा। वहां गुण श्रवण में रस नहीं आएगा। लेकिन किसी टोली में चलती हल्की बातें झूठी खराब कृत्रिम बातें तथा दोष श्रवण की बातों में रस आता है। ऐसी बातें पहले पसंद आती है। यही मनुष्य का स्वभाव और रस मनुष्य को निंदक बनाता है। सुनकर ही वह शिखता है कि निंदा कैसे की जाती है। लोगों को आंख की अपेक्षा भी कान का विषय और व्यापार अधिक गुण की अपेक्षा दोषों के श्रवण में, तथा प्रशंसा की अपेक्षा निंदा में ज्यादा रुची है, वैसी कान की आदत है ऐसा लगता है। आंख और कान में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि आंख के तो पलक है। न देखना हो तो एक क्षण में दोनों पलक गिरा दिए कि देखना बन्द हो जाता है। परन्तु कान पर वैसी व्यवस्था नहीं है। न सुनना हो तो कान बन्द कर दो.... परन्तु कान बन्द करें कैसे ? कान पर कोई पडल तो है नहीं। कान कैसे बन्द करें ? अतः कान खुल्ले ही रहते हैं, अनचाही बातें भी कान में घुस जाती है और दिमाग खराब करती है परन्तु इसका उपाय बताते हुए प्रशमरतिकार कहते हैं कि-

स्वगुणाभ्यासरतमतेः परवृत्तान्तान्धमूकबधिरस्य।
मदमदनमोहममत्सर रोष विषादरै धृष्यस्य॥
प्रक्षमाव्यायाय सुखाभिकांक्षिणः सुस्थितस्य सद्धर्मे।
तस्य किमौपम्यं स्यात् सदेवमनुजेऽपि लोकेऽस्मिन्॥

स्व=अर्थात् आत्मा। आत्मा अपने गुणों के अभ्यास में लीन हो जाय और पारकी प्रपंच में, पराई बातों में अंधा, गूंगा और बेहरा हो जाना चाहिये। गांधी के तीन बंदर पराए दोष देखने में अंधा बन जाना चाहिये। कोई पूछे तो कह देना चाहिये कि भाई मुझे बरोबर नहीं दिखता है। वैसे ही पराई बात सुनने में बधिर जैसा बनना चाहिये, अरे भाई ! अरे भाई ! मुझे नहीं सुनाई देता है। इस तरह तीनों कार्य प्रथम करके पराए दोष देखने कहने सुनने से निवृत्त होकर स्वगुणों को साधना में जो मस्त बन जाय वही सच्चा साधक कहलाएगा और अभिमान काम अर्थात् विषय वासना मोह मत्सरवृत्ति अर्थात् आंतरिक ईर्ष्या द्वेष और रोष (आंतरिक क्रोध) तथा खेद-विषाद आदि के आधीन नहीं होना चाहिये। इस तरह जो प्रशम-प्रशान्त, अव्याबाध=बाधा रहित अनन्त सुख (मोक्ष) का इच्छुक है और अपने आत्म धर्म में जो लीन है, दृढ़ है, ऐसे श्रेष्ठ साधक पुरुष की उपमा देव और मनुष्यों से भरे हुए इस लोक में किससे दी जा सकती है ? अर्थात् परनिंदा त्यागी कितना श्रेष्ठ है कि उसकी उपमा की तुलना में भी कोई नहीं आता है। इसलिये निंदा की वृत्ति छोड़ने का सबसे सरल उपाय है गुणानुरागी बनना।

संसार : चार प्रकार के जीव:- 1- उत्तमजीव 2- मध्यमजीव 3- अधमजीव 4- अधमाधम।

संसार में इस वर्गीकरण से जीवों को चार प्रकार का बतलाया गया है। 1- उत्तम पुरुष वो है जो किसी के दोष देखे ही नहीं, किसी दोषों का ख्याल ही न करें, कहने-सुनने की तो बात ही नहीं है ! 2- मध्यम कक्षा के पुरुष वे है जो किसी के दोष देखे या सुने भी सही। मान लो देखने में आ भी गए फिर भी उसकी निंदा न करें, किसी को कहने न लगे वे मध्यम कक्षा के जीव है। 3- जिसके दोष देखे उसे ही निंदक वृत्ति में कहे वह अधम है और 4- जो किसी के दोषों को दिन-रात ढूंढता ही फिरे, देखने में ही मजा आए, और किसी को भूलों का संग्रह करके संसार में गाया ही करें, जो मिले उन सबको कहता ही फिरे वह अधम से भी अधम कक्षा का मनुष्य गिना जाता है। अतः निंदा करना यह अधमाधम पुरुषों का कार्य है !

नीतिकारों ने चार प्रकार के चण्डाल बताए हैं:-

1- जाति चण्डाल 2- कर्म चण्डाल 3- क्रोध चण्डाल 4- निंदक चण्डाल।

1- जो जन्मतः चण्डाल जाति में उत्पन्न हुआ है वह तो जाति चण्डाल कहलाएगा और 2- जो पशु हत्या, चर्म व्यापार, आदि महाक्रूर हल्के पाप करने वाला कर्म चण्डाल कहलाता है और 3- चण्ड का अर्थ है क्रोध। जो तीव्र क्रोध करता है वह क्रोधी चण्डाल कहलाता है। और चौथे प्रकार का चण्डाल है निंदक चण्डाल-जो पराए अवर्णवाद करता है। पराई निंदा

करता-फिरता है। दूसरों के दोष-दुर्गुण ही देखता-कहता फिरता है। आप एक बात पर थोड़ा सोचिए घर में बालक का मल मूत्र साफ करने से माता चण्डाल नहीं कहलाती है और न ही भंगी हरिजन कहते हैं। अरे ! अपने बेटे ने यदि घर में संडास भी किया है तो भी उस पर राख डालकर सूपड़े-झाडु से या दो पुट्ठों से हाथ न बिगड़े इसका ख्याल रखकर उठाकर बाहर फेंकती है। उस कार्य में माँ भी अपना हाथ नहीं बिगाड़ती है जबकि बेटा अपना खुद का होते हुए भी तो फिर हमें पराई गंदी बातें, पराए दोष देखकर, सुनकर, कहकर अपनी आँखें कान और मुंह क्यों बिगाड़ना चाहिये ? मतलब ऐसे निंदक मल-मूत्र-संडास साफ करनेवाले हरिजन-मेहतर-भंगी से भी नीचे की अधमाधम-हल्की कक्षा के गिने जाते हैं। क्योंकि माँ तो हाथ भी नहीं बिगाड़ती जबकि निंदक तो आंख, कान, मुंह-विचार सब बिगाड़ता है। पराई निंदा करके उनके दोष-दुर्गुणों में हम हमारे कपड़े धोना चाहते हैं। अर्थात् हम अपने आपको अच्छा-ऊंचा-शुद्ध दिखाना चाहते है परन्तु यह कैसे संभव है ? **''परना मेल मां धोयां लुगड़ा रे, कहो केम उजलां होय रे''** । पराए दोष-दुर्गुणों को दिखाने-कहने रुपी मेल में हम हमारे कपड़े धोए (अर्थात् दूसरों की निंदा करके अपनी प्रशंसा करके अपने आपको अच्छा दिखाने की बात करें) तो क्या हमारे कपड़े साफ-स्वच्छ होंगे ? कि और ज्यादा मेल लगेगा ? संभव है हमारे कपड़े कम मैले भी होंगे तो भी दूसरों के मेल में धोने से और ज्यादा मेल लग जाएगा। अपने मैले कपड़े भी स्वच्छ शुद्ध पानी में धोते हैं। कीचड़ में कपड़े धोने से सब खराब हो जाएंगे। उसी तरह पर निंदा करते-करते अपने जो गुण होते हैं वे तो सब चले जाते हैं और पराए दोष-दुर्गुण जो हमने गाए वे हमारे में आते जाते हैं। हम दूसरों के दोष-दुर्गुणों से भारी या लिप्त होते जाते हैं। पराई निंदा करना अर्थात् अपने भी गुणों का नाश करना और दोष-दुर्गुणों को बढ़ाना। दूसरों के दोष-दुर्गुणों को बिना पैसे खरीदना।

निंदक को उपकारी मानना:-

किसी की निंदा करना अर्थात् धोबी का धंधा करना। कहा गया है किः-

निंदा करे जो हमारी, मित्र हमारा होय।
साबु गांठ का लेके, मेल हमारा धोय॥

हमारी निंदा करने वाला हमारा महान उपकारी है ऐसा मानकर चलना ज्यादा अच्छा है। निंदक हमारा कितना अच्छा उपकारी है कि वह बिना पानी के और बिना साबु के हमारा मेल धोता है। धोबी को तो कपड़े धोने भी दो तो 5-10 रुपये का खर्च आता है और स्वयं कपड़े अपने हाथ से घर पर ही धोएं तो साबु का और पानी का भी 2-4 रुपये का खर्च आता है। लेकिन निंदक तो हमारा मेल बिना साबु, बिना पानी बिना पैसे के धोता है अर्थात् कितना ज्यादा उपकारी है। इस तरह अपने मन को समझाना चाहिये। महाराष्ट्र प्रांत की मराठी भाषा में एक कहावत है कि- **''निंदकाचे घर असावे शेजारी''** अर्थात् निंदक का घर तो अपने पड़ोस में होना चाहिये। पास में ही सा सामने ही होना चाहिये। जिससे हम सदा ही जागते रहें। हम सदा सावधान रहें अर्थात् कोई भूल करने में, किसी दोष का सेवन करने से बचते रहें, सजाग रहें। अतः निंदक हमारा चौकीदार है, पहरेदार है। जो सदा हमारी रक्षा करता है। हमको खराब होने से, बिगड़ने से खराब लाईन पर जाने से बचाता है। यदि ऐसा विचार करे तो कितना अच्छा और उपकारी लगेगा हमारा निंदक ? अतः बात का दृष्टिकोण बदलकर बात को अच्छे स्वरुप में ली जाय तो हमारी निंदा करने वाले पर भी हमें क्रोध नहीं आएगा। वह हमें हमारा दुश्मन नहीं लगेगा।

भक्ति विजय, भक्त लीलामृत, संत लीलामृत के रचनाकार प्रसिद्ध संत महीपति पहले ग्राम प्रधान का काम करते थे। एक दिन नियमित उपासना में बैठे थे कि जागीरदार का सिपाही बुलाने आ गया। कहा- ''तुरन्त बुलाया है। कोई जरुरी काम हैं। विलंब न करें।'' आखिरकार भगवान से क्षमा मांगते हुए बिना पूजा के वे उठ गये। जागीरदार के पास जाकर काम सुनकर लौटे तो बड़े खिन्न थे कि उन्हें आज बिना पूजा के उठना पड़ा। सोचने लगे कि यह जीवन भी कोई जीवन है। उन्होंने तुरन्त नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। उस दिन से संकल्प लिया कि अब लेखनी का उपयोग मात्र भगवान का गुणगान, संतों के चरित्र की रचना हेतु होगा। बस, यही उनके महान बनने का क्षण था।

धर्मकार्य में विघ्न डालने के कटु फल....

करीब छः वर्ष पहले अहमदाबाद में घटित यह सत्य घटना है। अहमदाबाद में भगवान श्री कुंथुनाथ के मंदिर का निर्माण हो रहा था। द्वेषवश मुनीमजी ने जैनेतरों को उकसाया और जिनालय का कुछ हिस्सा गैरकानूनी है ऐसी उनके पास सरकार में शिकायतें करवाई। जैन संघ ने सत्य प्रमाण प्रस्तुत करके अपना बचाव किया और जिनालय बच गया। परन्तु इस भयंकर पाप का फल मुनीमजी को तो भुगतना ही पड़ा उनकी माताजी जो पूर्णतः स्वस्थ थी उनकी कैंसर से मृत्यु हुई। स्वयं मुनीमजी को मुंह का कैंसर हुआ !!! (जिनालय तुड़वाने के लिए अनेक लोगों के पास बोलते रहने कारण यह फल भोगना पड़ा हो ऐसा संभव है... ज्ञानी जानें) आयु तो उनकी 32 वर्ष की ही थी.... अभी से कैंसर से पीड़ित है। एक जैन व्यक्ति ने भी विरोध में साथ दिया था उनकी भी कैंसर से ही मृत्यु हुई। एक जैन ट्रस्टी का पुत्र भी इस विरोध में सम्मिलित था उसकी पत्नी को हड्डी का कैंसर हुआ और उसके लिये भारी खर्च करना पड़ा। आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं में घिर कर वह बहुत दुःखी हो गया। संघ के एक अन्य ट्रस्टी ने मुनीमजी का साथ दिया था। किसी कारणवश उनकी कमर की हड्डी टूट गई। जैनेतरों में से जो मुख्य विरोधी था उसकी पत्नी को लकवा हो गया और अभी भी वह पीड़ा भोग रही है। उसके छोटे पुत्र की पत्नी रुठ कर पिता के घर चली गई। मंदिर के एक ट्रस्टी को कैंसर हो गया। अन्य विरोधियों के परिवारों में भी इसी प्रकार अकाल मौतें हुई। म्युनिसिपालिटी का इन्सपेक्टर जैन था परन्तु उसने भी विरोधियों का साथ दिया.... उसे भी लकवा हो गया। सबके नामों का उल्लेख यहां नहीं किया गया है। यह सब जानने के बाद प्रत्येक जैन को यह निर्णय करना चाहिये कि धार्मिक क्रियाएं कम हो सकें तो भी कभी भी जिनालय, उपाश्रय, संघ, साधु, धर्म आदि का अल्प मात्रा में भी विरोध नहीं करेंगे.... स्वप्न में भी नहीं...! पुण्यशाली सज्जनों ! विष की परख करनी नहीं चाहिये.... ठीक उसी तरह पाप-पुण्य अदृश्य होते है, दिखते नहीं है फिर भी उन्हें मानना तो पड़ेगा ही। भाई ! विरोध तो पाप का, कषायों का, दुष्कर्मो का करना है ना ? यथाशक्ति धर्माचरण करें.... सत्कार्यो की अनुमोदना करें...!

प्रयाग में एक सभा का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता सर गंगानाथ झा कर रहे थे। जैसे ही श्री महावीरप्रसाद द्विवेदीजी मंच पर आए तो सर गंगानाथ उनके चरण छूने को नीचे झुके। उधर द्विवेदीजी भी सर गंगानाथ के पैर छूने का प्रयत्न करने लगे। द्विवेदीजी बोले- ''आप मेरे गुरु है, आपने मुझे संस्कृत लिखना सिखाया है तो मैं ही आपके चरण स्पर्श करुंगा।'' सर गंगानाथ ने उत्तर दिया- नहीं द्विवेदीजी ! मेरे गुरु तो आप है। आखिर मुझे हिंदी लिखना तो आपने ही सिखाया है।'' विनम्रता ऐसी होती है।

मीठा बनो, मीठा बनाओ

हमारे अन्दर भावना हो कि सब अच्छे हो जायेंगे। हम सबकी दुआएं लेनेवाले काम करते रहें। दुआएं मुझे खुश करेंगी, मीठा बनायेंगी। दूसरे की दुआएं तब मिलेंगी जब हम अच्छा काम करेंगे।

हम अच्छे कर्म करते रहें, दूसरे अच्छे कर्म करते हैं या नहीं उसमें मुझे बीच में आने की जरुरत नहीं, जो मैं अपने को कडुआ बनाऊं। सबमें कोई न कोई विशेषता है। विशेषता देखने से मीठे बन जाते हैं। जो गंभीर सयाने हैं वह हर एक को घर का सदस्य समझते हैं। अपनेपन से देखते हैं। बाहर वाले नहीं है, अपने हैं। अपनेपन में मिठास आता है, प्यार पैदा होता है।

सीखने की भावना भी सुखी और मीठा बनाते है, सिखाने की भावना कड़वा बनाती है। बैठकर लिस्ट निकाले कि हम कड़वा क्यों बने ?

हरेक को सम्मान दो, प्यार दो तो प्यार मिलता है। हम कहें मुझे प्यार मिलता नहीं है, घड़ा उल्टा कर दें और कहे पानी भरता नहीं है। अरे घड़ा तो सीधा, साफ करके रखो।

पहले हम स्वयं मीठा बनें तब दूसरे हमको देख कर मीठा बनेंगे। फिर मुख से बोलने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हमारे नयन बोलने लग जायेंगे। हमारे वचन मीठे हो और अन्दर से शांत और शीतल हों। अन्दर शान्त शीतल तभी हो सकते है जब सभी के गुण उठानेवाले विशाल बुद्धि है। किसकी थोड़ी भी ग्लानि करते हैं या रखते हैं तो अपने को नीचे उतारते हैं फिर ऊपर चढ़ना मुश्किल लगता है।

मैं राजरानी (साध्वी)

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

गतांक से आगे...!

''राजन् ! वह कौन सी रानी थी ? यह तो अंधेरे में पता नहीं चला, लेकिन इतना निश्चित है कि वह कोई रानी ही थी।''

''चलो कोई बात नहीं। मैं उस रानी को ढूंढ लूंगा।''

राजा ने इतना कहकर बात समाप्त की। मैं पर्दे के पीछे रहकर यह सब सुन रही थी।

दासी के मुंह से यह सब सुनकर मैं नख-शिख कांप उठी- बाप रे ! अब मर गये। राजा ने कमल की नाल से मुझे ढूंढ भी ली। अब क्या होगा ?

परन्तु अब पछताये क्या होत जब चीड़िया चुग गई खेत ? मेरा खेत पक्षी चुग गये थे। अब रोने के अलावा मेरे हाथ में कुछ भी नहीं था। गुस्से से पागल हुए राजा ने मुझे महाव्रत को और हाथी को देहांत दण्ड की शिक्षा दी। पर्वत से हाथी सहित हम दोनों को नीचे लुढ़काने की योजना बनाई। राजा की आज्ञा ! इसमें से निकलने का कोई रास्ता नहीं था। मेरा हृदय फड़क.... फड़क....कांपने लगा। मृत्यु का राक्षस आंखों के सामने दिखने लगा। उस राक्षस से कोई बचा सकेगा ऐसा मुझे नहीं लग रहा था।

हजारों लोगों सामने हमें यह कठोर दण्ड दिया गया। मेरी इज्जत पर कादव-कीचड़ उड़ रहे थे। लोगों में भिन्न-भिन्न बातें हो रही थी।

हाथी के ऊपर मैं महाव्रत बैठे थे। महावत हाथी को ठेट पर्वत की धार पर ले गया। वहां रहकर महावत अन्त में अपनी कला दिखाने लगा। पहले हाथी ने एक पैर आकाश मे रखा। लोगों ने ताली बजाई। हाथी ने जब दो पैर बाहर निकलो। लोगों ने फिर तालियां बजायी। हाथी ने अब दो पैर बाहर निकाले। लोगों ने फिर ताली बजायी की गड़गडाट पूर्वक हाथी की कला की सराहना।

महावत ने फिर हाथी के तीनों पैर आकाश में लटकाये और हाथी सिर्फ एक पैर के उपर खड़ा रहा। थोड़ा गफलत में रहे तो हम सीधे घाटी में ! यद्यपि घाटी में गिराकर हम तीनों को मारने की ही योजना थी.... लेकिन मानव की योजना से भी कुदरत की योजना कुछ अलग ही होती हैं।

हाथी की ऐसी अद्भूत कला देखकर लोग कहने लगे- इतना सुंदर हाथी ! इसे क्यों मारा जा रहा है ? पाप तो इन दोनों ने किया है ! इसका दण्ड हाथी को क्यों ? हाथी इसमें सहायक बना यह ठीक है, परन्तु वह तो बिचारा पशु है- इसमें इसका क्या दोष ? महावत जैसी शिक्षा देता है वैसे ही वह करता है। इसमें तो राजा को ही सोचना चाहिये। ऐसे हस्तिरत्न क्यों मरवाना चाहिये ?

लोगों ने एक साथ मिलकर राजा को प्रार्थना की- राजन् ! इस निर्दोष अबोल और होशियार हस्तिरत्न को क्यों मरवा रहे हैं ? इस बेचारे का क्या दोष है ?

राजा को लोगों की बात सही लगी, परन्तु अब क्या हो सकता था ? बहुत देर हो चुकी थी।

.... फिर भी राजा ने नीचे से पूछा- ओ महावत ! तू ऐसी अवस्था में से हाथी को वापिस ला सकता है या नहीं ? बचा सकता है या नहीं ? हाथी को वापस लौटा दे तो हम तेरी कला सही जानेंगे।

महावत भी कुछ कम नहीं था। उसने भी मौका देखकर तीर मारा। ''राजन् ! हाथी को वापस लौटाकर बचा तो सकता हूं, लेकिन एक शर्त है। हम दोनों को अभयदान दो तो।''

हाथी को बचाना हो तो हमें अभयदान दिये बिना चल भी नहीं सकता था। राजा ने हमें अभयदान दिया। दक्ष महावत ने होशियारी से हाथी को वापस लौटाया।

हाश ! मुश्किल से मौत से बचे। मेरा मन बोल उठा। परन्तु राजा ने हमें स्पष्ट कह दिया- तुम दोनों मेरा राज्य छोड़कर बाहर चले जाओ।

हम दोनों बाहर चल पड़े। कल की रानी मैं, आज भीखारीन बन गई। ''सल्लं कामा, विसं कामा, कामा आसी विसोवमा।''

''काम-वासना शल्य है, जहर है, भीरींग सांप है।'' इस बात की प्रतीति मेरा जीवन कदम-कदम पर करवाता रहेगा।

राज्य छोड़कर हम दोनों दूर-सुदूर निकल गये। कोई एक नगर के बाहर बगीचे के मकान में हम विश्राम करने बैठे। शाम हो गयी थी इसलिए हमने वहीं रात्रिवास करना निश्चित किया।

हम दोनों सो गये। महावत तो गहरी नींद में सो गया। मुझे इतनी गाढ़ नींद नहीं आ रही थी।

मध्यरात्रि का समय हुआ होगा तब मेरे हाथ को किसी का स्पर्श हुआ। पुरुष का स्पर्श होते ही मैं जाग उठी, मैं ही नहीं मेरी वासना भी जाग उठी। मैंने देखा तो वह पुरुष कोई और ही था। मेरा महावत तो शांति से सोया था। परन्तु वासना को जो मिले वह। जिसने राजा को भी छोड़ दिया, उसे

महावत को छोड़ते देर कितनी। सचमुच ही स्त्री की वासना भयंकर होती है। वह या तो जागृत नहीं होती। जागृत हो जाये तो जल्दी शांत नहीं होती। पुरुष की वृत्ति यानि घास का भड़का! तुरन्त ही जल उठती है और तुरन्त ही शांत! स्त्री की वृत्ति यानि गोबर की आग! जल्दी जलती नहीं! जले तो बुझती नहीं! ऐसी स्त्रीयां इतनी मत्त होती कि चाहे जितने पुरुष भी कम पड़ते हैं! ''प्राणीयों से यम तृप्त नहीं होता। लकड़ी से अग्नि तृप्त नहीं होती। नदीयों से सागर तृप्त नहीं होता वैसे ही पुरुषों से स्त्रीयां तृप्त नहीं होती।'' -**''न पुंसां वामलोचनाः''** ऐसा कहा गया है वह ऐसी ही स्त्रीयों के लिये ही। मैं भी ऐसी ही विकराल स्त्री बनी थी। अतःएव मैं, राजा होने पर भी महावत को लिपट गयी और अब महावत होने पर भी अनजान पुरुष को लिपट गयी।

उस अनजान पुरुष के मुंह पर बुकानी बंधी थी। इससे लग रहा था कि वह चोर होगा। मेरी धारणा सच निकली। सचमुच वह चोर ही था। थोड़ी देर सोचकर उसने कहा- यदि मुझे पकड़ने के लिये राजा के सैनिक घेर ले तो तुझे मुझे बचाना पड़ेगा। तू अगर मुझे पति के रुप में बताएगी तब ही मैं बच सकूंगा। यदि मैं बचूंगा तो तुझे पत्नी की तरह रखूंगा। मेरे पास वैभव का कोई पार नहीं है। इस मुफालिस महावत के साथ जिंदगी गुजारने में तुझे क्या मिलनेवाला है? जीवनभर भटकना पड़ेगा।

मैं चोर की बात करने के लिये तैयार हो गयी। वासनाग्रस्त चित्त अत्यन्त व्याकुल और चंचल होता है। वह दूर का तो क्या? नजदीक का भी देख नहीं सकता। मैं वासना में बहावरी बनी थी, अंध बनी थी, सच्चा-झूठा सोचने की शक्ति खो बैठी थी।

कुछ ही देर में हम तीनों को राजा के सैनिकों ने घेर लिया। ''इन दोनों में चोर कौन है?'' ऐसा जब मुझे पूछा गया तब मैंने पूर्वयोजना के अनुसार बेहीचक कह दिया- यह (चोर) मेरा पति है।

महावत तो मेरे ऐसे वर्तन से स्तब्ध ही हो गया। वह इतना आवेश में आ गया कि एक अक्षर भी बोल नहीं सका। शायद बोले तो भी उसका कोई सुननेवाला नहीं था। उसकी रग-रग से क्रोध टपक रहा था, मेरी बेवफाई उसके हृदय के सौ-सौ टुकड़े कर रही थी, परन्तु मुझे पर कोई दया नहीं आयी। मुझे तो नये-नये पुरुषों की आवश्यकता थी। भोगे गए ईख के कूचे जैसे पुरुषों का मुझे कोई काम नहीं था।

जिस महावत की कला के कारण मुझे जीवन-दान मिला था, उसी का जीवन छीन लेने तक की अधम कक्षा तक मैं पहुंच चुकी थी! रे क्रूर नारी-हृदय!

मेरी क्षुल्लक बुद्धि तो देखो! मैंने यह भी नहीं सोचा- इस चोर की जाति का भरोसा क्या? कौन जाने यह कैसा होगा? चोर और अच्छा आदमी? हो ही कैसे सकता है? यह अच्छा है, इसका भरोसा क्या? ....लेकिन मेरी गाफिल बनी हुई वासना ने मुझे ऐसा कुछ भी सोचने नहीं दिया!

मेरे देखते ही उसके हाथ-पैर में बेड़ी पड़ी। सैनिकों ने लाठी भी मारी! अब वह थोड़े ही घंटा का मेहमान था। उसे गधे पर बिठाकर शूली पर चढ़ा देने की संपूर्ण योजना बन चुकी थी। उसका जो होना हो वह हो। मुझे क्या? ऐसी क्षुल्लक विचारधारा ने मुझे लिपट लिया था।

मैं और मेरा नया चोर पति-हम दोनों हमारे रास्ते पर चल पड़े। महावत का अब क्या होगा? उसकी मुझे कोई परवाह नहीं थी। मुझे नया पति मिल गया था ना?

हम देश-विदेश की बातें करते-करते जंगल में चले जा रहे थे। रास्ते में नदी आयी। मेरे नूतन प्रियतम ने मुझे कहा- प्रिये! इस नदी को कैसे पार करेंगे? यद्यपि मैं तैरना जानता हूं लेकिन तुझे नहीं तार सकता। मैं सोच रहा हूं कि तेरे आभूषण और वस्त्र लेकर मैं अकेला सामने किनारे पर चल जाऊं.... तेरा सभी सामान व्यवस्थित जगह पर रखकर फिर तेरे पास आऊंगा और तुझे ले जाऊंगा। उसके बाद कुछ वजन नहीं होगा तो तकलीफ नहीं पड़ेगी।

मैं चोर की ऐसी मीठी-मीठी बातों से भ्रमित हो गयी। मैंने वह सब मान लिया।

मुझ से सभी आभूषण और वस्त्र लेकर वह नदी में कूद पड़ा और मैं उसका इंतजार करती निर्वस्त्र दशा में नदी किनारे बैठी रही। घड़ी.... दो घड़ी.... चार घड़ी.... समय निकलता गया, मुझे लगा- अभी आयेगा.... अभी आयेगा.... आया.... यह आया.... अभी आया। लेकिन वह न आया सो नहीं आया.... मेरे आभूषण और वस्त्र भी ले गया। आखिर जाति तो चोर की थी न?

जो स्त्री अपने पति की न हुई, उसे फांसी पर चढ़ते देखकर जरा भी द्रवित नहीं बनी, वह मुझ जैसे चोर की कैसे होगी? यह तो कभी मुझे कठिनाई में डाल सकती है। मुझसे भी हजारों रुपवान और हजारों धनवान इस जगत में बसते हैं। जब मुझसे अधिक कोई मिल जायेगा तब मेरा विश्वासघात करते उसे कुछ समय नहीं लगेगा। इस बला को मैं क्यूं संभालूं? उसके (महावत) जैसी मेरी हालत हो, उससे पहले ही मैं उसे छोड़दूं। ऐसी चंचल स्त्रीयों का क्या भरोसा? जो मुझ जैसे अनजाने के लिये अपने पति को शूली पर चढ़ाने

के लिये तैयार हो जाये, उसे मुझे छोड़ने में कितना समय ? ऐसा ही कुछ सोचकर अवश्य वह मुझे छोड़कर भाग गया होगा ! लेकिन जाते-जाते उसने मेरी हालत बिगाड़ दी। मेरे आभूषण तो ले गया, परन्तु कपड़े भी ले गया ! बिना आभूषण तो चल सकता है, लेकिन बिना कपड़े कैसे चल सकता है ? उसमें भी पुरुषों को तो फिर भी चल सकता है.... स्त्रीओं को तो बिलकुल नहीं।

रोटी, कपड़ा, मकान-ये मानव की आवश्यक चीजें है। सबसे पहले रोटी, फिर कपड़े और उसके बाद मकान चाहिये। यह क्रम पुरुषों के लिये ठीक होगा। लेकिन हम महिलाओं के लिये तो उल्टा क्रम है। तुम पुरुष लोग सिर्फ तुम्हारे हिसाब से ही सोचते हो। आपकी विचारधारा में अधिकतम स्त्रीओं को स्थान होता ही नहीं है। स्त्रीओं की आवश्यकता का क्रम पूछो तो शायद जवाब उलटा ही होगा। स्त्रीओं का जवाब होगा- मकान, कपड़ा, रोटी ! और सर्वप्रथम आश्रय के लिये मकान चाहिये। फिर लज्जा ढंकने के लिये कपड़े चाहिये और रोटी का क्रम सबसे अंत में आता है। मेरा कोई आश्रयस्थान नहीं था। ऊपर का आकाश वही मेरा छप्पर था और नीचे की पृथ्वी यही मेरा बिछौना था ! मेरे शरीर पर कुछ वस्त्र नहीं था.... अथवा तो सभी दिशाएं ही मेरे वस्त्र थी। मैं दिगंबर थी। (दिशाएं ही जिसके वस्त्र है, उसे दिगंबर कहा जाता है-यह जानते हो न ?)

एक समय की राजरानी की आज यह दशा थी ! नहीं.... किसी ने मेरी ऐसी दुर्दशा नहीं की थी। मेरी ही वासना के भूत ने मेरी ऐसी भयंकर दशा की थी।

स्वच्छंद मनोवृत्तिवालों की अवदशा परलोक में तो जो होनी हो वह होती है, इसी भव में ऐसी अवदशा होती है।

मैं पागल बनकर जंगल में इधर-उधर घूमने लगी। राजा खोया.... महावत खोया और अंत में चोर भी खोया ! मैंने बुद्धु ने सब खो दिया था ! सबको पकड़ने के लिये जाय वह सभी जगह से रह जाते हैं। एक को पकड़ रहे उसे सब मिल जाता है। ''एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाये''इस कहावत का मार्मिक अर्थ आज बराबर समझ में आ रहा था। इतना ही नहीं, उसी तरह जीया जा रहा था !

इतनी इतनी दुर्दशा होने पर भी इसमें वासना की भूतड़ी ही कारणभूत है- ऐसा मुझे विचार तक भी आ नहीं सका ! मैं जंगल में जहां-तहां भटक रही थी। क्या करुं ? कहां जाऊंकुछ पता नहीं चल रहा था। वहीं मेरी आंखों के समक्ष एक तेजोवर्तुल प्रकट हुआ। मैंने ऊपर देखा तो मेरा यार वह महावत ! घड़ीभर तो मुझे विश्वास न हुआ। यह क्या ? स्वप्न या सत्य ! महावत यहां कहां से ? अगर आया तो भी आकाश में अद्धर कैसे ? इतना तेज कहां से ? मैं अधिक कुछ सोचूं उसके पहले वह बोला- ''ओ वासना के पीछे पागल ! वासना की भूतनी ने मेरी ऐसी इतनी बुरी हालत की फिर भी अब तुझे नहीं समझना है ? अब तुझे वासना से अटकना नहीं है ? अभी भी उपासना के मार्ग पर चढ़ना नहीं है ? देख.... मैं तेरा पूर्वभव का दोस्त ! महावत ! तूने तो मुझे शूली पर चढ़ा दिया.... लेकिन शूली के ऊपर जब मेरे अंतिम श्वास चल रहे थे तब एक श्रावक ने मुझे नवकार मंत्र सुनाया। उस नवकार में मेरा मन एकाकार बन गया। नवकार के स्मरण में ही मेरी मृत्यु हुई और उसी के प्रभाव से मरकर मैं देव बना हूं।

वासना ने तेरा और मेरा संहार किया। जबकि नवकार की थोड़ी सी उपासना ने मेरा उद्धार किया ! देव बनकर मैंने अवधिज्ञान से तुझे जंगल में भटकती देखी.... तुझे भी सद्धर्म की प्राप्ति हो इस हेतु से तुझे वासना से उपासना में मोड़ने आया हूं। बहुत हो गया। बहुत हो गया। अब तू वासना से अटक जा। उपासना का आश्रय ले। तेरा उद्धार होगा। अभी भी देर नहीं हुई है। अभी जिंदगी बाकी है। भले लोटा और रस्सी कुंए में हो लेकिन रस्सी का छोर अभी हाथ में है। जिंदगी का छोर अभी हाथ में है। मेरा मानती हो तो तू साध्वी बनकर धर्ममय जीवन शुरु कर। तेरा भला होगा। बाकी, वासना के भूत ने आज तक किसी को भी सुखी नहीं किया। आज तक उसने अनंतानंत जीवों का भक्षण किया है।''

देव बने हुए महावत के उपदेश से मेरे हृदय पर गहरी चोट हुई ! वासना के पीछे पागल बने हुए की हालत कैसी होती है ? वह मुझ पर बीत चुका था। अब मैं वासना से तृप्त हो चुकी थी। मैंने साध्वी बनने का निर्णय किया। देव ने तुरन्त ही मुझे साध्वीजीओं के पास छोड़ दी। मैंने वैराग्यवासित होकर दीक्षा ली। आज मैं मस्तीभरा संयम जीवन जी रही हूं। वासना की नरक मैंने देखी है। उपासना का स्वर्ग भी देखा है। वासना की वैतरणी नदी में मैं कुचला गयी हूं। उपासना के नंदनवन का आनंद भी मैं भोग रही हूं। मेरा जीवन जगत के लोगों को कह रहा है-

आपदां कथितः पन्था इन्द्रियाणामसंयमः।
तज्जयः सम्पदां मार्गो येनेष्टं तेन गम्यताम्॥

''इन्द्रियों का असंयम आपत्ति का मार्ग है। इन्द्रियों पर विजय संपत्ति का मार्ग है। जिसकी इच्छा हो वह मार्ग पकड़ लो।''

※ किसी एक सत्पुरुष की खोज करो और उनके चाहे कैसे वचनों में श्रद्धा रखो। (आस्था)

सर्वश्रेष्ठ अध्यात्म शास्त्र

शास्त्र बहुत है, लेकिन अध्यात्म शास्त्र से उत्कृष्ठ एक भी शास्त्र नहीं है। अध्यात्म शास्त्र पढ़े बिना, जीवन में उतारे बिना जो तर्कशास्त्र, न्यायशास्त्र या अलंकार शास्त्र आदि पढ़ते हैं, उन्हें बुद्धि के व्यायाम के बिना दूसरा कुछ भी मिलता नहीं है, सिर्फ क्लेश ही मिलता है।

अध्यात्म के बिना दूसरे शास्त्रों की प्रवृत्ति करनी मतलब रेत में से तेल निकालने का प्रयत्न करना, पानी में से मक्खन निकालने का उद्यम करना। क्लेश के अलावा और क्या मिल सकता है ? आप देखना। बहुत शुष्क पंडितों के मुंह पर प्रसन्नता नहीं दिखेगी, हताशा-निराशा ही दृष्टिगोचर होगी। उन्हें स्वयं को भी अंदर से सदा अखरता रहता है कि बहुत ''ज्ञान'' पाया, फिर भी मानो कुछ पाया नहीं है। सिर्फ दिमाग के खाने में सब इकट्ठा करते रहे, रेफरन्स और उद्धरण इकट्ठे करते रहें, उसने यह कहा- उसने वह कहा, यों सिर्फ तुलना ही करते रहें, किसी की समालोचना ही करते रहें। धनवान आदमी धन इकट्ठा करके राजी होता है, उसी तरह पंडित ''ज्ञान'' इकट्ठा कर के राजी होता है। धन संसार का कारण बनता है उसी तरह ''ज्ञान'' भी संसार का कारण बनता है। चमकना नहीं। यह बात मैं नहीं, खुद पू. उपा. म. कहते हैं।

धनिनां पुत्रदारादि यथा संसारवृद्धये।
तथा पांडित्यदुप्तानां शास्त्रमध्यात्मवर्जितम् ॥

ऐसे पंडितों की हालत दूधपार्क के बर्तन में रहे हुए डोये जैसी है, जो हजारों को दूधपाक देता है, लेकिन स्वयं उसका कुछ भी अस्वाद नहीं ले सकता। गधा सिर्फ चंदन का भार उठाता है, सुगंध कोई भाग्यशाली पाता है। शुष्क पंडित शास्त्रों का बोझ उठाते हैं। उसका रसास्वाद तो कोई आध्यात्मिक पुरुष ही लेते हैं। सचमुच जिसने अध्यात्मशास्त्र नहीं जाना, उसने कुछ भी नहीं जाना। जिसने यह जाना है, उसने सब कुछ जाना है। अध्यात्म के बिना दूसरे शास्त्र एक के बिना शून्य जैसे हैं।

जिससे दोषों को नाश न हो, गुणों की वृद्धि न हो, जीवन की उन्नति न हो, हृदय करुणा से पूर्ण न हो, प्रभु-प्रेम से पूर्ण न हो, ऐसे शास्त्रों को पढ़नेवाले को ''पंडित'' किस तरह कहा जाय ? इससे तो सिर्फ अध्यात्मवेत्ता श्रेष्ठ है।

नाव में रहे हुए तीन प्रोफेसरों ने नाविक का अभ्यास पूछा। उसकी निरक्षरता की मजाक उड़ाते हुए तीनों ने क्रमशः पांव, आधी और पौनी जिंदगी पानी में गई-ऐसा कहा, किन्तु तूफान से नाव टूटी और तीनों ही डूबने लगे तब नाविक ने कहा- आपकी तो पूरी जिंदगी पानी में गई। हमारी जीवन-नाव कहीं भव-समंदर में डूब न जाय !

धूप और छाँव का विवाद हल न हुआ तो दोनों विधाता के पास पहुंची और बोली- ''महाराज ! पृथ्वी पर हममें से एक को ही रहने का अधिकार दीजिए दूसरे को वहां से अलग कर दीजिए।'' विधाता बड़ी देर तक चुप रहे फिर पीड़ा भरे स्वर में बोले- ''मुझे दुःख है कि तुम दोनों का अस्तित्व तो एक दूसरे पर ही आश्रित है, ईर्ष्या छोड़कर प्रेम से रहो और अपनी उन्नति करो।''

धर्म-बीज का पोषण

धर्म-बीज का वपन होने के बाद उसका संवर्धन, पोषण और रक्षण जरुरी है। अगर कोई किसान खेत में बीज बोने के बाद, उसका कुछ ध्यान नहीं रखें तो फसल नष्ट हुए बिना नहीं रहती। धर्म-बीज भी ऐसा ही है। उसका संवर्धन पोषण करने में बहुत सावधानी बहुत जरुरी है।

धर्म-बीज के पोषण के लिये जरुरी कर्त्तव्यः-

1- भावयोगी स्वरुप धर्माचार्य की विधि और शुद्ध आशयपूर्वक सेवा भक्ति करना।

2- संसार (विषय-कषाय) के प्रति उद्वेग होना।

3- द्रव्य अभिग्रह का पालन करना।

4- सिद्धांतों को लिखना, लिखवाना, पढ़ना, उसकी पूजा करना, पाठ लेना-देना, ग्रंथों का प्रकाशन करना, स्वाध्याय करना, शास्त्र के मर्म को भावित करना।

5- दुःखी जीवों के प्रति हमदर्दी लाना।

6- गुणी के प्रति प्रमोद करना।

7- सर्वत्र सदा औचित्य का पालन करना।

एक किसान भी खेत की फसल के लिये बहुत ही सावधानी पूर्वक रक्षा करता है तभी कुछ प्राप्त होता है। जबकि यहां तो धर्म के बीज का रक्षण और संवर्धन करना है।

किसान असावधान रहे तो चोर और मोर फसल लूट जाते हैं। धर्मी असावध रहे तो राग,द्वेष और मोह लूट जाते है।

गुणों की माला पहनें

आचार्य मानतुंग ने ऋषभ की स्तुति के अंतिम श्लोकों में अभय का पथदर्शन किया। आदमी सबसे ज्यादा परेशान भय से रहता है। एक होता है काल्पनिक भय और एक होता है वास्तविक भय। यदि काल्पनिक भय को निकाल दिया जाए तो शायद पचास प्रतिशत से ज्यादा समस्या का समाधान हो जाए किन्तु भय निकलता नहीं है। आदमी कल्पना के सहारे चलता है, कल्पना के सहारे जीता है, कल्पना कभी सुख देती है तो कभी बहुत ज्यादा दुःख भी देती है। कल्पना और सपना-ये दो ही हैं जो सुख और दुःख का कारण बन जाते हैं। रात में सपना और दिन में कल्पना। दोनों एक ही हैं। दिन में जो कल्पना होती है, रात को सपना बन जाती है। सपना ही व्यक्ति का अपना है और सब पराया बन जाता है। सपने में भिखारी ने देखा- राजा बन गया हूं, महल में सो रहा हूं। रानियां पगचम्पी कर रही है। बड़े सुख का अनुभव किया। जैसे ही सपना टूटा, सुख का महल ढह गया। कल्पना में भी आदमी सुख और दुःख का अनुभव करता है।

बहुत प्रसिद्ध कहानी है। गाड़ी जा रही थी, रेल के डिब्बे में दो यात्री बैठे थे। एक खड़ा हुआ, उसने खिड़की को खोला और बैठ गया। दूसरा खड़ा हुआ, उसने खिड़की को बंद कर दिया। पहला फिर उठा, उसने खिड़की को पुनः खोल दिया। दूसरे ने पुनः बंद कर दिया। एक नाटक शुरु हो गया। लोग परेशान हो गये। लोगों ने कहा- यह डिब्बे में क्या चल रहा है ? हम तो तंग हो गए है। टीटीउनके पास गया, बोला- भाई साहब ! आप क्या करते हैं ? खिड़की क्यों खोलते हैं ? एक ने कहा- खिड़की खोलूं क्यों नहीं, मुझे गर्मी लग रही हैं। दूसरे ने कहा- खिड़की बंद क्यों नहीं करूं, मुझे ठण्ड लग रही है। टीटी ने दोनों को कहा कि -मेरे साथ चलो। देखो क्या है ? शीशा तो गायब है, कोरा खिड़की का ढांचा है, कहां से हवा आएगी और कहां से हवा रुकेगी ? कैसे गर्मी और कैसे सर्दी लगेगी ?

कल्पना के सहारे आदमी बहुत चलता है। एक होता है वास्तविक भय। यथार्थ में भय का एक कारण होता है। मानतुंग सूरि ने भय के आठ कारणों का वर्णन किया है। इस श्लोक में उनका उपसंहार किया गया है।

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलहः-
संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावक स्तवमिमं मतिमानधीते ॥

भय के आठ हेतु ये हैः-

1- हाथी का भय	2- सिंह का भय
3- दावानल का भय	4- सर्प का भय
5- युद्ध का भय	6- समुद्र का भय
7- जलोदर का भय	8- बंधन का भय

प्रस्तुत श्लोक में इन सबका उपसंहार कर मानतुंग कहते हैं- प्रभो ! जो आदिनाथ भगवान की स्तुति करता है, उसके लिये भय एक क्षण में नष्ट हो जाते हैं। स्तुतिकार ने बड़ी सुन्दर कल्पना की है- भय कैसे चला जाएगा ? भय स्वयं डर जाएगा। जो व्यक्ति आपका स्तवन करता है, आपका ध्यान करता है, डर भी उसके पास आने से डरता है। डर कहता है कि मैं वहां नहीं जा सकता। आपकी स्तुति से दूसरों को डराने वाला भी डर जाता है। वह दूर ही रहता है, पास में भी नहीं आता। जो मतिमान मनुष्य आपके स्तवन का पाठ करता है, उसका अध्ययन करता है, उसका अध्येता है और बड़ी तन्मयता के साथ उसका पाठ करता है, वह भयरहित हो जाता है।

स्तोत्र पाठ की एक विधि होती है। यदि केवल शब्दों का उच्चारण है, न अर्थ का ज्ञान है और न अर्थ के प्रति तादात्म्य है तो जो मिलना चाहिये, वह नहीं मिलता। जिस शब्द का उच्चारण हुआ, पहले उसके अर्थ का ज्ञान होना चाहिये। किसी बच्चे से कहा गया- गिलास लाओ। अगर वह गिलास शब्द का अर्थ नहीं जानता है तो गिलास कभी नहीं लाएगा। एक व्यक्ति जर्मन, रसियन या फ्रेंच भाषा को जानने वाला है, उसे कहा जाए- उदकं आनय- जल लाओ। वह सुनता रहेगा किन्तु क्रिया नहीं होगी, क्योंकि वह ''उदक'' का अर्थ ही नहीं जानता है। दो व्यक्तियों में लड़ाई हो गई। एक वाटर-वाटर कह रहा था और एक पानी-पानी कह रहा था। दोनों में झगड़ हो गया। एक की भाषा को दूसरा नहीं जानता और दूसरे की भाषा को पहला नहीं जानता। पानी का अर्थ वाटर है और वाटर का अर्थ पानी है, यह न जानना संघर्ष का कारण

बन गया। हम जब शब्द के अर्थ को नहीं जानते है तब जो सिद्ध करना चाहते है, उसमें कठिनाई पैदा होती है। पहली शर्त है- शब्द के अर्थ को समझें। अर्थ को जानने के बाद उसके साथ सम्बन्ध स्थापित करें। गिलास लाओ, यह शब्द सुना, शब्द के अर्थ को जान लिया। उसके बाद आदमी उठता नहीं है, हाथ में गिलास को उठाता नहीं है तो गिलास नहीं आएगी। गिलास को पानी के लिए उससे सम्पर्क स्थापित करना होता है। सफलता तब मिलती है जब शब्द, अर्थ का ज्ञान और अभिन्नता की अनुभूति- ये तीनों होते हैं। शब्द का सही उच्चारण, अर्थ का ज्ञान और पाठ के साथ एकात्मकता-ये तीनों सफलता के लिए जरुरी है। जो मतिमान मनुष्य है, जिसमें मनन है, जो कोरा सुनता नहीं है, कोरा पढ़ता नहीं है, जो मनन करता है, वह इन आठ प्रकार के भयों से अपने आपको मुक्त कर लेता है। यह अभय का मंत्र हैं।

बहुत लोग आते हैं, कहते हैं- डर बहुत लगता है। दिन में भी लगता है, रात को भी लगता है। अंधेरे में ही नहीं, धोली दुपहरी में भी लगता है। आकाश में सूरज तप रहा है, उजला-उजला प्रकाश है, उस समय में भी डर लगता है। अकेले में ही नहीं, अनेक लोगों के बीच में भी डर लगता है। यह एक ऐसी स्थिति है, जिसके बारे में समझाना भी बड़ा कठिन होता है। कोई मानसिक तंत्र विकृत हो जाता है तो बार-बार भय की कल्पना आती है। इस स्थिति में मानतुंग सूरि ने भगवान ऋषभ की स्तुति के माध्यम से जो अभय का पाठ दिया है, उससे अभय बना जा सकता है, भय को दूर किया जा सकता है। सबसे बड़ा भय है प्रमाद।

सबसे बड़ा अभय है अप्रमाद, जागरुकता। भगवान महावीर ने साधना का सबसे बड़ा सूत्र दिया-अप्रमाद। अप्रमत्त के लिये कोई भय नहीं है। जहां भी प्रमाद आया, भय पैदा हो गया। अप्रमाद सबसे बड़ी साधना है। अप्रमाद का अर्थ है- अभय और प्रमाद का अर्थ है- भय। भय प्रमाद से पैदा होता है और अभय अप्रमाद से पैदा होता है। आचार्य मानतुंग ने अप्रमत्तता की साधना के लिये संकेत किया है और वह संकेत बड़ा ही महत्वपूर्ण है। इन बीज मंत्रों का, इन श्लोकों का बड़ा महत्व है। अगर इनकी ठीक साधना चले, आराधना चले तो इन आठ भयों के सहारे अन्य भयों से भी आदमी मुक्ति पा सकता है।

स्तोत्रों की सम्पन्नता आचार्य मानतुंग इस काव्य के द्वारा कर रहे हैं-

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं,
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥

मानतुंग ने कहा- जो मानतुंग होता है, लक्ष्मी उसका वरण करती है। मानतुंग स्तुतिकार का नाम भी है। मानतुंग का एक अर्थ है- जिसको बहुत सम्मान मिलता है उसका नाम है मानतुंग। जो सम्मान से, पूजा से ऊंचा बन गया है, वह है मानतुंग। तुंग का अर्थ है शिखर। इतना सम्मान मिला कि व्यक्ति शिखर पर चला गया, एवरेस्ट की चोटी पर चला गया। लक्ष्मी उसके पास आती है, पर निमंत्रण के द्वारा नहीं, अपनी स्वतंत्र इच्छा से आती है। वह सोचती है- मैं उस व्यक्ति के पास जाऊं, उसका वरण करुं। उस व्यक्ति के पास रहूं, जो मानतुंग है। जो गले में हार पहनता है, माला पहनता है, फूलों और धागे की माला नहीं किन्तु गुणों की माला पहनता है, उस व्यक्ति के पास वह लक्ष्मी आती है।

वह माला कैसे बनाई गई है ? मानतुंग कहते है- भगवन ! आपकी स्तुति की मैंने माला बनाई है। मैंने स्तवन किया है, चौवांलीस श्लोक बनाए। इन चौवांलीस मनकों की एक माला बन गई। माला में धागा होता है। धागे के बिना माला पिरोई नहीं जाती। पिरोने के लिये धागा चाहिये। जो वीतराग के गुण हैं, वे धागे हैं। गुण का एक अर्थ है- विशेषता और गुण का दूसरा अर्थ है- धागा, डोरा। यहां गुण के दोनों अर्थ हैं। इस दुनिया में सर्वथा ऊंचा व्यक्ति है- वीतराग। वीतराग के समान कोई बड़ा आदमी नहीं होता। वहां बड़ा, छोटा ये शब्द समाप्त हो जाते हैं। जब वीतरागता आती है तब न कोई ऊंचा रहता है और न कोई नीचा। न कोई बड़ा रहता है और न कोई छोटा। सबकी समान भूमिका होती है किन्तु फिर भी व्यवहार की भाषा में यह कहा जाता है, वीतराग से बड़ा इस दुनिया में कोई आदमी नहीं होता। वीतराग से अधिक इस दुनिया में कोई सुखी नहीं होता। वीतराग से अधिक इस दुनिया में कोई अभय नहीं होता। वीतराग से अधिक इस दुनिया में कोई तनाव-मुक्त नहीं होता। उसे न अनिंद्रा की बीमारी सताती है और न निंद्रा की बीमारी सताती है। न काल्पिनिक भय सताता है और न वास्तविक भय सताता है। न भय, न शोक, न घृणा न किसी के प्रति राग और न किसी के प्रति द्वेष। इन सब झंझटों से मुक्त होकर वह चेतना की सर्वोच्च भूमिका पर

चला जाता है। मानतुंग कहते हैं- उन वीतरागता के गुणों का मैंने धागा लिया है। उन गुणों के धागे से मैंने एक माला पिरोई है। वह माला मैंने व्यवसाय की दृष्टि से नहीं पिरोई है। एक मालाकार माला बनाता है, फिर उसे बाजार में जाकर बेचता है। यह व्यवसाय है। मैंने माला व्यावसायिक अथवा धन कमाने की दृष्टि से नहीं बनाई है, भक्ति के साथ बनाई है। जहां भक्ति नहीं होती, श्रद्धा नहीं होती, वहां रस नहीं आता। श्रद्धा और भक्ति में जो चेप है, मिठास है, वह व्यवसाय में कभी नहीं हो सकता। एक व्यक्ति श्रद्धा और समर्पण के साथ काम करता है, अपना सब कुछ न्यौछावर कर देता है उसके द्वारा जो काम होता है वह शायद दूसरे के द्वारा नहीं होता है। एक रसोईया भी रसोई बनाता है और एक पत्नी भी अपने पति के लिये रसोई बनाती है। दोनों के भोजन के मिठास में अन्तर आ जाएगा। रसोइया व्यावसायिक दृष्टि से रसोई बनाता है। पत्नी पति के लिए बनाती है। उसके मन में एक पति का भाव होता है। अन्तर आ जाएगा यदि कोई सूक्ष्मता से जान सकें। जहां भक्ति है, श्रद्धा है, वहां क्रिया अलग होगी और जहां व्यावसायिक दृष्टि है, वहां क्रिया बिल्कुल अलग होगी।

मानतुंग कह रहे हैं- उस माला में नाना प्रकार के फल है। वे बड़े सुन्दर वर्ण वाले हैं। वर्ण के दो अर्थ हैं। रुचिर वर्ण का एक अर्थ है- सुन्दर रंग। दूसरा अर्थ है- सुन्दर अक्षर। उस माला में मैंने ऐसे अक्षरों का विन्यास किया है, संयोजन किया है, जिससे वह माला बहुत सुन्दर बन गई है। अक्षर भी दो प्रकार के होते हैं- असंयुक्त और संयुक्त, एकाक्षर और अनेकाक्षर। मानतुंग कह रहे है- मैंने जो माला बनाई है उसमें विचित्र वर्ण पुष्प है। बहुत ही सुन्दर-सुन्दर अक्षरों का संयोजन है। एक भी अक्षर ऐसा नहीं है, जो मंत्र न हो। प्रत्येक अक्षर मंत्र है।

भक्तामर शक्तिशाली क्यों बना ? इसलिये कि इसमें वर्ण की संयोजना, विन्यास ऐसा किया गया है जिससे प्रत्येक अक्षर मंत्र बन गया। एक विकल्प है श्लोक के साथ मंत्रों की साधना। कुछ श्लोक ऐसे होते है जिनके साथ मंत्रों की स्वतंत्र साधना होती है। विचित्र प्रकार के वर्ण-पुष्प और गुणों के धागे से जो स्तुति-रुपी माला मैंने बनाई है उस माला को जो व्यक्ति निरन्तर अपने कंठ में पहनता है, उस व्यक्ति के पास अपने आप लक्ष्मी आती है।

प्रभु प्रेम

संसार में किसी भी व्यक्ति से किया हुआ प्रेम हमेशा नहीं रह सकता। कभी न कभी तो तूटेगा तुटेगा और तूटेगा ही। कभी नहीं तो मृत्यु के समय तो अलग पड़ना ही पड़ता है लेकिन प्रभु का प्रेम ऐसा है कि जिसे मृत्यु भी तोड़ नहीं सकती। इसलिए अगर प्रेम करना हो तो सिर्फ प्रभु के साथ ही प्रेम करने जैसा है।

महायोगी आनंदघनजी कहते हैं-

ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे, ओर न चाहुं रे कंत,
रीझयो साहिब संग न परिहरे रे, भांगे सादि अनंत।

प्रभु के साथ किया हुआ प्रेम दूज की चंद्रकला की तरह बढ़ता ही रहता है। बढ़ता ही जाता है.... एक दिन पूर्णिमा के चंद्र जैसा पूर्ण प्रेम बन जाता है। पूर्णिमा का चंद्र तो दूसरे दिन से ही घटना शुरु कर देता है, लेकिन भगवान का प्रेमरुपी पूर्ण चंद्र ऐसा है कि जो कभी घटता ही नहीं, हमेशा अक्षय ! सदा संपूर्ण !

इसीलिए मीरा ने कहा है कि- ''मै ने तो गिरधर गोपाल कंत रुप स्वीकार कर लिया है, अब मैं और किसी को कंत बनाना नहीं चाहती, दूसरे सभी कंतों से विवाह करने में वैधव्य का भय है.... लेकिन यहां सदाकाल के लिये अखंड सौभाग्य है।

परणी हुं प्रीतम प्यारो,
अखंड सौभाग्य मारो,
रांडवनो भय वार्यो
रे हो प्रीतम प्यारा।

भगवान का प्रेम आखिर अनंत में लीन होता है। जो अनंत में लीन बना, वह सदा के लिये प्रभु के साथ मिल गया, अक्षय बना गया। छोटा बिंदु सागर में पड़े तो वह अक्षय बन जाता है।

उदकबिंदु सागर भल्यो, जिम होय अक्षय अभंग
वाचक 'जस' कहे प्रभु-गुणे, तिम मुज प्रेम प्रसंग।

भगवान विशाल समुद्र है, हम बिंदु है।

बिंदु अगर अकेला हो तो विनाश है। समुद्र में पड़े तो उसका रक्षण है।

हार न मानो, सतत संघर्ष करो

आर्यन अपने ऑफिस की टेबल में बैठकर हरे रंग के एक पेपरवेट को घूमा रहा था। उसकी टेबल के ऊपर फाइलें पड़ी थी। आर्यन का कार्य व्यापार उसकी सोच के साथ तारतम्य नहीं कर पा रहा था। उसका मन उदास था जिसका प्रभाव उसके कार्य में स्पष्ट रुप से परिलक्षित हो रहा था। तमाम कोशिशों के बावजूद वह अपने कार्य में स्वयं को केंद्रित नहीं कर पा रहा था जबकि आज ऑफिस बंद होने से पहले उसे एक महत्वपूर्ण कार्य पूरा करना था। आर्यन अपने ऑफिस में सबसे कर्मठ, ईमानदार एवं सिद्धांतप्रिय था। वह भावुक एवं संवेदनशील भी था। वह अपने काम के साथ औरों का भी कार्य कर देता था और सेवा-सहायता के मामले में तो सबसे अग्रणी रहता था। इसलिए वह सबका प्रिय था, सभी उसे चाहते थे, पसंद करते थे।

उसका शांत, मिलनसार एवं हंसमुख व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक था। उसके व्यक्तित्व में न जाने कौन-सा ऐसा जादुई आकर्षण था कि उससे ईर्ष्या करने वाले भी उसकी प्रशंसा करने से स्वयं को रोक नहीं पाते थे। उसके व्यवहार से कोई यह पता नहीं लगा पाता था कि जब वह दूसरों को हंसाता, हंसाता रहता है तो उसके अंदर भी यही बात रहती है या और कोई बात ? यों तो वहां काम करने वाले सभी उसके मित्र थे परन्तु तरुण का संबंध बड़ा गहरा था। तरुण आर्यन के व्यक्तित्व के अनछुए एवं अनजाने पहलुओं को भी जानता था। तरुण निस्वार्थ भाव से निश्छल हृदय से आर्यन को चाहता था। तरुण आर्यन के व्यक्तित्व की तमाम चीजों से बेहद प्रभावित रहता था।

एक दिन आर्यन ऑफिस नहीं आया था, वह अवकाश में था। आर्यन की पत्नी जिसे तरुण संजना भाभी के नाम से संबोधित करता था, वह संजना को अस्पताल चेकअप के लिये ले गया था। संयोग से उस दिन ऑफिस में ज्यादा कोई काम नहीं था। सभी एकत्र होकर घर से लाया हुआ अपना-अपना लंचपैक आपस में बांटकर ग्रहण कर रहे थे। तरुण ने अपने पास बैठी हुई आरुषि से कहा-''जानती हो आरुषि ! आर्यन की मुस्कराहट के पीछे कितना दर्द, कितनी पीड़ा कितना बड़ा तूफान उमड़ता-घुमड़ता रहता है। वह स्वयं बड़े कष्टों-कठिनाईयों के भीषण दौर से गुजरने के बावजूद कभी भी यह एहसास तक नहीं होने देता है। उसके निश्छल, निर्मल व्यवहार से यह आकलन एवं अंदेशा लगा पाना कठिन हैं कि क्या सचमुच में औरों को हंसाना-मुस्कराना एवं विपरीत परिस्थितियों में भी हौंसला बढ़ाने एवं ढाढ़स देने वाले आर्यन का जीवन इतनी विषमताओं एवं संक्रमण से आच्छादित हो सकता है।

तरुण आर्यन के बारे में बता रहा था-''आरुषि ! आर्यन के जीवन में स्वामी विवेकानंद की बड़ी गहरी छाप है, वह जब अति दुःखी हो जाता है तो स्वामीजी के द्वारा लॉस एन्जिल्स में दिये गए भाषण का अंश **''दि ओपन सीक्रेट''** 5 जनवरी 1900 को अक्सर सुनाता है- कितनी ही बार मैं अनाहार, क्षत-विक्षत पाँव, थका-हारा मृत्यु के आमने-सामने खड़ा हुआ हूं, कितनी ही बार, कई-कई दिनों मुट्ठी भर अन्न न पाकर, राह चलना तक असंभव हो आया, तब मेरी अवसन्न देह किसी पेड़तले लोट जाती, तब ऐसा लगता, मानो प्राणवायु शरीर छोड़ रही है। मुझमें बोलने की ताकत नहीं होती थी। उस स्थिति में मेरे लिये सोचना तक असंभव हो जाता, तभी मन में ख्याल जाग उठता था- मुझे कोई भय नहीं है, मेरी कोई मृत्यु भी नहीं है। मेरा कभी जन्म नहीं हुआ, मृत्यु भी नहीं होगी। मुझमें कोई भूख नहीं, कोई प्यास नहीं, समूची प्रकृति में भी इतनी क्षमता नहीं कि मुझे कुचल -पीसकर मार दे। प्रकृति तो मेरी दासी है। देवाधिदेव ! हे परमेश्वर ! अपनी महिमा प्रकाशित करो, स्वराज्य में प्रतिष्ठित करो। तुम विमुख मत होना और मुझमें दोबारा शक्ति भर उठती। मैं दोबारा उठ खड़ा होता था। इसलिये मैं आज जिंदा हूं।

तरुण कह रहा था। उसकी आँखें शून्य में कहीं ठहर गई थी और वह अपने प्रिय मित्र आर्यन के बारे में बताता जा रहा था। वह कह रहा था और सभी उसे शांत-मौन होकर सुन रहे थे। सुन ऐसे रहे थे, जैसे उनके सामने आर्यन का दर्द भरा जीवन जीवंत होकर चलचित्र की भांति चल रहा हो। वहां ऐसा कोई नहीं था, जिसके लिए आर्यन ने कुछ न किया हो। तरुण कह रहा था- एक रात मेरी बहन को तेज चक्कर आया और वह बेहोश हो गई। हमें कुछ समझ में नहीं आया कि क्या करें। वह घटना इसलिए भी संगीन हो गई थी, क्योंकि चंद दिनों बाद उसका विवाह होनेवाला था। मैंने आर्यन को फोन किया वह उसी वक्त आ गया। बहन को अस्पताल में भर्ती कराया गया। बीमारी ठीक होने में समय के साथ पैसे भी बहुत

खर्च हो गए। विवाह के लिये जोड़ा गया पैसा बीमारी में खर्च होने लगा। विवाह के लिये धनाभाव की पूर्ति आर्यन ने अपनी पत्नी संजना की सोने की चैन बेचकर की। इसका पता तो कभी चलता ही नहीं। यदि मैं उसकी फाईल में इसकी रसीद को न देखता, मैं हतप्रभ था। जब मैंने उससे कुछ कहना चाहा तो उसने इस संदर्भ में एक शब्द भी न कहने की कसम दिला दी और मैं चुप हो गया।

तरुण की बगल में बैठे राकेश ने कहा- तरुण ! आर्यन का परिवार तो सकुशल है न, क्योंकि एक दिन मैंने आर्यन को संजना भाभी के साथ हंसते-मुस्कराते जाते देखा था, दोनों अति प्रसन्न थे। मैंने उन्हें देखकर भगवान से प्रार्थना की थी कि उनका जीवन सुखी एवं प्रसन्नता से भरा रहे। आरुषि ने भी कहा- तरुण ! एक दिन मैं संजना भाभी से मिली थी। वह तो बहुत मिलनसार एवं खुले विचारों वाली लगी। तरुण ने कहा- काश ! ऐसा होता। आर्यन का जीवन मेघाच्छादित प्रलयंकारी प्रलय से भी भारी विकराल एवं भीषण है। सभी एक साथ चौक पड़े, तरुण की बातों से सबके अंतर्मन में बिजली सी क्रौंध उठी। इतने प्रसन्न, सुशील दिखने वाले व्यक्ति के जीवन में भयानक परिदृश्य ! विश्वास ही नहीं होता। सभी ने इसे स्पष्ट करने को कहा।

तरुण ने कहा- मित्रों ! आर्यन के जीवन की इस भयानक एवं नितांत सच्चाई को झुठलाया भी तो नहीं जा सकता और इसे विश्वास न करने के पीछे कोई वजह भी तो नहीं है। आरुषि की आंखों से उष्ण अश्रु की धारा बहने लगी। वह सुबकते हुए कहने लगी- पहेली न बुझाओ, तरुण ! स्पष्ट कहो क्या बात है ? तरुण ने आरुषि की ओर देखा और वह बोझिल शब्दों के साथ कहने लगा- आर्यन मेरा बचपन का मित्र है। मेरे जीवन की बेशकीमती यादें उसके साथ जुड़ी हुई है। उसका बचपन बेहद ऐश्वर्यशाली एवं सभी सुख-साधनों से सरोबार था। वह समृद्ध एवं साधन सम्पन्न परिवार से संबंधित था। सब कुछ ठीक-ठाक था कि अचानक उसके पिताजी की मृत्यु हृदयघात के कारण हो गई। पिता के बिछोह एवं वियोग का दर्द उसकी माँ झेल नहीं सकी और विक्षिप्त हो गई। ऐसी दशा में लम्बे समय तक बने रहने के कारण उनमें मानसिक विकृति आ गई। आर्यन के ऊपर उनकी सारी जिम्मेदारी आ गई। अब आर्यन ही उनकी देखभाल करता है। पिता की मृत्यु का दर्द उनके अंदर ऐसा जम गया कि वह पिघल ही नहीं सका और इसी वजह से तब से लेकर अब तक वह कुछ बोलती ही नहीं। कोई भी उपचार एवं दवा कारगर नहीं हो पाई और न हो पा रही है। तरुण की आंखों से आंसू छलछला उठे। उन्हें पोछने के बाद उसने कहा- पिता की मृत्यु से पूर्व ही आर्यन का विवाह संजना से हो गया था। संजना भी समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार से आई थी। वह भी आर्यन के समान दूसरों की सेवा करने में अति आनंदित होती एवं स्वयं गौरवान्वित महसूस करती थी। विवाह के बाद एक या दो वर्ष बेहतर ढंग से गुजरा। एक दिन कार दुर्घटना में संजना का सिर एवं कमर बुरी तरह से क्षत-विक्षत हो गए और इसका परिणाम बड़ा भयानक निकला। परिणाम था कि संजना मातृत्व सुख से सदा के लिये वंचित हो गई और उसकी याददाश्त खो गई। सुन्दर एवं भव्य व्यक्तित्व वाली संजना का जीवन अभिशप्त सा हो गया। इस घटना ने आर्यन से भी अधिक उसके पिता को झकझोर दिया था। संभवतः इस दुर्घटना के कारण उसके पिता अधिक दिन तक स्वयं को रोक नहीं पाए।

राकेश ने कहा- आर्यन तो इस घटना से बुरी तरह से टूट गया होगा। सभी के सामने आर्यन का दर्द असहनीय हो उठा। तरुण ने कहा- नहीं राकेश ! आर्यन इस झंझावात को चुपचाप सहता गया। इकलौती संतान आर्यन को पिता की संपत्ति का कोई ज्ञान नहीं था क्योंकि वह तो एम.बी.ए. करते हुए विवाह कर चुका था। पिता की मृत्यु के बाद तो उसने एम.बी.ए. उत्तीर्ण किया था। धन लोलुप रिश्तेदारों ने आर्यन की पैतृक संपत्ति को छीन लिया। माँ एवं संजना की बीमारी ने उसे संभलने का मौका ही नहीं दिया। उसे अपनी सारी अचल संपत्ति बेचने को विवश होना पड़ा और उसे किराये के एक छोटे से मकान में पनाह लेनी पड़ी। किसी तरह से इस ऑफिस में से सामान्य वेतनमान के साथ एक नौकरी मिल गई। जो कितनों को ऐसी आजीविका दे सकता था, आज वह उसके लिये स्वयं विवश है।

तरुण की आवाज बोझिल थी, भर्रायी एवं थरथरा रही थी और उसी भाव से वह कहता जा रहा था- मित्रों ! आर्यन जब घर जाता है तो वहां खाना बनाकर माँ एवं पत्नी को खिलाती है, उनकी सेवा करता है तथा देर रात सभी कार्यों से निवृत्त होकर स्वामीजी के चिंतन में खो जाता है। उसका रात्रि में सोने का समय निश्चित नहीं है, परन्तु उठने का समय प्रातः पांच बजे निर्धारित है। वह उठकर फिर से उन दोनों की सेवा करता है, स्वल्पाहार एवं भोजन आदि की व्यवस्था

करके फिर से ऑफिस के लिये रवाना होता है। संजना की याददाश्त ही खो गई है, इसलिये वह कब, कहां, कौन-सा सामान छोड़ देती है, उसको ढूंढ़ना एवं दुष्कर कार्य करता रहता है। दूसरी ओर माँ की पथरायी आँखों में अजीब सा सूनापन आर्यन को तोड़ने के लिये पर्याप्त है, परन्तु आर्यन इन संघर्षों के बीच टूटा, हारा, थका नहीं, वह तो और भी सहनशील, धैर्यवान एवं अपार साहसी हो चुका है। वह अपने जीवन की परवाह किये बगैर औरों के लिये अपना सर्वस्व लुटाने के लिये सदा तत्पर रहता है।

उसे अपना ख्याल रखने के लिये कहता हूं तो वह कहता है-तरुण ! स्वामी विवेकानंद कहते हैं- तुम काम में लग जाओ, फिर देखोगे कि इतनी शक्ति आएगी कि तुम उसे संभाल न सकोगे। दूसरों के लिये रत्ती भर काम करने से भीतर की शक्ति जाग उठती है। दूसरों के लिये रत्ती भर सोचने से धीरे-धीरे हृदय में सिंह के समान भाव आ जाता है। चाहे अपने को नरक में क्यों न जाना पड़े, परन्तु दूसरों की मुक्ति हो। सच मानो तरुण ! मुझे स्वामीजी के आग्नेय विचारों से ही शक्ति एवं प्रेरणा मिलती है और उन्हीं की कृपा से ही मैं इन झंझावातों से संघर्ष करने में समर्थ हो पाता हूं। हमें हार नहीं मानना चाहिये, सतत संघर्ष करते रहना चाहिये। एक दिन तरुण ने आर्यन के पास आकर पूछा- आज यह उदासी क्यों ? आर्यन ने कहा- माँ की याद हो आई थी। बचपन की कुछ यादें घूमने लगी थी और उसी वजह से काम में मन नहीं लग रहा था। अब सब ठीक है। यह कहते हुए उसने फिर से सबको कुछ नई बातें बताई एवं अच्छा करने के लिये नई योजना गढ़ने लगा।

संयम ही जीवन है

आज देश अस्वस्थ है, समाज अस्वस्थ है, परिवार अस्वस्थ है। अस्वस्थ क्यों है ? वह चिंतनीय बिंदु है। सामाजिक अस्वस्थता का जिम्मेदार देश का प्रत्येक नागरिक है। प्रत्येक व्यक्ति का असत् चिंतन, अशुद्ध कार्य, अशुभ व्यवहार ही सामाजिक अस्वस्थता का मुख्य कारण है। व्यक्ति समस्याओं की सकरी पगडण्डी से गुजर रहा है। एक समस्या दूर होती है तो उससे बढ़कर दूसरी नई समस्या पैदा हो जाती है। समस्याओं का जनक व्यक्ति स्वयं है। आज देश की एक ज्वलन्त समस्या है- ''हिंसा''। स्वस्थ समाज संरचना का सपना ''अहिंसा''की भूमिका पर ही साकार हो सकता है।

समाज स्वस्थ कब बन सकता है ? जब व्यक्ति का चिंतन स्वस्थ बने, दृष्टिकोण स्वस्थ बने। स्वस्थ चिंतन से ही समाज स्वस्थ बन सकता है। कोई भी घटना बाहर घटित होने से पहले व्यक्ति के दिमाग में घटित होती है। उसके बाद बाहर आती है। इसलिये स्वस्थ और अहिंसक समाज के लिये यह अपेक्षित है कि पहले मस्तिष्क को प्रशिक्षित किया जाये जिससे चिंतन में परिवर्तन आयेगा। स्वस्थ चिंतन ही स्वस्थ व्यवहार के रुप में जन्म लेगा। यह परिवर्तन लम्बा अभ्यास मांगता है, दृढ़संकल्प शक्ति मांगता है। अहिंसा के विकास से ही संयम का विकास संभव है। संयम के विकास से ही स्वस्थ समाज की संरचना संभव है। सारी समस्याएं असंयम से पैदा होती है। मन का असंयम, वाणी का असंयम और काय का असंयम ही सब समस्याओं को पैदा करता है। अतः सब समस्याओं का समाधान है- ''संयम''।

एक साधु द्वार पर बैठे तीन भाईयों को उपदेश दे रहे थे-''वत्स ! संसार में संतोष ही सुख है जो कछुए की तरह अपने हाथ-पॉव सब ओर से समेट कर आत्मलीन हो जाता है, ऐसे निरुद्योगी पुरुष के लिए संसार में किसी प्रकार का दुःख नहीं रहता।''

घर के भीतर बुहारी लगा रही मॉ के कानों में साधु की यह बात पड़ी तो वह चौकन्ना हो उठी। बाहर आई और तीनों लड़कों को खड़ा करके छोटे से बोली- ''एक घड़ा पानी भरकर ला, मझले ने कहा- उठा यह झाडू और घर-बाहर की बुहारी लगा, अंतिम तीसरे को टोकरी देते हुए उसने कहा- तू चल और सब कूड़ा उठाकर बाहर फेंक।'' अंत में साधु की ओर देखकर उस कर्मावती ने उपदेश दिया- ''महात्मन् ! निरुद्योगी मैंने बहुत देखे, कई पड़ोस में ही बीमारी से ग्रस्त, ऋण के भार से दबे पड़े हैं, अब मेरे बच्चों को भी वह विषवारुणी पिलाने की अपेक्षा आप ही निरुद्योगी बने रहिए और इन्हें कुछ उद्योग करने दीजिए। गॉव वालों ने कहा- ''महात्मन् ! आपका उपदेश झूठा है और इस मॉ का उपदेश सच्चा।'' साधु उदास मन जंगल की ओर चल पड़ा और अपने निरुद्योगी सिद्धांत पर देर तक पश्चाताप करता रहा।

सफल कैसे हों ?

योजना एवं व्यवस्था एक पहलू के दो स्वरुप हैं। योजना के द्वारा कार्य का प्रारुप तैयार होता है, उसका खाका खींचा जाता है कि किस प्रकार किसी कार्य को चरणबद्ध ढंग से एवं निश्चित समय में पूरा किया जाए। योजना कार्य का बौद्धिक पक्ष है, परन्तु जिस माध्यम से बनाई गई योजना को क्रियान्वित किया जाता है, उसे व्यवस्था पक्ष कहते हैं। दोनों एक दूसरे के परिपूरक हैं। केवल योजना हो, उसका क्रियान्वयन न हो तो योजना कागजी स्वरुप बनी रह जाती है, परन्तु केवल व्यवस्था हो और उसमें कोई निश्चित योजना न हो तो उसका कोई सार्थक परिणाम नहीं निकल पाता है। अतः दोनों का अपना विशिष्ट महत्व है।

योजना बीज है और व्यवस्था उसका कलेवर। योजना मस्तिष्क की उर्वरा भूमि में पल्लवित होती है तो व्यवस्था कर्म के क्षेत्र में क्रियान्वित होती है। योजना दूरदर्शी हो और व्यवस्था भी चाक-चौबंद, इसके लिये सर्वप्रथम भगवान कृष्ण ने महाभारत युद्ध में योजना एवं व्यवस्था, दोनों एक ही व्यक्ति के द्वारा संपादित होती थी। यह पुरानी प्रथा थी। इसी व्यवस्था के तहत कौरवों के पक्ष में युद्ध करनेवाले भीष्म पितामह को युद्ध की रणनीति एवं व्यवस्था दोनों की जिम्मेदारी दी गई थी। वे दोनों को संचालित करने में सक्षम थे। उनकी क्षमता एवं सामर्थ्य में कहीं कोई कमी नहीं थी। वे कौरवों पक्ष के प्रधान सेनापति भी थे और युद्ध की रणनीति के साथ ही युद्ध की सारी व्यवस्था को भी देखते थे।

भीष्म पितामह को अपनी नई रणनीति एवं योजना बनाने में समय के अभाव के साथ-साथ अन्य कई समस्याएं आती थी क्योंकि युद्ध की सारी व्यवस्था भी उन्हीं को देखनी पड़ती थी और यही वजह थी कि भीष्म पितामह को सभी मोर्चो में अकेले जुझना पड़ता था। युद्ध भी उन्हीं को करना होता था, व्यूह-रचना भी वहीं करते थे और इसकी सारी व्यवस्था भी उन्हीं को देखनी पड़ती थी। इसलिए, ठीक-ठीक योजना बनाने में उनसे चुक हो जाती थी क्योंकि योजना बनाने के लिए शांत मन एवं पर्याप्त समय की आवश्यकता पड़ती है। यही वजह है कि कौरव सेना में महाभारतकाल के लिए इतने बड़े-बड़ेयोद्धा, सेनापति होने के बावजूद भी उन्हें हार का सामना करना पड़ता था। जीत के लिए योजना सटीक होनी चाहिये और योजना को अमल करने के लिये इसका क्रियान्वयन भी त्वरित ढंग से होना चाहिये। अकेले भीष्म इतने बड़े युद्ध को दोनों मोर्चो पर सफलता दे पाने में कभी-कभी चूक जाते थे हालांकि उनकी सामर्थ्य एवं कुशलता में कहीं कमी नहीं थी।

इसके ठीक विपरीत भगवान कृष्ण ने सर्वप्रथम पांडवों की सेना में सेना की व्यवस्था एवं रणनीति बनाने के कार्य को अलग-अलग व्यक्तियों को सौंपा था। इसके लिये पांडव सेना के धृष्टद्युम्न को प्रधान सेनापति बनाया एवं युद्ध की योजना बनाने के लिए अर्जुन को नियुक्त कर दिया। वे जानते थे कि व्यवस्था संभलना कोई बड़ी जिम्मेदारी नहीं है। एक कम प्रतिभाशाली व्यक्ति भी इसे संभाल सकता है, परन्तु युद्ध की रणनीति तैयार करने के लिये एक कुशाग्र बुद्धिसंपन्न व्यक्ति की आवश्यकता पड़ती है, जो युद्ध की बारीकियों को समझ सके। अर्जुन एक कुशल योद्धा थे। वे युद्ध संबंधी सभी रणनीतियों से खूब परिचित थे, अतः वे अपने सखा भगवान कृष्ण के साथ मिलकर युद्धोपरांत केवल रणनीति बनाते थे। युद्ध के पश्चात वे निश्चित मन से योजना बनाते थे।

भीष्म पितामह को योजना के साथ व्यवस्था भी देखनी पड़ती थी। अतः योजना बनाते समय एकाग्र नहीं हो पाते थे, परन्तु वह काम भगवान कृष्ण अर्जुन से खूब अच्छे से करा लेते थे और यही वजह है कि विशाल कौरव सेना के समक्ष सीमित पांडव सेना को विजय पताका फहराने का मौका मिलता रहता था। योगेश्वर कृष्ण बुद्धिमान थे, व्यवस्था-बुद्धि का शिक्षण देने आए थे। उन्होंने योजना एवं व्यवस्था को भिन्न हाथों में सौंपकर दिखा दिया कि सफलता कैसे मिलती है। उन्होंने स्वयं भी इस नीति का पालन किया। वे द्वारकाधीश होकर भी इतना निश्चित इसलिए रह सके थे, क्योंकि उन्होंने सभी व्यवस्था संबंधी अधिकार उपयुक्त हाथों में सौंप दिये थे। योजना भी स्वयं भी बनाते थे। उनकी राजधानी द्वारका में थी, परन्तु वे वहां से दूर बेट द्वारका में निवास करते थे। वह भी इसी का अंग थी।

वस्तुतः व्यवस्था संभालने के लिए किसी कुशाग्र प्रतिभा की आवश्यकता नहीं होती है। यदि योजना ठीक-ठीक हो, तो एक सामान्य व्यक्ति भी व्यवस्था की बागडोर संभाल

सकता है क्योंकि व्यवस्थापक को व्यवस्था संभालनी होती है, दी गई कार्य-योजनाओं को किस प्रकार क्रियान्वित करना है, उसकी देखरेख करनी होती है। इसे यों कह सकते हैं कि व्यवस्थापक एक कुशल रखवाला होता है, जो योजना को सही ढंग से क्रियान्वित कर देता हैं। व्यवस्थापक को व्यवस्था के अलावा कोई अन्य काम नहीं करना पड़ता है और न कुछ सोचना पड़ता है, अतः अपनी व्यवस्था में वह सारी ऊर्जा खपा देता है, जिससे व्यवस्था संभली रहती है और सुचारु रुप से गति करती रहती है, परन्तु यदि व्यवस्थापक को योजना का भी काम दे दिया जाए तो या तो व्यवस्था चरमरा जाएगी या फिर योजना डगमगाएगी। सभी मोर्चो में एक साथ काम कर पाना सभी के लिये संभव नहीं हो सकता है हालांकि कुछ विरले लोग ऐसे भी होते हैं, जो दोनों क्षेत्रों में एक साथ कार्य करने की क्षमता रखते हैं। चंद्रगुप्त के हाथों राज्य की बागडोर थमाकर चाणक्य वृहद् भारत की योजना बुनते थे। वे सफल रहे। रामकृष्ण मिशन की स्थापना की जिम्मेदारी संभालने के बाद स्वामी विवेकानंद ब्रह्मानंद को मिशन का अध्यक्ष पद सौंपकर निश्चित हो गए थे। वस्तुतः व्यवस्था ऐसी युक्ति है, जिसको देखने, संभालने में उर्वर मस्तिष्क भी थककर कुंद हो जाता है। उसे उर्वर बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि वह इस संजाल में अधिक न उलझे परन्तु व्यवस्था ऐसी आकर्षक भूमि है, जहां अधिकार के प्रभाव एवं प्रतिष्ठा होती है और अधिकार से अहंकार को बड़ी तृप्ति मिलती है, अहंकार तुष्ट होता है। व्यवस्था में बड़ा आकर्षण होता है और इस ओर झुकाव भी अधिक देखा गया है। योजनाकार नई-नई योजना बनाने में संतुष्टि पाता है वह तो अपनी योजना को क्रियान्वित होते देखता है और प्रसन्न होता है। वह व्यवस्था में अधिक उलझना नहीं चाहता है। अतः कार्य की सफलता के लिए आवश्यक है कि योजना एवं व्यवस्था को दो अलग-अलग क्षेत्रों में बांट दिया जाए। यही है कार्य की सफलता का राज एवं रहस्य।

ज्ञान और कर्म

मनुष्य के व्यावहारिक जीवन में दो विभाग है, एक कर्मात्मक और एक ज्ञानात्मक। हाथ है, पांव है, ये सब कर्तात्मक विभाग में है और आंख है, कान है, नाम है, स्वाद लेने वाली रसना है, ये सब ज्ञानात्मक विभाग में है। प्रियता-अप्रियता, रुचि-अरुचि इनके संस्कार मन में होते हैं। मनुष्य के जीवन में कर्म और ज्ञान के समन्वय का भी विभाग होता है। ज्ञान और कर्म का संबंध परस्पर ऐसा है, जैसे हम आंख से देखते हैं और पांव से चलते हैं। आंख से देखना ज्ञान है और पांव से चलना कर्म है। हम किसी चीज को पकड़ते हैं तो यह कर्म हुआ। वह कोमल है या कठोर है-यह जानना ज्ञान है। हाथ से फूल तोड़ते हैं पर चमेली की गंध में और गुलाब की गंध में क्या अंतर है, यह हाथ को तो पता नहीं चलता, यह नासिका को पता चलता है। नासिका ज्ञान है, हाथ कर्म है। वह कोमल है या कठोर है- यह त्वचा बताती है। वह नीला है या पीला है या सफेद है- यह आंख बताती है। हम लोगों के जीवन में ज्ञान और कर्म दोनों मिलकर इसका निर्वाह करते हैं। यदि कर्म ही कर्म में रहे और ज्ञान न हो, तब वह अंधा होगा। ज्ञान ही ज्ञान हो और कर्म न हो तो वह, जैसे कोई लंगड़ा हो, लूला हो, हाथ-पांव न हों, ऐसा हो जाएगा।

इसलिये जीवन में समझदारी भी होनी चाहिये और पौरुष-प्रयत्न भी प्रयत्न भी होना चाहिये। समझदारी के बिना प्रयत्न अंधा है और प्रयत्न के बिना समझदारी बांझ है, वंध्या है।

पर्वतों से निकलकर बहनेवाली सरिता की धारा ने अपनी सहेली दूसरी धारा से कहा- मैं भ्रमणशील और गतिमान जीवन से ऊब गई हूं। एक पल को भी विराम नहीं, ऐसा जीवन किस काम का। अब आगे बढ़ने का मेरा इरादा नहीं है। आम्र का एक सघन कुंज देखकर वह उसके नीचे थम गई और वहीं रुक गई।

दूसरी धारा आगे बढ़ते गई और जाते-जाते कह गई- तू रुक तो रही है, किन्तु याद रखना गतिशीलता में पावनता स्वच्छता और जीवन है। यदि तेरे जीवन में अकर्मण्यता ने स्थान बना लिया तो तू स्वाभाविक गुणों से हाथ धो बैठेगी। पहली धारा ने अपनी सहधारा की बात पर उस समय तो ध्यान नहीं दिया और उसने एक सरोवर का रुप धारण कर लिया। जल के स्थिर हो जाने से जल में सड़ांध उत्पन्न होने लगी और वह स्वच्छ जल पीने योग्य न रहा। ग्रामवासियों और जानवरों तक ने उसे त्याग दिया। तब उसे गतिशीलता और क्रियाशीलता का महत्व समझ में आया।

हृदय रोगों को हम स्वयं आमंत्रित करते हैं

आज के दौर में आक्रमक प्रतिस्पर्द्धात्मक जीवनशैली ने भौतिक सुख सुविधाओं में भारी वृद्धि की है, लेकिन साथ ही मनुष्य की मानसिक शांति एवं शारीरिक स्वास्थ्य को भी बुरी तरह नष्ट कर दिया है। उच्च रक्तचाप से ग्रसित लोगों की बढ़ती संख्या इसी की देन है। नवीनतम वैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार विश्व-जनसंख्या की लगभग 25 प्रतिशत आबादी इसकी चपेट में है। सामान्यतया संकट के समय सामना करने के लिये प्रकृति स्वयं ही हमारा रक्तचाप बढ़ा देती है लेकिन यह बढ़ा हुआ रक्त-चाप स्थिति सामान्य हो जाने पर स्वतः ही सामान्य हो जाता है। परन्तु आजकल क्रोध, भय, उत्तेजना व असंतुष्ट के जाल में उलझे-फंसे व्यक्ति में संकट से लड़ने की क्षमता ही खत्म होती जा रही है। इसके फलस्वरुप यदि रक्तचाप बढ़ता है तो बढ़ा ही रह जाता है।

सामान्यतया संकट के समय सामना करने के लिये प्रकृति स्वयं ही हमारा रक्तचाप बढ़ा देती है, लेकिन यह बढ़ा हुआ रक्तचाप स्थिति सामान्य हो जाने पर स्वत: ही सामान्य हो जाता है परन्तु आजकल क्रोध, भय, उत्तेजना व असंतुष्टि के जाल में उलझे-फंसे व्यक्ति में संकट से लड़ने की क्षमता ही खत्म होती जा रही है। इसके फ्लस्वरुप यदि रक्तचाप बढ़ता है तो बढ़ा ही रह जाता है।

हमारे शरीर में रक्तसंचार के लिए दिल सिकुड़ता-फैलता रहता है। जब दिल सिकुड़ता है तो बड़े जोर से रक्त को धमनियों में ढकेलता है। धमनियां रक्त ग्रहण करते समय फैलती है और फिर रक्त को आगे बढ़ाने के लिये सिकुड़ती हैं। बारी-बारी से रक्तप्रसार व ग्रहण के निमित्त हृदय में संकुचन या प्रसार क्रिया होती है। यदि धमनियां लचीली, नरम व स्वच्छ होती है तो हृदय को रक्त प्रवाहित करने व ढकेलने में अतिरिक्त श्रम नहीं करना पड़ता है। लेकिन यदि किसी कारण से धमनियां सँकरी व कड़ी हो जाएं तो हृदय को रक्त प्रवाहित करने के लिए अतिरिक्त श्रम करना पड़ता है, जिससे व्यक्ति उच्च रक्तचाप का शिकार हो जाता है।

एक सामान्य व्यक्ति में 80 (निम्न) से 120 (उच्च) मि.मी. ब्लडप्रेशर होता है। 90-100 (निम्न) से 140-150 मि.मी. (उच्च) तक मोडरेटेड ब्लडप्रेशर माना जाता है। व्यक्ति की उम्र, लिंग, शारीरिक व मानसिक श्रम के अनुसार रक्तचाप का सही अनुपात भी भिन्न-भिन्न होता है। कृत्रिम-अप्राकृतिक जीवन, असंयमित खानपान और आहार-विहार से रक्त में विकार बढ़ता चला जाता है। निजी घरेलू और कार्य क्षेत्र की समस्याओं से मन-मस्तिष्क में यदि तनाव बना रहता है तो इससे भी रक्त में विकार उत्पन्न होते रहते हैं। विकार युक्त से धमनियाँ सँकरी व कड़ी हो जाती है और रक्त-संचरण में बाधा आती है। रक्तचाप का रोग शरीर की दूषित अवस्था से शुरु होता है और कभी-कभी यह इतना भयंकर रुप ले लेता है कि रोगी के लिये जानलेवा सिद्ध हो जाता है।

उच्च रक्तचाप के अनेक कारणों में शरीर में नमक की अधिकता एक मुख्य कारण है। शुरुआत में जब लगे कि रक्तचाप सामान्य से अधिक हो रहा है, तो समझ लेना चाहिये कि शरीर की आवश्यकता से अधिक नमक ग्रहण किया जा रहा है। नब्बे प्रतिशत मामलों में यही कारण पाया जाता है। यदा-कदा यह बीमारी आनुवंशिक भी होती है। माता-पिता में से एक या दोनों के उच्च रक्तचाप से पीड़ित होने की स्थिति में बच्चे में भी इसके होने का खतरा बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त गुरदे की खराबी, शरीर में हारमोन का असंतुलन, लंबे समय तक गर्भ-निरोधक गोलियां का इस्तेमाल, गर्भावस्था, परिस्थितियों का दबाव, विपरीत मनोदशा एवं आवश्यक आराम का अभाव आदि अनेक ऐसे कारण हो सकते है, जो इस बीमारी को जन्म देते है। चाय, कॉफी एवं नशीले पदार्थों का अधिक सेवन भी रक्तचाप को बढ़ाता है। चिकित्सकों के अनुसार मात्र एक सिगरेट पीने से रक्तचाप आधे से लेकर एक घंटे तक बढ़ा रह सकता है और दिनभर धूम्रपान करने से पूरे दिन रक्तचाप बढ़ा रह सकता है। मोटापा भी उच्च रक्तचाप का एक बहुत बड़ा कारण है। एक सामान्य आदमी का वजन 45 से 75 किलो के बीच होना चाहिये। यदि वजन लंबाई एवं उम्र के निर्धारित आनुपातिक वजन से ज्यादा बढ़ता है, तो रक्त कोशिकाओं, नलियों व हृदय पर बुरा असर पड़ता है।

उच्च रक्तचाप के शिकार व्यक्ति को सिर में दर्द, चक्कर आना, चिड़चिड़ापन, तनाव, मुंह लाल होना, धमनियों का फूल जाना, सांस फूलना जैसे मुख्य लक्षणों के अलावा दिल में दर्द हो सकता है, जिसे हाईस्ट्रोक कहते है। स्थिति ज्यादा खराब होने पर दिमाग की नस फटना, आंखों के परदे पर विकार आ जाने से दृष्टि कमजोर होना एवं गुरदे पर असर होने से इनका कमजोर होना, जैसे घातक लक्षण प्रकट होते हैं। कई बार रक्तचाप के अचानक तीव्र हो जाने से गुरदे भी अचानक नष्ट हो सकते हैं। एक शोध रिपोर्ट के अनुसार लगभग 15 प्रतिशत उच्च रक्तचाप के रोगी गुरदे के विकार से ग्रस्त होते है। उच्च रक्तचाप से गुरदों पर पड़ने वाले असर को नेफ्रोस्कलोसिस कहते हैं। इस असर को ''माइक्रो एल्ब्यूमिन विधि'' द्वारा पहचाना जा सकता है।

उच्च रक्तचाप से हृदय की मांसपेशियों में स्थायी रुप से दोष उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे पंपिंग क्रिया प्रभावित होती है व हार्टफेल हो सकता है। मेरीलैंड यूनिवर्सिटी के शोधकत्ताओं की एक टीम ने इस आशय की एक रिपोर्ट प्रस्तुत की है। डॉ. डब्लू. जोनाथन लेडरेट के नेतृत्व में किये गये इस शोध-अध्ययन में इन वैज्ञानिकों ने पाया कि दिल की सामान्य धड़कन के लिये हृदय की दूसरी कोशिका ''आर्गेनल'' में ट्रांसफर होता है परन्तु जो उच्च रक्तचाप से ग्रस्त होते है उनके हृदय की कोशिकाएं क्रमशः बढ़ती जाती है और इससे कैल्शियम चैनल व आर्गेनल चैनल के बीच की दूरी भी बढ़ जाती है। परिणामस्वरूप दोनों कोशिकाओं के बीच कम्यूनिकेशन घटता जाता है और हार्टबीट कमजोर पड़ती जाती है जिसकी अंतिम परिणति हार्टफेल के रुप में होती है। डॉ.लेडरेट का कहना है कि उच्च रक्तचाप लंबे समय तक रहने से यदि हृदय की पेशियों में यह दोष उत्पन्न हो जाए तो इसे फिर से ठीक करना प्रायः असंभव है। ज्यादा से ज्यादा इन पेशियों की बढ़ी हुई स्थिति को स्थिर किया जा सकता है।

उच्च रक्तचाप न हो इसके लिए सबसे जरुरी है खानपान एवं आहार-विहार में संयम। प्रातःकाल ठंडी हवा में टहलना, थोड़ी देर व्यायाम करना भी इसके लिये अत्यन्त लाभदायक है। उच्च रक्तचाप से पीड़ित लोगों को नमक रहित संतुलित आहार लेना चाहिए। चिकनाई व प्रोटीन युक्त पदार्थों का सेवन कम कर देना चाहिये। कब्ज से बचने का प्रयास करना चाहिये एवं भूख से कुछ कम खाना चाहिये। शोध-अनुसंधान से यह ज्ञात हुआ है कि यदि अधिक वजन वाला व्यक्ति अपना वजन एक किलोग्राम कम करता है तो उसका रक्तचाप बिना किसी औषधि के ही लगभग दो मि.मी. कम हो जाता है। खानपान के इस क्रम में चाय, कॉफी एवं नशीले पदार्थों को पूरी तरह से बंद करना ही अच्छा है।इसी के साथ ईर्ष्या, द्वेष, भय, झूठ, अहंकार आदि मानसिक विकारों से बचने का प्रयास करना चाहिये। उदाहरण के लिये, झूठ बोलने वाला व्यक्ति हर समय भयग्रस्त रहता है कि कहीं उसका झूठ पकड़ा न जाए। यह द्वंद्व की स्थिति उसका रक्तचाप बढ़ाए रख सकती है। इस द्वंद्व की स्थिति से उबरने व पूर्णतः तनाव से मुक्त रहने के लिये ध्यान का प्रयोग भी अतीव लाभदायक सिद्ध होता है। इस सत्य को विज्ञानवेत्ताओं ने भी स्वीकार करते हुए कहा है कि ध्यान के नियमित प्रयोग से न केवल मन-मस्तिष्क शांत व तनाव मुक्त रहता है बल्कि शारीरिक व्यवस्था में भी समुचित सामंजस्य बना रहता है।

सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अपनी कमजोरियों से हम बीमारियों को स्वयं आमंत्रित करते हैं। अनियमित, असंयमित जीवनचर्या ने ही हमें बीमारियों से घेर रखा है। यदि हम पुनः प्रकृति के अनुशासन में रहकर जीना सीख सकें, तो स्वस्थ रहना कोई असंभव कार्य नहीं है।

प्रबुद्धता जगाएँ- *हर भाग्यवान व्यक्ति अपने को प्रबुद्ध वर्ग का नैसर्गिक सदस्य समझे, जिसकी अंतरात्मा में परमात्मा ने देश, धर्म के प्रति जागरुकता और मन-मस्तिष्क में समाज की दयनीय दशा की पीड़ा पैदा की है। जो बुद्धिमान अपने अंदर आदर्शवादिता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता, सामाजिकता एवं मानवता का कोई अंश समझता है और देश तथा समाज की वर्तमान दशा से क्षुब्ध होता है,जिसके हृदय में कुछ-न-कुछ उपाय करने की जिज्ञासा होती है, वह हर व्यक्ति अपने को प्रबुद्ध वर्ग का समझे और तद्नुसार अपने कर्त्तव्य में यह समझ कर लग जाए कि यदि परमात्मा हमसे इस पावन कर्तव्य की अपेक्षा न करता तो हमारी आत्मा में इस प्रकार की मंगलमयी जागरुकता न भरता। आज समय की मांग है कि समाज के प्रबुद्ध व्यक्ति एक या अनेक होकर समाज सुधार के किसी काम को लेकर आगे बढ़ने की प्रेरणा दें। संसार की सारी क्रांतियां तथा परिवर्तन प्रबुद्ध वर्ग ही कर सकता है और उसे करना भी चाहिये।*

जन-जन की भागीदारी ही बचाएगी पर्यावरण को

मनुष्य ने जब से अपने को सृष्टिका मुकुटमणि मानकर वनस्पति एवं प्राणिजगत का जिस तेजी से विनाश करना आरंभ किया है, इसे देखते हुए मनीषियों का चिंतित होना स्वाभाविक है। विनाश का क्रम यदि यही रहा तो वह कहां जा पहुंचेगा, कहा नहीं जा सकता। इस संदर्भ में विश्व-विख्यात तत्वचिंतक बरट्रांड रसेल ने अपनी कृति ''दी साइंटिफिक आउटलुक'' में लिखा है कि विज्ञान के विकास से पूर्व मनुष्य प्राकृतिक तत्वों, जैसे- वर्षा, आंधी, तूफान भूकम्प, अकाल आदि की अधीनता स्वीकारने में अभ्यस्त था। लेकिन विज्ञान के माध्यम से इस अधीनता से छुटकारा पा लेने के बाद वह उन कमजोरियों को प्रदर्शित करने लगा है, जो गुलाम से मालिक बनने वाला व्यक्ति दर्शाता है और अंततः औंधे मुंह खाई-खड्ड में जा गिरता है। अतः अब एक नए नैतिक दृष्टिकोण को विकसित करने की आवश्यकता दृष्टिगोचर होने लगी है, जिससे प्राकृतिक तत्वों की दासता के स्थान पर मानवेतर सृष्टि के प्रति मानव के अंतःकरण में निहित उत्कृष्टता के प्रति आदर का प्रतिष्ठापन हो। वैज्ञानिक तकनीकी विकास के साथ आज इसी सद्गुण की कमी पाई जाती है।

प्राकृतिक पदार्थ, वनस्पति एवं जीव जगत के अंधाधुंध शोषण के कारण ही पर्यावरण का इस हद तक अपकर्ष हो रहा है, जो स्वयं मानवी अस्तित्व के लिये एक भयावह संकट बन गया है इसके मूल में मनुष्य की पर्यावरणीय नीति में अतीव लापरवाही बरतना और समाज के लिए नए मानदंडों की रचना करने में विफलता ही मुख्य कारण है।

वनस्पति जगत को ही लें तो मनुष्य के प्रति उसके अनेकों अनुदान हैं, जैसे कि अपने लिये खाद्यान्न, पालतू जानवरों के लिये घास-चारा, वन्य पशुओं से रक्षा हेतु निवास आदि ईंधन, औषधियां, सौंदर्य-प्रसाधन के विभिन्न पदार्थ और धार्मिक कर्मकांडों के लिए आवश्यक हव्य-सामग्री आदि वनस्पति जगत से ही उपलब्ध होती है। यही कारण है कि प्रकृति के प्रति आदर की भावना प्राचीनकाल से ही देखी जाती है। इस संबंध में विख्यात प्रकृतिप्रेमी और वृक्ष-वनस्पतियों से प्रेमभरा व्यवहार कर विपुल मात्रा में फसल एवं फल-फूल आदि प्राप्त करनेवाले वैज्ञानिक जेइम्स फरगुसन ने अपनी पुस्तक ''ट्री एण्ड सर्पेंट वरशीप'' में विस्तृत विवरण प्रकाशित किया है। उनका कहना है कि हम अपनी धार्मिक मान्यताओं से संपर्क करने में कहां भूल करते हैं, जब हम यह प्रश्न करते है कि किसी के लिए यह आशा करना कैसे संभव है कि एक वृक्ष के प्रति की हुई प्रार्थना का उत्तर कैसे मिलेगा ? या फिर किसी वृक्ष की पूजा करने से उसकी संतुष्टि कैसे होगी ? वस्तुतः वृक्ष आदि के पूजन के पीछे उसमें निहित चेतनसत्ता के प्रति आभार या कृतज्ञता प्रकट करना होता है, जो अपना सर्वस्व लुटाकर भी हमारी हर तरह से सहायता करते हैं।

अपने देश में जो प्रकृति के प्रतीकों की पूजा प्राचीनकाल से प्रचलित है, उसमें उपयोगिता के साथ-साथ आध्यात्मिकता का समन्वय किया गया है। भारत में वृक्ष-वनस्पतियों आदि में देवी-देवताओं का निवासस्थान माना गया है। इस मान्यता के साथ इनमें संरक्षात्मक शक्ति की भी कल्पना की गई है। यह मान्यता भी परंपरा से चली आ रही है और इस शक्ति का अतिक्रमण करने से यही संरक्षात्मक शक्ति विषाक्तता, प्रदूषण आदि के रुप में घातक भी हो सकती है। इस तथ्य की जानकारी ऋषि-मनीषियों को प्राचीनकाल से ही थी। अथर्ववेद के कांड-4, सूक्त-3 के प्रथम श्लोक में बताया गया है कि प्रकृति की जीव सृष्टिका विनाश करनेवाले व्याघ्र, चोर और भेड़ियों से हमारी रक्षा हो। वन्यप्रदेश, झरने एवं वायु को प्रदूषित करनेवालों से हम सुरक्षित रहें। बृहदारण्यकोपनिषद् के अध्याय-3, ब्राह्मण-9, मंत्र-28 में तो मनुष्य और वृक्ष के विभिन्न अंगों की तुलना इस प्रकार से की गई है-

''मनुष्य की तरह वृक्ष वनों का राजा है। मनुष्य के बाल उसके पत्ते हैं। उसकी त्वचा वृक्ष की बाह्य छाल है। जिस प्रकार मनुष्य की त्वचा से रक्त निकलता है, उसी प्रकार वृक्ष की छाल से रस निकलता है। घायल मानव के अंग से रक्तस्राव होता है, इसी तरह वृक्ष को काटने से रस बहने लगता है। मानव मांसपेशियों की तुलना में वृक्ष के काष्ठके साथ की जा सकती है। नसों की तुलना वृक्षों की अंतःछाल से की जा सकती है। मजबूत हड्डियों की तुलना काष्ठ के अंतःसार

भाग से की जा सकती है। मानवी मज्जा की तुलना वृक्ष के गूदे से की जा सकती है।''

इस संदर्भ में उन्नीसवीं एवं बीसवीं सदी के चार्ल्स डार्विन, जगदीशचन्द्र बसु एवं राउल फ्रांस जैसे विश्व विख्यात अनुसंधानकर्ताओं ने वनस्पति एवं प्राणिजगत का गहन अध्ययन करके जो जानकारियां प्राप्त की थी वे सभी जानकारियां ऋषि-मुनियों को प्राचीनकाल से ही थी। मर्द्धन्य मनीषी एफ.डब्ल्यू.विलसन ने इस संबंध में ''हिस्ट्री ऑफ इंडिया'' के दूसरे खंड में लिखा है कि वे वृक्ष-वनस्पतियों आदि के अंतः और बाह्य गुण, धर्म, संरचना आदि के अति सूक्ष्म ज्ञान से अवगत थे। इतना ही नहीं इनकी विशेषताओं से, औषधीय गुणों से एवं अन्य उपयोगों से भी पूरी तरह अवगत थे। उन दिनों पेड़-पौधों का, जंगलों का आज की तरह विनाश करके वातावरण को विषाक्तता से भरकर पारिस्थितिकीय संतुलन को बिगाड़ा नहीं जाता था। इतिहास के पन्ने-पन्ने पर इस बात के प्रमाण भरे पड़े हैं।

''भारतीय कला'' नामक अपनी कृति में श्री वासुदेव-शरण अग्रवाल ने इस संबंध में बताया है कि सिंधु घाटी सभ्यता के समय की जो मुद्राएं प्राप्त हुई है, इनमें वृक्ष-वनस्पतियों की विभिन्न प्रकार की नक्काशी पाई जाती है। हड़प्पा संस्कृति की एक मुद्रा पर एक वृक्ष-लता एवं एक नारी बनाई गई है, जो उर्वरता एवं हरीतिमा संवर्द्धन की प्रतीक है। जो उर्वरता एवं हरीतिमा संवर्द्धन की प्रतीक है। चरक संहिता के विमान स्थान 3/11 में बताया गया है कि वनों का विनाश या जंगलों का कटते जाना राष्ट्र के लिए सर्वाधिक भयावह है, विशेषकर मानव-स्वास्थ्य के लिये। महाभारत के सोलहवें पर्व-राजधर्म, अनुशासन पर्व में स्पष्ट उल्लेख है कि पर्यावरण प्रदूषण के कारण मनुष्य दो प्रकार के रोगों का शिकार होते हैं। इनमें से एक रोग शरीर से संबंधित है तो दूसरा मन से। वस्तुतः ये दो तंत्र परस्पर घनिष्ठता से जुड़े हुए हैं। एक के बाद दूसरा अवश्य रुग्ण बन जाता है।

आयुर्वेद के महान व्याख्याता महर्षि चरक ने अपनी संहिता के विमान स्थान के तीसरे अध्याय के दूसरे श्लोक में विस्तारपूर्वक बतलाया है कि पर्यावरणीय प्रदूषण के कारण ऋतुएँ अपने शीत, ग्रीष्म, वर्षा आदि धर्म से च्युत होने लगेंगी। पृथ्वी के रस सूखाने लगेंगे, जिससे औषधीय पौधे अपने प्रभाव से वंचित होने लगेंगे और भिन्न-भिन्न प्रकार की नवीन बीमारियों से मनुष्य ग्रसित होता जाएगा। पदार्थ, मिट्टी आदि अपने सामान्य गुण, धर्म, रंग, गंध, स्वाद, स्पर्श आदि से विपरीत पाए जाएंगे। आवश्यकता से अधिक नमी पाई जाएगी। हानिकारक प्राणियों, जीव-जंतुओं-विषाणुओं की अभिवृद्धि से प्राणी तथा वनस्पति जगत नए-नए प्रकार की बीमारियों से त्रस्त रहेंगे।

इसी तरह महाभारत के अठारहवें पर्व के दसवें अध्याय के चौदहवें श्लोक में उल्लेख है कि वृक्ष-वनस्पतियों पर प्रदूषित वातावरण का प्रभाव पढ़ने से वे मुरझा जाते हैं। परिणाम स्वरुप विषाक्तता की अधिकता वातावरण में चहुं ओर भरती जाती है। पेड़-पौधों की अधिकता न केवल आरोग्यकार शुद्ध वायु वितरित करके स्वास्थ्य-संवर्द्धन में सहायक होती है, वरन जलवृष्टि का संतुलन घनाए रखने में भी सहायक होती है। शांतिप्रदायक यज्ञों की सुगंधित वायु इसमें चार चांद लगा देती है।

अमेरिका में केनेड़ा के गुलेप विश्वविद्यालय में कार्यरत सुप्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक प्रोफेसर ओ.पी.द्विवेदी ने अपनी कृति ''एनवायरनमेंटल क्राइसिसि एण्ड हिंदू रिलीजन'' में कहा है कि वर्तमानकाल में प्राकृतिक पदार्थों, वनस्पति एवं जीवजगत के अंधाधुंध शोषण के कारण ही पर्यावरण का इस हद तक अपकर्ष हो रहा है, जो स्वयं मानवी अस्तित्व के लिए एक भयावह संकट बन गया है। उन्होंने इसके मूल में मनुष्य की पर्यावरणीय नीति में अतीव लापरवाही बरतना और समाज के लिए नये मानदंडों की रचना करने में विफलता को माना है।

हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो के उत्खनन से प्राप्त प्रमाणों से यह स्पष्ट होता है कि तत्कालीन निवासियों को जल एवं वातावरण प्रदूषण की पूरी जानकारी थी और नागरिक स्वास्थ्यरक्षा के लिये हर प्रकार के प्रबंध की व्यवस्था थी। भारतीय साहित्य में रामायणकाल से लेकर कुमारगुप्त एवं सम्राट अशोक के काल में नागरिक स्वास्थ्य रक्षा प्रत्येक का कर्त्तव्य माना गया था और लापरवाही के लिये अपराध संहिता थी। कौटिल्य अर्थशास्त्र के दूसरे अध्याय में वातावरण प्रदूषित करनेवालों के लिये भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रदूषणों के लिये दंड विधान निर्धारित था। इतना ही नहीं नगरों को प्रदूषण से बचाने के लिये विभिन्न स्थानों में पेड़ विशेष लगाने का प्रावधान था। आज के पर्यावरण प्रदूषण से बचने का उपाय कुछ इसी तरह के प्रावधानों को अपनाने से हो सकता है, जिसमें जन-जन की भागीदारी हो। केवल सरकारी प्रयत्नों से यह संभव नहीं है। ***❊ राग के बिना संसार नहीं और संसार के बिना राग नहीं।***

54 जिनालयों में पूजा करने वाले सुश्रावक "जिनदास"

आज जब एक ओर जिन मंदिर घर के पास में होते हुए भी प्रतिदिन प्रभुदर्शन या जिनपूजा करने के लिये उपेक्षा या आल्सय करने वाले जैनकुलोत्पन्न अनेक आत्माएं विद्यमान हैं तब दूसरी और भूतकाल के विशिष्ट जिनभक्त श्रावक पुंगवों की स्मृति करानेवाले बेजोड़ प्रभुभक्त सुश्रावक भी जिनशासन में विद्यमान हैं।

प्रतिदिन 54 जिनालयों में न केवल प्रभुदर्शन किन्तु जिनपूजा करनेवाले श्रावकरत्न आज भी विद्यमान हैं यह बात शायद किसी को असंभव सी लगती होगी मगर दिनांक 28-1-2016 के दिन अहमदाबाद के एक उपाश्रय में ऐसे श्रावकरत्न से हमारी भेंट हुई तब उनके हृदय के उद्गार सुनकर हमारा हृदय भी अत्यन्त भाव विभोर हो गया था।

अपना नाम मुद्रित नहीं करने की उन निःस्पृह प्रभुभक्त आत्मा की खास विज्ञप्ति होने से हम यहां उनको ''जिनदास'' नाम से उल्लेख करेंगे।

मूलतः राधनपुर के निवासी किन्तु वर्तमान में अहमदाबाद में रहे ''जिनदासभाई'' (उ.व.47) को धार्मिक संस्कार तो माता-पिता से संप्राप्त हुए थे, उनमें भी प.पू. आचार्य भगवंत श्री कल्याणसागर सूरीश्वरजी म.सा. एवं मामा रमणिकभाई की शुभ प्रेरणा से प्रभुभक्ति का अनूठा रंग लग गया है।

अपनी पूर्वावस्था का निखालसता से वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि ''वि.सं.2031 से 2045 तक 15 साल तो मैंने भौतिक समृद्धि हेतु पद्मावती देवी की बहुत उपासना की थी लेकिन उससे कृततप का अनुभव नहीं हुआ था। फिर एक दिन मेरे मामा (कि जिनकी बेटे ने दीक्षा अंगीकार की है) ने मुझे झकझोरते हुए कहाकि- जिनदास देव-देवी की पूजा के पीछे पागल बनने के बजाय 64 इन्द्र असंख्य देव-देवी जिनके दास हैं ऐसे देवाधिदेव अरिहंत परमात्मा की भक्ति के पीछे पागल बनेगा तो तेरा बेड़ा पार हो जायेगा।

.... और समय पर की गई इस टकोर ने मेरे जीवन में परिवर्तन ला दिया। वि.सं.2045 के भाद्रपद महिने में शंखेश्वर तीर्थ में गया वहां पद्मावती देवी से मैंने कहाकि- आज से मैं केवल अरिहंत परमात्मा की शरण अंगीकार करता हूं, इसलिये साधार्मिक के रुप में आप के ललाट पर तिलक करुंगा, इससे अधिक कुछ भी नहीं कर सकूंगा मुझे क्षमा करें। उसके बाद देवी उपासना के कारण अरिहंत परमात्मा की हुई उपेक्षा के लिये सारी रात प्रभु को याद करके बहुत रोया उस रात को मुझे प्रभुदर्शन हुए।

तब से मैं प्रतिदिन प्रभुभक्ति करने लगा। प्रारंभ में कुछ दिन तक पूजा करने में विशेष भाव नहीं आते थे, फिर भी मैंने संकल्प किया कि- ''अगर मेरी आर्थिक परिस्थिति में थोड़ा सुधार होगा तो मैं एक जिनालय बनवाऊंगा।'' देवगुरु की कृपा से मेरी यह भावना अल्प समय में सफल हुई फलतः अहमदाबाद में ही एक जगह जिनालय की खास आवश्यकता थी। उसके समाचार मुझे मिलते ही मैंने मौका देखकर वहां से श्रीसंघ की विनंती की, यह लाभ मुझे दें। संघ ने मेरी विनंति का स्वीकार किया। वि.सं.2046 में माघ शुक्ल चतुदर्शी के शुभ दिन में उस जिनालय में 450 वर्ष प्राचीन श्री सहस्रफणा पार्श्वनाथ भगवंत की प्रतिष्ठा प.पू.आचार्य भगवंत श्री कल्याण सागर सूरीश्वरजी म.सा. के वरद हस्त से हुई।

प्रारंभ में हम किराये के मकान में रहते थे, लेकिन जब से उपरोक्त जिनालय बनवाने का संकल्प किया तब से आर्थिक परिस्थिति ठीक होती गई। फलतः वि.सं.2049 में राधनपुर से सिद्धाचलजी महातीर्थ का छःरी पालक यात्रा संघ प.पू.आ. भ.श्री कल्याण सागर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में निकालने का महान लाभ भी हमारे परिवार को मिला। अन्य श्रावक के द्वारा हमें ज्ञान हुआ कि इस संघ की पूर्णाहुति के प्रसंग पर अहमदाबाद से 75 बस एवं राधनपुर आदि से 75 बस कुल मिलाकर 150 लकझारी बसों द्वारा श्री जिनदास भाई ने ने साधर्मिक बंधुओं को पालीताना निमंत्रित करके 2 दिन तक उनकी अत्यंत अनुमोदनीय भक्ति की थी। तीर्थमाल के दिन पूरे पालीताना नगर को भोजन का निमंत्रण दिया था। उस दिन कोई तांगेवाला भी अगर भोजन के लिये आता तो उसे भी प्रेम से भोजन कराया गया था।

उपरोक्त जिनालय निर्माण एवं छःरी पालक यात्रा संघ के बाद प्रभुभक्ति के भावों में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि होती गयी। मेरे परम उपकारी आचार्य भगवंत ने भी मुझे जिनभक्ति विशिष्ट रुप से करने के लिये प्रेरणा करी मुझे भी लगा कि मुझ में तप करने की विशेष शक्ति नहीं है, लेकिन प्रभु भक्ति संसार सागर को तैरने के लिये सरल और सरल और सचोट उपाय है। पार्श्वनाथ भगवान के जीव ने पूर्व भव में प्रभुजी के 500 कल्याणकों की उजमणी हर्षोल्लास के साथ की थी, तो मैं कम से कम हर रोज 500 प्रभुजी के दर्शन पूजन तो करुं। ऐसी भावना से प्रेरित होकर मैं हर रोज सुबह 5.30 से 9.30 तक 44 जिनालयों में प्रभुपूजा करता हूं। उसके बाद नवकारसी करके पुनः आसपास के 10 जिनालयों में पूजा करता हूं। अन्य किसी गांव में मैं रहता होता तो शायद इतने जिनालयों में

पूजा करने की सुविधा मुझे नहीं मिल सकती मगर अहमदाबाद में यह लाभ आसानी से मिल रहा है उसका मुझे अत्यन्त आनंद है ।आप किस किस जिनालय में हर रोज पूजा करते हैं ? इस प्रश्न के प्रत्युत्तर में उन्होंने निम्नोक्त जिनालयों की गणना करवाई। शाहपुर में-2, खाडिया में-1, हठीसिंग का-1, पंचभाई की पोल में-2, घीकांटा में-1, जेसिंगभाई की वाड़ी में-1, पांजरापोल विस्तार में-5, रिलीफ रोड़ शांतिनाथ जिनालय-1, लहेरिया की पोल-1, जगवल्लभ पार्श्वनाथ आदि-5, झवेरी वाड एवं दोशीवाड़ा की पोल में-12, पतासा की पोल में-4, शेख के भाई में-4, देवसा की वारी में-4, इस तरह-44 जिनालयों में पूजा करने के बाद 9.30 बजे नवकारसी करके पुनः विजय नगर में -1, नारणापुरा चार रास्ता में-1, प्रगति नगर में-1, मीरांबिका-1, शांतिनगर में- 2, झवेरी पार्क में-1, हसमुख कालोनी में-1, इस तरह के 10 जिनालय मिलाकर कुल 54 जिनालयों में पूजा करता हूं, प्रत्येक जिनालय में मूलनायक प्रभुजी की नवांगी पूजा करता हूं, बाकी के भगवान के दो अंगुष्ठएवं ललाट पर तिलक करता हूं, बाकी के भगवान के दो अंगुष्ठ एवं ललाट पर तिलक करता हूं। प्रारंभ में एकाध जिनालय में पूजा करता था तब अपेक्षित एकाग्रता और भाव नहीं आते थे, लेकिन इस तरह अनेक जिनालयों में पूजा करने में अत्यन्त आनंद और उल्लास का अनुभव होता है। प्रभुजी का दर्शन करते ही हृदय भाव विभोर बन जाता है। आंखों में हर्षाश्रु की धाराएं बहने लगती हैं। ऐसे अवर्णनीय आनंद की अनुभूति होती है, कि न पूछो बात ! मेरा अंतस् कहता है कि अब 4-5 भवों से ज्यादा समय तक संसार में भटकना नहीं पड़ेगा। ये अश्रु ही मेरी सच्ची संपत्ति है। इसके सिवा मुझे और कुछ नहीं आता। इस तरह अनेक जिनालयों में दर्शन-पूजन करने से आनुशंगिक रुप से दूसरा विशिष्ट लाभ यह भी होता है कि विविध जिनालयों में प्रभुदर्शन करने के लिए पधारे हुए करीब 200 जितने साधु-साध्वीजी भगवंतों के दर्शन भी हो जाते हैं। हाल में तो जिनदर्शन करने के लिये जिनालय में जाना पड़ता है और जिनवाणी श्रवण करने के लिये उपाश्रय में जाना पड़ता है, मगर अब इन दोनों का एक ही स्थान पर लाभ लेने की भावना रहती है, अर्थात् अब तो समवसरण में साक्षात श्री जिनेश्वर भगवंत के दर्शन और देशना श्रवण करने के मनोरथ हैं और वे जरुर पूरे होंगे ही ऐसी श्रद्धा है। अब तो साक्षात श्री जिनेश्वर भगवंत के वरद हस्त से ही चारित्र अंगीकार करना है और ऐसा निरतिचार चारित्र पालन करना है कि जिससे उसी भव में मुक्ति की प्राप्ति हो जाय। उन्होंने यह भी कहा कि- मुझे अब जब भी तीर्थंकर परमात्मा या केवली भगवंत मिलेंगे तब मुझे उनसे निम्नोक्त 4 प्रश्न पूछने हैं- (1) मुझको किन सिद्ध भगवंत ने निगोद से बाहर निकाला ? (2) इस से पूर्व में कौन से तीर्थंकर भगवंत की देशना मैंने सुनी थी ? (3) परमात्मा की देशना सुनने के बाद भी किस कारण से मैं अब तक संसार में भटकता था ? (4) अब किन भगवान के शासन में मेरा मोक्ष होगा ? अब तक आपने किन-किन तीर्थों की यात्रा की है। ऐसे एक प्रश्न के प्रत्युत्तर में उन्होंने कहाकि-प्रतिवर्ष 1 बार पालीताना की यात्रा करता हूं और निम्नोक्त 5 तीर्थों में प्रत्येक महिने में एक बार अवश्य जाता हूं। 1- मोड़ता रोड़-श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ भगवान का 52 जिनालय 2-श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ 3- श्री जीरावाला पार्श्वनाथ 4-चारुप 5- भीलाड़-नंदिग्राम। प्रत्येक शनि-रविवार के दिन तीर्थयात्रा का लाभ लेने में बहुत आनंद का अनुभव होता है। उसमें भी राजस्थान में नागौर जिले में मेड़ता रोड़ के श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ भगवंत के जिनालय में मुझे सब से ज्यादा आनंद की अनुभूति होती है। यदि आप किसी भी श्रावक को तीर्थयात्रा के लिये प्रेरणा करें या मेड़ता रोड़ की यात्रा करने की खास प्रेरणा करें ऐसी मेरी नम्र विनंति है। 4-5 घंटे तक वहां जिनभक्ति करने के बाद उस गांव में अन्य कोई प्रवृत्ति न करते हुए अन्यत्र चले जाना चाहिये। अब भारत के सभी जैन तीर्थों की यात्रा 2-3 साल में करने की मेरी भावना है। सूरत में अडाजण पाटिया चार रस्ता के पास एक जिनालय की आवश्यकता होने से वहां जिनालय बनवाने का लाभ भी श्री देव गुरु की कृपा से मुझे मिला है। वहां 210 किलोग्राम वजन के पंचधातु के श्री विमलनाथ भगवान की प्रतिष्ठा करवाने की भावना है। जिनभक्ति और उपकारी गुरु महाराज की प्रेरणा की फुलश्रुति के रुप में मेरा मुख्य लक्ष्य निम्नोक्त तीन सद्गुणों को आत्मसात करने का है 1- समता 2- एकाग्रता 3- जीवमैत्री। किसी जीवकों यदि अन्य कुछ भी नहीं आता हो, मगर इन तीन सद्गुणों को अगर यह आत्मसात कर ले तो उसका बेड़ा पार हुए बिना रहेगा नहीं। सभी जीव मूल स्वरुप की अपेक्षा से सिद्ध परमात्मा है, इसलिये किसी भी जीव की अवगणना आशातना नहीं हो उसके लिए मैं सजग रहता हूं...। ऐसा भी ज्ञात हुआ है कि ''जिनदासभाई'' राधनपुर मे रहते थे तब अपने पिताजी की प्रति मासिक तिथि के दिन समूह आयंबिल करवाते थे और आयंबिल के प्रत्येक तपस्वी को 40-50 रुपयों के उपकरण प्रभावना के रुप में देते थे। ऐसे उदारदिल, विशिष्ट प्रभुभक्त सुश्रावकश्री के दृष्टांत में से प्रेरणा लेकर सभी जीव विशिष्टप्रभुभक्ति द्वारा अपने जीवन को सफल बनाये यही शुभ भावना।

(सभार- युवा प्रबोधन)

वर्ग पहेली क्रमांक-321

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		2		■	3	■	4	
	■		■	5		6		■
7	8	■	9		■		■	10
■		■	11		■	12	13	
14		■	15		16	■	17	
18		19	■	20		■		■
	■		■	21		■	22	23
■	24		25		■	26	■	
27		■		■	28			

बाएं से दाएं:-

1- विहरमान सुरप्रभजी की माता (4)
4- आबू रोड़ के निकट भ.आदिनाथ का प्राचीन तीर्थ (2)
5- भ. पार्श्वनाथ की जन्म स्थली (4)
7- भ.पार्श्वनाथ की माताजी का नाम---देवी (2)
9- राणकपुर का प्रसिद्ध मंदिर नलिनी गुल्म--- न के समान है (2)
11- भगवान अरनाथजी की माता का नाम म---वी (2)
12-रात्रि का विलोम शब्द (3)
14- उज्जैन में बिराजे है---न्ति पार्श्वनाथ भगवान (2)
15-योद्धा,वीर व्यक्ति कहलाता है- शू--- (3)
17-भ.महावीर के बड़े भाई-नन्दीव--- (2)
18-बड़्वानी में स्थित प्रसिद्ध जैन तीर्थ बाव--- (3)
20-चुल्ल शतक और महाशतक भगवान महावीर--ख्य दस श्रावकों में से है (1,1)
21---आगमन श्रेणिक गए वंदन वीर जिणंद, प्रसेनचंद्र मुनि वंदता पूछे, भव ना फंद (2)
22-जामनगर में स्थित कृष्ण बलदेव पूजित प्रतिमा-वाला भ.नेमिनाथ का तीर्थ- नगर (2)
24-आचार्या चंदनाजी द्वारा स्थापित धर्मसंस्थान ---न (4)
27- महाराष्ट्र के धूलिया जिले में स्थित भ.विमलनाथ का तीर्थ बल--- (2)
28-भ.महावीर का एक भव--- (4)

वर्ग पहेली क्रमांक-320 का परिणाम

ना	गौ	र	■	सु	पा	र्श्व	■	■
■	त	■	क	म	ठ	■	स्ति	क
रि	म	ता	ल	■	शा	न्ति	ना	थ
या	■	ल	श	मा	ला	■	पु	■
ला	द	न	■	ध्य	■	न	र	क
■	म	■	अ	म	र	मु	■	वि
स्व	यं	प्र	भ	■	ल	नि	पि	ता
य	ती	■	य	से	न	■	ण्ड	■
म्भू	■	म	दे	व	■	ल	वा	ड़

ऊपर से नीचे:-

1- चाणस्मा तीर्थ में बिराजे है श्री--- पार्श्वनाथ (3)
2- भ.महावीर के मुख्य दस श्रावकों में से एक है काम--- (2)
3- नलिया व जखौ तीर्थ के निकट स्थित जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु का तीर्थ---(2)
4- भ.महावीर का तीर्थ, यहीं से ओसवाल वंश का उद्भव माना जाता है---या (2)
5- अश्वसेन के राज दुलारें, --- प्राण प्यारे (स्तवन) (4,1,2)
6- आचार्य श्री सिद्धसेन दिवाकर रचित स्त्रोत- श्री कल्या---र स्त्रोत (1,2)
8- धार जिले में स्थित श्री सुपार्श्व प्रभु का ऐतिहासिक तीर्थ---ढ़ (4)
9- चली स्थित प्रसिद्ध नवीन तीर्थ तारंगा---धाम(3)
10-आठ मंगल में से एक है-सिं--- (3)
13-भ.महावीर के जन्म के बारहवें दिन सिद्धार्थ राजा ने उनका नाम रखा- --- (4)
14-चौदहवें तीर्थंकर का नाम है श्री--- नाथ स्वामी (3)
16-वीरायतन धर्मसंस्थान के प्रेरणा स्त्रोत है- श्री अम--- (1,2)
19-गुजरात में ऊना के निकट स्थित पारस प्रभु का तीर्थ अ--- (3)
23- भगवान श्री अभिनंदन स्वामी का लांछन/चिन्ह--- (3)
24-माँ सरस्वती के हाथों में शोभित है (2)
25-मातंग नाम है भ.महावीर स्वामी के--- (2)
26- बाहर चक्रवर्ती में से एक हैं --- सेन (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-321

*** आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.**

नीचे दिये गये वाक्यों का उत्तर सिर्फ एक ही अक्षर में लिखें।

1- लक्ष्मीजी।
2- एक्सरे में कौन सी किरणें होती है।
3- एक से भले....
4- आकाश....
5- बचे पानी को कहते है....
6- मां सरस्वती का बीजाक्षर।
7- पंचामृत में शामिल एक द्रव्य....
8- दिल, चित्त।
9- चक्रवर्ती का एक रत्न।
10-संगीत का प्रथम अक्षर।
11-बुद्धि।

धर्म, कर्म, नीति, न्याय, रोज की चर्चाओं तथा व्यवहार में जो होता है उसके बारे में सभी लोगों को मालूम है कि यदि सिर्फ प्रशंसा ही होती रहे तो हम बहुत गलत रास्ता भी पकड़ सकते है और गलत कार्य से भी अपने आप को नहीं रोक सकते है।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता क्रं. 030001000331
IFSC Code ICIC0000300

वर्गपहेली क्रमांक-320 के परिणाम

विजेता:-
1- हंसा वैभव जैन,देवास (म.प्र.) - प्रथम
2- प्रेक्षा धारीवाल, शुजालपुरसिटी (म.प्र.) -द्वितीय
3- लेखारानी हिंगड़, नीमच (म.प्र.) -तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे:-
स्नेहलता जैन, मंदसौर, रेशमदेवी कोठारी, चंदनबाला जैन, सुधा धारीवाल, भारती जैन, मीना जैन, प्रभा जैन, देवास, सुधा लोढ़ा, उज्जैन, प्रियांशी जैन, नरवल।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-320 के परिणाम

विजेता:-
1- स्नेहलता जैन, मंदसौर (म.प्र.) - प्रथम
2- रेशमदेवी कोठारी, नीमच (म.प्र.) -द्वितीय
3- चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) -तृतीय

सही उत्तर -
1- 36000, 2- 18000, 3- 108, 4- 72, 5- 18, 6- 198, 7- 1215, 8- 1008, 9- 1008, 10- 45,00,000 11- 18

इनके भी उत्तर सही थे:-
सुधा धारीवाल, देवास, सुधा लोढ़ा, उज्जैन,

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-2-2022 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमश:51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

श्री नागेश्वर में 200 में उपधान तपाराधक युवा जैनाचार्य की अमृत निश्रा में जैनत्व का लायसेंस प्राप्त करेगें

✻ 2 फरवरी को महामांगलिक होगी। ✻ मालवा सम्मेलन स्थगित हुआ। ✻ गुरु समर्पण महोत्सव छट्टी पुण्यतिथि पर मनाया गया। ✻ श्री नमिऊण पार्श्वनाथ प्रभु का महाजाप आरंभ। ✻ श्रीनागेश्वर में श्रावक से श्रमण बनने की तपाराधना उपधान। उपधान तपाराधकों की रथयात्रा 2 मार्च को। ✻ उपधान मालरोपण 3 मार्च को होगा। ✻ उपधान तप का गुरु नवरत्न उपधान तप समिति के संयोजन में।✻ चार्तुमास मुंबई या मालवा में शीघ्र तैय होगा।

नागेश्वर- राज. बोरा में महा मांगलिक प्रदान करने के बाद श्री नागेश्वर तीर्थ में प्रवेश के साथ ही पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के नाम को रोशन करने वाले अपने युवा शिष्यों मंडली के साथ जिन शासन को शोभायमान करनेवाले गुरु नवरत्न कृपा पात्र, युवा हृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.सा. प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म.सा., प.पू. मुनि श्रीतीर्थरत्न सागरजी म. सा., प.पू. मुनि श्री उदयरत्नसागरजी म.सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ञवलरत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीगंभीररत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीरम्य रत्नसागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीलब्धिरत्नसागरजी म. सा.आदि ठाणा के दर्शन वंदन के लिये श्री संघों का मंगल आगमन लगातार नागेश्वर तीर्थ में हो रहा है। उपधान तपाराधना का मंगल शुभारंभ होने के साथ ही 200 के लगभग आराधक साधनारत है। कोरोना के कारण मालवा महासंघ का सम्मेलन स्थगित किया गया है। दिनांक 23 जनवरी को पूज्यपाद गुरुदेव नव रत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा की 6 टी पुण्यतिथि पर गुरुसमर्पण और स्मरण पर गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। आचार्य श्री विश्व रत्नसागर सूरीजी म.सा. ने 24 जनवरी से श्री नमिऊण पार्श्वनाथ प्रभु के महाजाप का शुभारंभ किया है। आपके चार्तुमास की विनंती मालवा के साथ महाराष्ट्र और गुजरात के अनेक श्री संघों के द्वारा की गई है। मुंबई के अनेक संघों की विनंती है साथ ही ठाना श्री संघ की भी जोरदार विनंती है। चार्तुमास के बारे में शीघ्र ही निर्णय लेकर एक बड़े कार्यक्रम में श्रीसंघों की उपस्थिति में उद्घोषणा की जायेगी ।उपधान माल तक श्री नागेश्वर तीर्थ में स्थिरता के बाद बड़ा आयोजन पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा का 79 वां जन्म दिवस चैत्र वदी-3 दिनांक 21 मार्च 2022 को आ रहा है। आयोजन कहां होगा इसकी घोषणा भी श्री नागेश्वर तीर्थ में होगी इसके अलावा अन्य महत्वपूर्ण महोत्सव आयोजनों की घोषणा भी होगी। उपधान के दौरान आगामी कार्यक्रम के बारे में विस्तार से रुपरेखा बनेगी।

✻ पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में राजगढ़ में जीर्णोद्धार कर नवनिर्मित हुए दादा श्री आदिश्वर प्रभु के भव्य जिनालय का प्रतिष्ठा महोत्सव मई माह में होगा उज्जैन में चैत्र नवपद ओली आराधना करवायेंगे साथ ही आपके जन्म का 50 वां महोत्सव का आयोजन उज्जैन में होगा।

अपूर्व मंगल गुरुकुल त्रिपरी मुनिश्री की निश्रा में उपधान के बाद छ:रिपालित संघ का आयोजन हुआ

✻ चार्तुमास रायपुर श्री संघ में होगा।

पालीताना- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म.सा.के शिष्य परिवार श्री नव-अपूर्व-अमर कृपापात्र बंधु त्रिपुटी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद निश्रा म उपधान तप की माल का महोत्सव के बाद आपश्री की निश्रा में देपालपुर के श्री सुगनबाई सिरेमलजी चौधरी परिवार के द्वारा आयोजित सोनगढ़ से पालीताना संघ का आयोजन जोरदार रहा। संघ का प्रयाण दिनांक 9 जनवरी को हुआ तथा संघमाल 13 जनवरी को दादा के दरबार में हुई।**स्मरण रहे मुनिमंडल का आगामी चार्तुमास रायपुर श्री संघ में होने जा रहा है।**

श्री गिरनार महातीर्थ में 18 अभिषेक तथा दादा के जिनालय पर ध्वजारोहण का मंगल प्रसंग

जूनागढ़-परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय हेमवल्लभ सूरिश्वरजी म.सा. एवं जूनागढ़ में बिराजमान पूज्य आचार्य भगवंत पदस्थ मुनि भगवंतों तथा अन्य पूज्य साधु साध्वीजी म.सा. श्री गिरनार महातीर्थ के मूलनायक परमात्मा श्री नेमिनाथ दादा, श्री आदिश्वर भगवान जिनालय श्री अमिजरा पार्श्वनाथ भगवान की देरी,श्री वस्तुपाल तेजपाल, श्री संप्रति-राजा, श्री मेरकवसहि, श्री संग्रामसोनी श्री कुमारपाल के जिनबिम्ब तथा तलेटी के जिनालय स्थित जिनबिंब एवं पगलिये आदि के अट्ठारह अभिषेक वि.सं. 2078 (गुजराती) फाल्गुन-वद-तेरस चौदस, अमावस्या, बुधवार-गुरुवार-शुक्रवार 30-31 मार्च, 1 अप्रेल 2022 के दिनों में अट्ठारह अभिषेक एवं मूलनायक दादा के जिनालय की 893 वीं सालगिरह वि.सं.2078, वैशाखा-सूद-पूनम, सोमवार, दिनांक 16-5-2022 के शुभ दिन में श्री नेमिनाथ दादा जिनालय के शिखर की ध्वजा, श्री आदिश्वर भगवान जिनालय, श्री अमिजरा पार्श्वनाथ भगवान की देरी तथा अंबिकादेवी की देरी पर ध्वजारोहण होने जा रहा है।

पूजा दीक्षित हुई

उना- पूज्य आचार्यश्री केशर सूरीजी म.सा. के समुदाय के आचार्य गच्छाधिपति आचार्य श्री विजय विज्ञान प्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में पूना में आयोजित प्रवज्योत्सव शुभ लग्नांश वेला में पूज्य आचार्यश्री के हस्ते पूजा रजोहरण ग्रहण करेंगी। दिनांक 25 से 27 जनवरी 2022 तक आयोजित हुआ। वर्षीदान वरघोड़ा 26 जनवरी को निकला। कुमारी पूजा की दीक्षा दिनांक 27 जनवरी 2022 को हुई। साध्वी श्री चैत्यरत्नाश्रीजी म.सा. का शिष्यत्व ग्रहण किया।

चैन्नई में उपधान तप का आयोजन

चैन्नई- परमात्मा श्री ऋषभदेव द्वारा प्ररुचित आर्य संस्कृति के अनुसरणमय धर्म का सारथी तप उपधान का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य आचार्यश्री कल्पतरु सूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्य श्री तीर्थभद्रसूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी की निश्रा में आयोजित हो रही। श्रावक से श्रमण बनने की आराधना उपधान तप का शुभारंभ दिनांक 22 दिसंबर को हुआ एवं मोक्षमाला दिनांक 7 फरवरी को होगी। श्री मुनि सुव्रतस्वामी नवग्रह मंदिर एवं तमिलनाडु जैन महामंडल आदि के तत्वावधान में यह तपाराधना होगी। श्री वर्धमान जैन मंडल सेवा देगा।

सूरत में दीक्षा हुई

सूरत- पूज्य आचार्य भगवंत श्रीरत्नमुन्दर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में श्री सालेरवाड़ी श्री संघ में दिनांक 21 जनवरी को मुमुक्षु श्री भव्यकुमार, श्री वंदनकुमार एवं भव्यकुमार दीक्षित हुवे इसके पूर्व एक और दीक्षा दिनांक 15 जनवरी को लक्षकुमार की भी हई।

आचार्य पद प्रदान किया जायेगा

मुंबई- भुवनभानुसूरी समुदाय के गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से पूज्य पंन्यास श्री जयेशरत्नविजयजी एवं पंन्यास श्री प्रेमसुन्दर विजयजी म.सा. को आचार्य पद पर आरुढ़ करने की उद्घोषणा श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन संघ घाटकोपर मुंबई से दिनांक 8 नवंबर को की गई। आचार्य पद दिनांक 24 अप्रेल को अहमदाबाद में प्रदान किया जायेगा।

गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी ने मालवा पदार्पण कर मालवा के श्री संघों को उपकृत किया

✻ अनेक श्री संघों में आपकी पुण्यवानी के दर्शन हुए।
✻ चार्तुमास उदयपुर में होगा।
✻ आगामी महामांगलिक श्री भोपावर महातीर्थ में।

उज्जैन--आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा के मालवा आगमन पर मालवा के श्री संघों ने पलक पावड़े बिछाकर जोरदार अगवानी की सभी श्री संघों में आपके आगमन पर आपश्री पुण्यवानी के दर्शन हुए आपके मालदास स्ट्रीट जैन श्वेतांबर श्री संघ के तत्वावधान में में चार्तुमास की उद्घोषण हुई है आपका विहार राजस्थान से मालवा की ओर हुआ था मालवा पहुंचने पर श्री संधों के द्वारा आपकी जोरदार आगवानी की गई पूज्य मुनि प्रवरश्री अक्षयरत्नसागरजी म.सा. से हुई चर्चा के अ नुसार आप श्री भोपावर महातीर्थ पधारेंगे। यहां 5 मार्च को दादा श्री शांतिनाथ प्रभु की ध्वजारोहण का आयोजन होगा।

कोद से भोपावर महातीर्थ का संघ

पूज्यश्री की निश्रा में कोद से श्री भोपावर महातीर्थ का छःरिपालित संघ का आयोजन भी होने जा रहा है। कोद से संघ का प्रस्थान दिनांक 29 जनवरी को तथा महातीर्थ में माल 2 फरवरी को होगी। महामांगलिक भी होगी। संघ का आयोजन सिसोदिया परिवार के द्वारा हो रहा है।

चैन्नई में 11 दीक्षा एक साथ 17 फ रवरी को जैनाचार्य श्री तीर्थभद्रसूरीजी की निश्रा में होगी

चैन्नई- आचार्य भगवंत श्री तीर्थ भद्रसूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में उनके सुशिष्य मुनिप्रवर श्री तीर्थरुचिविजयजी म.सा. गणी और पंन्यास पद से विभूषित किया गया। पूज्यश्री की निश्रा में 11 मुमुक्षुओं की एक साथ दीक्षा का मुर्हूत 17 फरवरी 2022 दिया गया है। दीक्षा श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ वेपेरी चैन्नई के तत्वावधान में होगी। पूज्यश्री के आगामी चार्तुमास की जय श्री विजयवाड़ा श्री संघ की उपस्थिति में बोली गई। आपका आगामी चार्तुमास विजयवाड़ा में होगा।

धन्य गिरिराज.... धन्य मुनिपुंग

पालीताना- अद्भूत महातीर्थ श्री शत्रुंजय और अद्भूत है गिरिराज के दादा की भक्ति करनेवाले जितनी महिमा की जाए उतनी कम। दादा का पुण्य प्रभाव की कोई तुलना नहीं हो सकती। दावण गिरि में जैनत्व के सम्पर्क में आनेवाले अजैन युवा को जैन धर्म ऐसा अंगीकार हुआ की प्रभुवीर के अणगार बन के मुनिश्री देवासिद्ध विजयजी नाम पाया। आपने इस वर्ष दादा की भक्ति करने की ठाणी और श्रमण समुदाय का नाम जगत में मशहूर कर दिया। आपने प्रतिदिन उपवास में रहते हुए दादा की चार यात्रा की, 27 उपवास में आपने दादा के दर्शन वंदन करते हुए 108 यात्रा पूर्ण कर दिनांक 17 जनवरी को आपकी यह साधना पूर्ण हुई। नाम के अनुरुप मुनि भगवंत ने देव के रुप में सिद्धि को प्राप्त कर अपने नाम को अमर कर दिया।

मुमुक्षु शिवांगी के प्रवज्या पर्वोल्लास पर पंचान्हिका महोत्सव : दीक्षा 17 फरवरी को

ब्यावरा- पूज्य आचार्य भगवंत श्री पद्मभूषणरत्नसूरीश्वरजी एवं आचार्य देव श्री निपुणरत्नसूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में कुमारी शिवांगी का प्रवज्या पर्वोत्सव पंचान्हिका महोत्सव के साथ व्यावरा श्री संघ में दिनांक 13 से 17 फ रवरी तक आयोजित होगा। दिनांक 17 फरवरी को संयम जीवन पर प्रवचन भक्ति अनुष्ठान दिनांक 15 फरवरी को मात्-वित् वंदनांजलि, संयम उपकरण वंदनांजलि होगी। दिनांक 16 फरवरी को परमात्मा की स्नात्र पूजन और दीक्षार्थी का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित होगा। दिनांक 17 फरवरी को दीक्षार्थी का रजोहरण ग्रहण महोत्सव पूज्य गुरु भगवंतों की अमृत निश्रा में शुभ लग्नांश वेला में सम्पन्न होगा।

अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. के आगामी कार्यक्रम

✻ 5 फरवरी 2022, शनिवार, श्री त्रिभुवनभानु पार्श्वनाथ श्री मणिभद्रवीर जैन महातीर्थ शिवपुर मातमोर में श्री माणिभद्रवीर का भव्य जन्मोत्सव।

✻ 6 फरवरी 2022, चापड़ा में वीरमणि साधर्मिक भवन का उद्घाटन।

✻ 12 फरवरी 2022, राऊ में प्रभु प्रतिष्ठा रजत जयंती महोत्सव।

✻ 13 से 15 फरवरी, देवास श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर में ध्वजारोहण तथा श्री शत्रुंजयावतार तीर्थ में श्री भुवनभानुसूरीजी म.सा. तथा श्री नाकोड़ा भैरवनाथ की भव्य प्रतिष्ठा।

✻ 18 से 20 फरवरी 2022, तनोड़िया में विशाल जिनमंदिर की प्रतिष्ठा।

पूज्य जैनाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी ने देवास में मांगलिक भवन का भूमि पूजन करवाया

✻ चार्तुमास अहमदाबाद नरोड़ा में होगा।

देवास- भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में इन्दौर में धर्म जाग्रति और तप का शंखनाद के बाद आचार्य श्री चन्द्रकीर्ति सागर सूरीश्वरजी आदि ठाना उज्जैन पधारें यहां वर्षीतपराधकों की अनुमोदना में 250 से अधिक उपवास कर आयोजन 16 जनवरी को हुआ। सभी आराधकों को 300 रुपये की प्रभावना हुई। यहां से आपश्री ने देवास की ओर प्रस्थान किया जहां 21 से 25 जनवरी तक जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 23 जनवरी को आदेश्वर मांगलिक भवन का भूमिपूजन आपश्री की निश्रा में हुआ। पूज्य गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी की पुण्यतिथि के अवसर पर श्री पार्श्व पंचकल्याणक तथा साध्वीश्री इन्दुश्रीजी की पुण्यतिथि निमित्त श्री नवपद पूजन का आयोजन किया गया। यहां से आपश्री ने ताजपुर की और विहार किया जहां उपाश्रय का खनन मुर्हूत आपश्री की निश्रा में हुआ।पूज्य मुनिश्री पद्म कीर्ति सागरजी म.सा. ने 94 वीं वर्धमान ओलीजी की आराधना शाता पूर्वक चल रही है। **आपश्री का चार्तुमास अहमदाबाद नरोड़ा में निश्चित हुआ है।**

आचार्यश्री हंसरत्नसूरीजी का पारणा हुआ

मुंबई- अनेक बार तप धर्म का डंका बजानेवाले आचार्यदेव श्री हंसरत्न विजयसूरीजी म.सा.के 180 उपवास का पारणा चौपाटी जैन श्री संघ मुंबई में दिनांक 29 जनवरी को भव्य अनुमोदन के साथ पारणा हुआ।

108 फीट दादा की वर्षगांठ मनाई

पालीताना- शाश्वत तीर्थराज श्री सिद्धक्षेत्र पालीताना में स्थित जम्बुद्वीप परिसर में निर्मित दादा श्री आदिनाथ प्रभु की 108 फीट ऊंची प्रतिमा की प्रतिष्ठा की तीसरी वर्षगांठ 30 जनवरी को मनाई गई। पूज्य आचार्य भगवंत श्री अशोकसागर सूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा रही। सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई।

भक्तामर तीर्थ में ध्वजारोहण हुआ

धार- श्री भक्तामर महातीर्थ अभ्युदयधाम में तीसरा ध्वजारोहण महोत्सव दिनांक 6 फरवरी को मनाया गया। पूज्य साध्वीवर्या श्री पद्मलता श्रीजी म.सा.की निश्रा रही है। सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई।

सोनई में प्रतिष्ठा महोत्सव मना

सोनई- महाराष्ट्र सोनई नगर में दादा श्री आदिनाथ प्रभु के जिनमंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव आचार्य भगवंत श्री अभयदेवसूरीजी म.सा.एवं आचार्य भगवंत श्रीमोक्षरत्नसूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में आयोजित हुआ। दिनांक 24 जनवरी को गुरु भगवंतों का तथा 27 जनवरी को प्रभु प्रतिमा का प्रवेश हुआ। श्री पार्श्व पद्मावती तथा वृहत्त नंदावृत्त महापूजन पढ़ाई गई। प्रतिष्ठा धूमधाम से 3 फरवरी को हुई। दिनांक 4फरवरी को द्वारोद्घाटन हुआ। कार्यक्रम की पूर्णाहुति 5 फरवरी को हुई।

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री राजयश सूरजी महाराजा के कार्यक्रम

* वार्षिक ध्वजारोहण 3-महावद-13 दिनांक 28 फरवरी 2022 श्री माणि लक्ष्मी तीर्थ।
* फागण सुद-3 दिनांक 5 मार्च श्री स्तंभन तीर्थ खंभात।
* धणाय तीर्थ में पोष दशमी अष्टम आराधना 28 से 30 दिसंबर।
* जीवनधारा वृद्धाश्रम का उद्घाटन 15 जनवरी 2022।
* दिनांक 4 फरवरी गच्छाधिपति पद की प्रथम वार्षिकी।
* दिनांक 5 फरवरी मोडासा 67 जिनालय तीर्थ का भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव।
* आगामी चार्तुमास पूज्यश्री एवं बहन महाराज आंबावाड़ी-अहमदाबाद (गुज.)
* हैदराबाद टी-19 जिनालय के 5 जिनबिंब अंजन प्रतिष्ठा अरिहंतनगर अहमदाबाद (गुज.)।

साध्वीवर्या श्री भव्यदर्शना श्रीजी म.सा. को 100 वी ओली का पारणा 11 मार्च को

शंखेश्वर- सागर समुदाय में एक बार फिर आयंबिल तपाराधना का डंका बजा। सागर समुदाय को गौरव प्रदान करनेवाली महातपाराधिका साध्वी श्री प्रशमप्रज्ञा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी दिव्यदर्शना श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री भव्यदर्शना श्रीजी म.सा. 99 वीं ओलीजी चाणस्या तीर्थ में चार्तुमास में पूर्ण की। आपका पारणा यहां दिनांक 24 अक्टूबर को हुआ था एवं 100 वीं ओली आरंभ की। आपको 100 वीं ओली का पारणा श्री शंखेश्वर महातीर्थ में अष्टान्हिका महोत्सव के साथ होगा। महोत्सव का शुभारंभ दिनांक 4 मार्च को होगा एवं पारणा दिनांक 11 मार्च को होगा। सागर समुदाय के उपाध्याय श्री वैराग्य रत्न सागरजी म.सा.ने हरिद्वार में 153-154 ओली संलग्न, स्मितदर्शना श्रीजी ने 52 वीं ओली पूर्ण की है।

राष्ट्र संत की निश्रा में संघ

अहमदाबाद-जैनाचार्यश्री कैलाश सागर सूरीजी महाराज के समुदायवर्तीय जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्री पद्मसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की पावन निश्रा में मीराम्बिका अहमदाबाद से श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ दिनांक 24 फरवरी को प्रस्थान कर दिनांक 3 मार्च को श्री शंखेश्वर महातीर्थ पहुंचेगा, दिनांक 4 मार्च को संघ माल होगी।

पूर्व के अशुभ कर्मों का उदय आने पर,उन्हें वेदन करने में अगर शोक करते हो तो अब यह भी ध्यान रखो कि नवीन बंधते हुए कर्म परिणाम में वैसे ही तो नहीं बंधते ?

भगवान आदिनाथ मंदिर की प्रतिष्ठा दिसंबर में

जयपुर- गलता गेट के बाहर जयपुर-दिल्ली हाइवे पर स्थित जयपुर खारतरगच्छ संघ द्वारा तथा मरुधर ज्योति प.पू.श्री मणिप्रभा श्रीजी म.सा. की प्रेरणा से निर्माणाधीन श्वेत संगमरमर के विशाल जैन मंदिर की प्रतिष्ठा दिसंबर वर्ष 2022 में होना निश्चित हुआ है, प्रतिष्ठा महोत्सव में खारतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.के अतिरिक्त खारतरगच्छ संघ के अधिकांश साधु-साध्वियों के पधारने की पूर्ण संभावना है,

मेरे गुरु दर्शनसागर पुस्तक का विमोचन

मुंबई- पूज्य आचार्य श्री चन्द्रानन सागर सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में सागर गच्छाधिपति रहे और पूज्यश्री के गुरु की पुस्तक ''मेरे गुरु दर्शनसागर गागर में सागर'' का विमोचन पूज्यश्री की निश्रा में पाकर हाल में दिनांक 30 जनवरी को किया गया।

सुमेरपुर में शाश्वती चैत्र ओली का आयोजन

सुमेरपुर- श्री वल्लभ समुदाय के आचार्य भगवंत श्री चिदानंद सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में शाश्वती चैत्र ओली का आयोजन होने जा रहा है। उत्तर पारणा दिनांक 7 अप्रेल को होने के साथ दिनांक 8 से 16 अप्रेल तक ओली आराधना होगी। पारणा 17 अप्रेल को होगा। ओलीश्री अभिनव महावीर घास वर्धमान जैन बोर्डिंग हाउस छात्रावास में होगा।

पालीताना में उपधान नव्वांणु यात्रा

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जगतचंद्रसूरीजी, श्री कुलचंद्र सूरीजी, श्री अभयचंद्र सूरीजी, श्री संयमरत्नसूरीजी, श्री हीरचंद्रसूरीजी, श्री रश्मिराजसूरीजी, श्री जिनेशरत्न सूरीजी एवं श्री हेमवल्लभसूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में श्रमण-श्रमणी वृंद की निश्रा में गज भवन में उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप का प्रथम मुर्हूत 22 दिसंबर को तथा दूसरा मुर्हूत 24 दिसंबर को होगा। मालारोपण विधान 10 फरवरी 2022 को होगा। आपश्री की निश्रा में नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ 22 दिसंबर को तथा समापन 10 फरवरी को होगा इसके साथ ही त्रिदिवसीय छःरिपालित संघ यात्रा तथा अंजन प्रतिष्ठा के भी आयोजन होंगे। श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक पर अट्ठम के साथ पौष दशमी आराधना का आयोजन भी होगा।

पूज्यपाद जैनाचार्य श्री जयानंदसूरीजी की निश्रा में संघवी परिवार की तीन और कुल 17 दीक्षा शंखेश्वर में हुई

शंखेश्वर- श्री शंखेश्वर महातीर्थ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जयानंद सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में श्रमण महोत्सव का आयोजन दिनांक 24 से 26 जनवरी तक हुआ। श्री जे.के.संघवी परिवार हमेशा ही जिन शासन प्रभावक रहा है। आपके परिवार से श्री दिलीपजी-देशना बहन-भावना बहन संघवी के दीक्षित होने के साथ ही 17 दीक्षा का आयोजन हुआ। पूज्यश्री की निश्रा में भी दीक्षा महोत्सव हुआ था। दीक्षा महोत्सव उपकरणों की बोलियां पुण्यशालियों ने बढ़ चढ़कर ली। आयोजन में बड़ी संख्या में राजस्थान के साथ देशभर के धार्मिष्ठों की उपलब्धि रही।

सूरत में जैनाचार्य श्री हेमप्रभसूरीजी की निश्रा में 13 दीक्षा हुई तथा 28 दीक्षार्थी तैयार है

सूरत- श्री नीतिसूरीजी के समुदाय में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हेमप्रभ सूरीजी म.सा. के साथ 100 साधु भगवंतों एवं 300 साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में सूरत में 15 जनवरी यादगार बन गई। 13 मुमुक्षु ने इस दिन रजोहरण ग्रहण कर श्रमण समुदाय को गौरांवित किया इसके साथ ही 28 दीक्षार्थी जो आनेवाले समय में दीक्षा ग्रहण करनेवाले है उन्होंने सबको दर्शन देकर कृतज्ञ किया। दीक्षा महोत्सव जोरदार रहा।

श्री शंखेश्वर में उपधान

शंखेश्वर- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जयानंद विजयसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में बागरेचा परिवार के द्वारा उपधान तपाराधना का आयोजन होने जा रहा है। 44 उपधान तप की निश्रा प्रदान करनेवाले आचार्य श्री की निश्रा में शंखेश्वर में उपधान प्रवेश का मुर्हूत दिनांक 13 जनवरी 2022 को हुआ। माल की रथयात्रा दिनांक 3 मार्च को आयोजित होगी एवं मोक्षमाल 4 मार्च को होगी।

आचार्यश्री का चार्तुमास शिवपुरी में

शिवपुरी- शास्त्र विशारद प.पू. जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मसूरीजी म.सा. की परम्परा के गुरुदेव श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. के आजीवन चरणोपासक आचार्य श्री कुलचंद्रसूरीजी म.सा. पंन्यास प्रवर श्री कुलदर्शन विजयजी म. आदि ठाणा का सन् 2022 का चार्तुमास शिवपुरी (म.प्र.) में होना निश्चित हुआ है। स्मरण रहे सन् 2022 में श्री धर्म-सूरीश्वरजी म.सा.की 100 वीं पुण्यतिथि आ रही है।100 वीं पुण्यतिथि पू.आ. श्री कुलचंद्रसूरीजी (के.सी.म.) की निश्रा में धूमधाम से मनाई जाये तथा आपके चार्तुमास से विजय धर्मसूरि समाधि मंदिर का विकास तथा कायाकल्प हो सके इसलिये आपका चार्तुमास शिवपुरी में होना चाहिये।

गिरिराज से गिरनार महातीर्थ का संघ

पालीताना- पूज्य वैराग्यनिधि आचार्य भगवंत श्री कुलचंद सूरीजी म.सा., आचार्य श्री संयमरत्नसूरीजी म.सा., आचार्य श्री जिनेशरत्नसूरीजी म.सा. एवं आजीवन आयंबिलतप के तपस्वी श्री हेमवल्लभसूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी वृंद की निश्रा मेंश्री शत्रुंजय महातीर्थ से श्री गिरनार महातीर्थ का विशाल छःरिपालित संघ आयोजित होने जा रहा है। संघ का प्रस्थान गिरिराज से दिनांक 11 फरवरी को होगा। गिरनार महातीर्थ प्रवेश दिनांक 23 फरवरी तथा माल 24 फरवरी 2022 तक होगी।

श्री भोपावर महातीर्थ का द्वितीय ध्वजारोहण 5 मार्च को गणि श्री आदर्शरत्नसागर की निश्रा में होगा

भोपावर- 87000 हजार वर्ष प्राचीन श्री शांतिनाथ प्रभु का महातीर्थ अब विश्व ख्याति प्राप्त कर चुका है। दो वर्ष पूर्व फाल्गुन सुदी-3 को भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ था। मोन्टेक्स ग्रुप के श्री रमणभाई मुथा के नेतृत्व में यादगार महोत्सव का आयोजन आज भी धर्मिष्ठों को याद आता है। महातीर्थ का द्वितीय ध्वजारोहण महोत्सव दिनांक 5 मार्च 2022 को पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य अध्यात्म योगी श्री आदर्शरत्नसागरजी, अक्षतरत्न सागरजी म.सा. के साथ पूज्य साध्वी श्री दमिताश्रीजी म.सा., साध्वी मुक्ति दर्शना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में होगा। चैन्नई निवासी श्री तेजराज कोठारी परिवार ध्वजा के लाभार्थी है। इस अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेवश्री के मंदिर पर भी ध्वजा चढ़ाई जावेगी। श्री रमणभाई, श्री हितेशभाई आदि के साथ अनेक विशिष्ट अतिथियों का आगमन होगा।

जैनाचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी का आगामी चार्तुमास आगम मंदिर सिद्धक्षेत्र में होगा

✻ प्रतापगढ़ में उपधान तप की पूर्णाहुति हुई
✻ पालीताना में नव्वाणुं का आयोजन होगा।
✻ बोलिया के पास प्रतिष्ठा महोत्सव।

नागेश्वर- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज 255 ओली आराधक श्री आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, मुनिश्री चैत्य रत्नसागरजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी, मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास सिद्धक्षेत्र गिरिराज की छत्र छाया में स्थित आगम मंदिर में होगा साथ ही आगामी कार्तिक पूनम में वहां भव्य नव्वाणुं यात्रा और संभवतः उपधान तप का आयोजन भी होगा।

पूज्यश्री की निश्रा में प्रतापगढ़ के श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ परिसर तालाब किनारे श्रावक से श्रमण बनने की महाक्रिया उपधान तप का चल रहा है उपधान तप के तपस्वियों की भव्य शोभायात्रा का आयोजन 26 जनवरी को किया गया।तप की मालारोपण विधि 27 जनवरी को हुई। पूज्य साध्वीवर्या सौम्यवंदना श्रीजी आदि ठाणा-4 तथा साध्वी हितेषा श्रीजी आदि ठाणा-2 का सानिध्य भी है। साध्वी श्री अक्षय ज्योतिश्री की प्रेरणा से उपधान तप के लाभार्थी श्री देवेन्द्रकुमार साबुवाला परिवार जयपुर है।

✻ भक्ति ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है और सत्पुरुष के चरणों के समीप रह कर उसका सेवन किया जाय तो वह क्षण भर में मोक्ष दे ऐसा पदार्थ है।

अभिनव शत्रुंजयधाम की अंजन प्रतिष्ठा जनवरी 2022 में

रानी- श्री जैनाचार्य श्री नेमी सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवश्री सुशीलसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यदेव श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा. के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर रानी के सुशील विहारधाम अभिनव शत्रुंजय धाम का नव निर्माण किया गया है। तीर्थ का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 15 से 24 जनवरी 2022 तक आयोजित हुआ। प्रतिष्ठा 22 जनवरी को सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 153 चढ़ावों का लाभ लेने के लिये 1 लाख 8 हजार का नकरा तैय किया गया जिसका ड्रॉ निकालकर विजेता लाभ दियाजायेगा।

जाजम व जैन भवन का मुर्हूत किया

बैंगलूरु- शांतिनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ बिलावास के प्रतिनिधि मंडल ने बैंगलूरु के केन्टोन-मेंट स्थित मुनि सुव्रत स्वामी जैन मंदिर में विराजित आचार्य अरविन्दसागर के दर्शन वंदन किये। आचार्य से बिलावास (राज.) में नवनिर्मित पांच मंजिला शांतिनाथ जैन भवन के उद्‌घाटन का मुर्हूत प्रदान करने का आग्रह किया। इस अवसर पर आचार्य ने 7 मई 2022 का शुभ मुर्हूत प्रदान किया। संघ के आग्रह पर आचार्य अरविन्द सागर ने 6 मार्च 2022 को मुनि सुव्रत स्वामी जैन मंदिर में नामांतरण के चढ़ावे की जाजम का मुर्हूत भी प्रदान किया।

✻ जीवन प्रतिध्वनि है। जो दोगे, वहीं लौटकर आपके पास आयेगा। सुख दोगे, सुख मिलेगा, दुःख दोगे, दुःख मिलेगा। यह सत्य है।

सागर समुदाय में पूज्यपाद गच्छाधिपतिजी के साथ आगामी चार्तुमास की महत्वपूर्ण उद्घोषणा

✻ गच्छाधिपतिश्री का आगामी चार्तुमास अहमदाबाद होगा।

पूना- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवालेपूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा की 83 वीं दीक्षा तिथि कार्तिक वद-10 दिनांक 29-11-2021 को पूज्यश्री की ओर से अभी तक निर्धारित कुछ महत्वपूर्ण चार्तुमास की घोषणा की गई जो निम्न हैः-

✻ सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा पूज्य आचार्य भगवंत अजात शत्रु श्री नंदी वर्धन सागरसूरीजी, एवं आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री भीड़भजन पार्श्वनाथ जैन संघ गोदावरी-अहमदाबाद (गुज.) होगा।

✻ भोपावर प्रतिष्ठाचार्य पूज्य आचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री नववल्लभ पार्श्वनाथ जैन संघ नरोड़ा, अहमदाबाद (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री जिनचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्य आचार्य श्री हेमचंद्रसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास सूरत उमरा संघ तथा जैन महाजन पेढ़ी चाणस्मा दो क्षेत्रों में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री चन्द्रशेखर सागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री पादलिप्तपुरम्, पालीताना (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री चन्द्रानन सागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री लक्ष्मीवर्धन तपागच्छ भवन, पाल-सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी एवं आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी आदि ठाणा का चार्तुमास आगम मंदिर, पालीताना (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री अभ्युदयपुरम्, उज्जैन (म.प्र.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री सागरचंद्र सागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री आगमोद्धारक धानेरा आराधना भवन, वेसु-सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री नयचंद्रसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास ॐकारसूरी आराधना भवन, पाल-सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री अक्षयचंद्र सागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास मेरीन डाईव जैन संघ, मुंबई (महा.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री गुणचंद्रसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास वड़ाचौटा संघ, सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य पंन्यास प्रवर श्री लब्धि चंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास ओपेरा जैन संघ पाली-अहमदाबाद (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य गणिवर्य श्री आगमचंद सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास रांदेर रोड़, जैन संघ, सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य गणिवर्य श्री तारकचंद्र सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास जैन महाजन पेढ़ी, ऊंझा (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास मालदास स्ट्रीट जैन संघ, उदयपुर (राज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री सुधर्मसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अहमदाबाद (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री कुलरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास नेमुभाई की वाड़ी, गोपीपुरा सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री दीपरत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास पार्श्व विहार जामनगर (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री सुमतिसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास पालीताना गांव (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री देवप्रभसागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास बाबुलनाथ जैन संघ चौपाटी-मुंबई (महा.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री आगमरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास रायपुर जैन संघ छत्तीसगढ़ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री अभिनंदनचंद सागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास बीजापुर जैन संघ कर्नाटक में होगा।

✻ पूज्य मुनि श्री निपुण्यचंद सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास राजस्थान में होगा।

कालधर्म....

✻ पालीताना- श्री प्रेमभुवनभानु समुदाय के आचार्यश्री जगतचंद सूरीजी के सुशिष्य 100+83 ओली आराधक उपाध्याय श्री कनकसुन्दरविजयजी का देवलोक दिनांक 18 जनवरी को पालीताना में हुआ।

✻ श्री भक्ति सूरी समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री कल्पजय सूरीश्वरजी म.सा.का कालधर्म 16 जनवरी को हुआ।

✻ राजकोट- गौंडल समुदाय के श्री भव्य मुनिश्री का दिनांक 19 जनवरी को 59 उपवास के साथ 29 दिन के संथारे में राजकोट में कालधर्म हुआ। आपके गुरु श्री राजेन्द्र मुनि के दीक्षा दिन आपका कालधर्म हुआ।

श्री शंखेश्वर से सिद्धक्षेत्र पालीताना का छ:रि पालित संघ में सागर गच्छाधिपति की पावन निश्रा रहेगी

✻ बड़ी संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों का सानिध्य।
✻ अनुयोगाचार्य श्री लब्धिचंदसागरजी की पावन प्रेरणा।

शंखेश्वर- पूज्यपाद सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करन वालेपूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा पूज्य आचार्य भगवंत अजातशत्रु श्री नंदीवर्धनसागर सूरीजी, एवं आचार्य श्री हर्षसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा के साथ बंध त्रिपुटी आचार्य भगवंत श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी आचार्य भगवंत पूज्यपाद जिनचंद्रसागर सूरीजी एवं पूज्यपाद श्री हेमचंद्र सागर सूरीजी महाराजा आदि लगभग 500 साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में श्री शंखेश्वर से श्री सिद्धक्षेत्र पालीताना का छःरि पालित संघ का आयोजन होने जा रहा है। संघ के प्रेरणास्त्रोत अनुयोगाचार्य श्री लब्धि चंदसागरजी म.सा. है। संघयात्रा दिनांक 7 से 13 फरवरी के मध्य शंखेश्वर से श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की अंजनशलाका, 2 मुमुक्षु का प्रवज्योत्सव, अभिषेक आदि आयोजन भी होंगे। शंखेश्वर से संघ का प्रयाण 22 जनवरी को है। गिरिराज पर माल 16 फरवरी को है। दिनांक 15 फरवरी को मेरुगिरी उत्सव के अंतर्गत गिरिराज के सभी जिनमंदिर में अष्ट प्रकार की पूजन का लाभ भी मिलेगा।

श्री सिद्धाचल महातीर्थ में नव्वांणु एवं छ:रिपालित यात्रा संघ का आयोजन होगा

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जगतचंदसूरीजी म.सा. के सुशिष्यआचार्य श्री अभयचंद्रसूरीजी म.सा.आदि ठाणा-50 की अमृत निश्रा में यहां नव्वांणु यात्रा एवं छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। नव्वांणु यात्रा 16 अप्रेल 2022 से आरंभ होगी। 22 मई को छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होगा। 26 मई को नव्वांणु यात्रा की माल का आयोजन किया गया, यात्रा की पूर्णाहुति 14 जुन को होगी। यह आयोजन जैन संस्कार वाटिका हैदराबाद के द्वारा हो रहा है।

गज मंदिर में ध्वजारोहण होगा

ऋषभदेव- सर कीकाभाई प्रेमचंद ट्रस्ट श्री जैन श्वेतांबर गज मंदिर, केसरियाजी में वार्षिक ध्वजारोहण का दो दिवसीय महोत्सव 11 से 12 फरवरी को मनाया जायेगा। 11 फरवरी को परमात्मा के 18 अभिषेक होंगे एवं परमात्मा का वरघोड़ा आयोजित किया जायेगा। 12 फरवरी को विजय मुहूर्त में ध्वजारोहण एवं सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई जायेगी।

उपधान तपाराधना

चैन्नई- सभर साधना पथ उपधान का आयोजन पू.आचार्य श्री मेघदर्शनासूरीजी की निश्रा में प्रवेश दिनांक 21 अप्रेल तथा मालारोपण दिनांक 8 जून को होगी। श्री चन्द्रप्रभ जैन श्वेतांबर सेवा मंडल ट्रस्ट दक्षिण पावापुरी तीर्थ एयरपोर्ट मंदिर पल्लावरम् में उपधान होगा।

जैन महातीर्थ सम्मेद शिखर की रक्षा के लिये 25 जनवरी को भारत बंद का आव्हान सफल रहा

उज्जैन-विगत कुछ वर्षो से जैन धर्मावलब्धियों पर अन्य समुदाय के लोगों के द्वारा प्रभाविकों के साथ तीर्थो पर अधिकार करने तथा अन्य मंडल जैसे संगठनों के द्वारा जैन धर्म को बदनाम करने के कार्य किये जा रहे है। पालीताना-गिरनार और सम्मेद शिखर तीर्थ इसके ज्वलंत उदाहरण है जहां जैनों के पवित्र स्थानों, मंदिरों, मूर्तियों को अपवित्र करने के साथ अतिक्रमण करते जा रहे है। शासन-प्रशासन को हर स्तर पर अवगत कराने पर ठोस कार्यवाही नहीं होने से जैन जगत में आक्रोश पनप रहा है। इस संदर्भ में प्रधानमंत्रीजी को भी लाखों पत्र लिखे गये है। देश के सभी बड़ेशहरों में विशाल प्रदर्शन यात्रा निकालकर प्रशासन को ज्ञापन सौंपे गये है। दिनांक 25 जनवरी को शासन को जगाने के लिये सम्पूर्ण भारत में बंद का आयोजन किया गया। सारे जैन जगत को इसका व्यापक समर्थन मिलने से बंद पूर्ण रुप से सफल रहा है। अब बारी प्रशासन को कठोर निर्णय लेकर जैनों के अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिये आगे आना होगा।

मुमुक्षु प्राची का प्रवज्योत्सव पिपलोन श्रीसंघ सम्पन्न हुआ

पिपलोनकलां- कुडल बोहरा परिवार में कुमारी प्राची के संयम ग्रहण की भावना प्रबलता साकार होने जा रही है। प्राची का प्रवज्योत्सव पिपलोन श्री संघ में 23 जनवरी को मनाया जायेगा। पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनरत्नसागर सूरीजी म.सा., आचार्य श्री चन्द्ररत्न सागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा-6 के साथ साध्वीश्री चित्तव्रता श्रीजी की सुशिष्या अर्हम्व्रता श्रीजी म.सा.आदि ठाणा-3 के साथ अन्य साध्वीमंडल की निश्रा में प्रदान करने के लिये पधारें। दिनांक 19 जनवरी को श्री पार्श्व पंच कल्याणक पूजन दिनांक 20 जनवरी को श्री मणिभद्र पूजन हवन का आयोजन हुआ। दिनांक 21 जनवरी को श्री पार्श्वपद्मावती महापूजन हुई। दिनांक 22 जनवरी को मुमुक्षु प्राची का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित किया गया तथा श्री सिद्धचक्र महापूजन पढ़ाई गई। रात्री में विदाई समारोह हुआ। दिनांक 23 जनवरी को दीक्षा प्रयाण के लिये प्राची का दीक्षा वरघोड़ा दीक्षा मंडप में पहुंचा। यहां शुभ लग्नांश वेला में प्राची को रजोहरण आचार्य श्री ने प्रदान किया। दिनांक 24 जनवरी को नूतन साध्वीजी म.सा. के मंगल पगले सांसारिक निवास स्थान पर हुवे। श्री जिनरत्नसागर सूरीजी म.सा., पिपलोनकलां में दीक्षा सम्पन्न करवाने के लिये दिनांक 19 जनवरी को पिपलोन पहुंचने पर भव्य अगवानी की गई थी इसके पूर्व आपश्री की निश्रा में घसाई तीर्थ में दिनांक 14 जनवरी को श्री मणिभद्रवीर का हवन एवं महापूजन पढ़ाई गई।

चार्तुमास.... चार्तुमास....

✻ **अहमदाबाद-** पू.पंन्यास हंसबोधि विजयजी म.सा.आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास सेटेलाईट श्री प्रेरणा तीर्थ संघ अहमदाबाद में निश्चित हुआ है।

✻ **सूरत-** आगमोद्धारक श्री सागर समुदाय के आचार्य भगवंत वर्धमान तपोनिधि श्री नयचंदसागर सूरीजी म.सा.का आगामी चार्तुमास ऊंकार सूरी आराधना भवन, पाल-सूरत में निश्चित हुआ है।

✻ **जयपुर-** परम पूज्य खातर गच्छाधिपति आचार्य श्री जिन मणिप्रभ सूरीजी का 2022 का चार्तुमास जयपुर श्री संघ में होगा। श्री गिरनार तीर्थ में श्री संघ को पूज्यश्री ने स्वीकृति प्रदान की।

✻ **इन्दौर-** सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य श्री चन्द्रकीर्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा. का आगामी चार्तुमास श्री तिलकेश्वर पार्श्वनाथ श्री संघ तिलकनगर, इन्दौर में होगा। पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में श्री संघ की विनंती पर पूज्यश्री ने स्वीकृति प्रदान की।

✻ **सादड़ी-** श्री वल्लभसूरी समुदाय के श्री धर्मनंदविजयजी ध्रुव म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास-सादड़ी (राज.) में होगा। आपके चार्तुमास की घोषणा दिनांक 17 जनवरी को श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय पायधुनी मुंबई में हुई।

श्री पार्श्वपुरम् तीर्थ में प्रतिष्ठा

मुंबई-मुंबई गोवा मार्ग पर स्थित श्री पार्श्वपुरम् तीर्थ में सहस्त्र कूट की देहरी में 108 जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा का आयोजन होने जा रहा है। 20 फरवरी को तीर्थ संस्थापक आचार्यश्री सागरचंद्रसागर सूरीजी की निश्रा में प्रतिष्ठा होगी। वार्षिक चढ़ावे भी होंगे।

जैनाचार्य श्री रश्मिरत्नसूरीश्वरजी की निश्रा में 65 दीक्षा सम्पन्न हुई

सूरत- 451 दीक्षा दानेश्वरी आ. श्री गुणरत्नसूरीजी के आजीवन चरणोपासक आचार्य श्री रश्मिरत्न सूरीजी, आचार्य संयमरत्नसूरीजी आदि साधु भगवंत एवं प्रवर्तिनी सा.श्री पुण्य रेखाश्रीजी आदि 100 साध्वीजी भगवंत की निश्रा में वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए सभी दीक्षा एक जगह करने की बजाय अलग-अलग जगह पर रखी गई है। वेसु राजहंस सिंफोनिया के श्री राजहंस सुमति गुणरश्मि श्वे.मू. जैन संघ में 24 जनवरी एवं पुण्यभूमि वेसु में 14 फरवरी को भव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा होगी। ''अहो गुणश्रामण्यम्'' सिंहसत्त्वोत्सवो में 35 मुमुक्षु दीक्षा अंगीकार करेंगे। सूरत में 4, अहमदाबाद में 4, शेष मेवाड़, मारवाड़, गुजरात में 35 मुमुक्षु दीक्षा अंगीकार करेंगे, चातुर्मास पूर्व की दीक्षा मिलाये तो 65 दीक्षाओं की विरल घटना कही जा सकती है। श्रमणीगणनायक पू.आ. रश्मिरत्नसूरीजी के आज्ञानुवर्तिनी प्रवर्तिनी सा.श्री पुण्यरेखाश्रीजी म.सा. की शिष्याओं की संख्या 400 का अंक पार किया। महाविदेहधाम वेसु में 27 जनवरी की समूह दीक्षा में 400 वीं दीक्षा हुई वर्तमान समय की यह विक्रमी घटना है।

जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी जीरावला से वागड़ होते हुए उज्जैन की ओर विहार करेगें

✻ पादरू में महामांगलिक हुई। ✻ 15 से 20 तक जीरावला रहे।

उदयपुर- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरी जी म.सा. के तीसरे सुशिष्य आचार्य भगवंत वागड़ विभूषण प.पू. आचार्य श्रीमृदुरत्नसागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री मोक्षरत्नसागर जी मुनिश्री अर्हम्‌रत्नसागरजी सा .मुनिश्री पवित्ररत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा की राजस्थान में विहार करते हुवे श्री जीरावला महातीर्थ पधारे यहां 20 जनवरी तक स्थिरता के बाद उदयपुर वागड होते हुवे चैत्री ओलीजी आराधना उज्जैन तीर्थ में होने की संभावना है।चार्तुमास गुजरात में होने की संभावना है।। मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. को 96 वां ओली चल रही है।

अभ्युदयपुरम् में प्रतिष्ठा 4 फरवरी 2023 को

उज्जैन-पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा.,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागर जी म.सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में अभ्युदयपुरम् का प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 4 फरवरी 2023 को 23 दिवसीय भव्य आयोजन के साथ होगा। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 700 चार्तुमास स्थलों पर 250 आचार्य भगवंतों को आमंत्रण दिया गया है साथ ही प्रतिष्ठा हेतु 108 युवाओं की टीम बनाई जा रही है। लगभग 70-75 जिनबिम्बों के साथ नवग्रह मंदिर, 45 जिनालय का निर्माण यहां हुआ है। प्रतिष्ठा महोत्सव को सफल बनाने की तैयारियां आरम्भ हो गई है। आपकी निश्रा में श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ छःरि पालित यात्रा संघ के श्री नाकोड़ा प्रवेश पर दिनांक 15 जनवरी को श्री ऋषिमंडल महापूजन पढ़ाई गई। रात्रि में बहुमान कार्यक्रम हुआ। दिनांक 16 जनवरी को संघपति उपाधि और तीर्थमाल का आयोजन किया गया।

करेड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ में उपधान तप

भोपालसागर- श्री करेड़ा पार्श्व नाथ तीर्थ में आचार्य श्री पद्म भूषण रत्नसूरीजी, आचार्य श्री निपुणरत्न सूरीजी आदि ठाणा साध्वी श्री कीर्ति रेखा श्रीजी आदि ठाणा की पावन निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की तपाराधना उपधान का आयोजन 1 दिसंबर से प्रभय मुर्हूत तथा 3 दिसंबर से दूसरा-तीसरा उपधान का मुर्हूत है 7 जनवरी को उपधान तपस्वियों की शोभायात्रा निकाली गई इसके बाद धर्मसभा में माला के चढ़ावे हुए, रात्रि में सभी का बहुमान किया गया। दिनांक 18 जनवरी को माला रोपण विधि सम्पन्न हुई।

खुली पुस्तक प्रतियोगिता

उज्जैन- पू.आचार्य श्री जितरत्न सागरसूरीजी द्वारा लिखित पुस्तक पर ''खुली पुस्तक प्रतियोगिता'' का आयोजन हो रहा है। रत्नाकार पच्चीसी नाम की पुस्तक के लिये फीस की अंतिम तिथि 30 मई है। विजेता को अनेक पुरस्कार किये जायेंगे।

हमारे तीज-त्यौहार

1-	माघ सुदी-5	शनिवार	5/2/2022	श्री शंखेश्वर महातीर्थ की वर्षगांठ, अमिझरा तीर्थ वर्षगांठ पूज्य आगमोद्धारकश्री की दीक्षा तिथि
2-	माघ सुदी-6	रविवार	6/2/2022	आगम मंदिर श्री शंखेश्वर की वर्षगांठ जीरावला तीर्थ की वर्षगांठ
3-	माघ सुदी-14	मंगलवार	15/2/2022	कलिकाल सर्वसश्री की दीक्षा तिथि एवं गच्छाधिपति आचार्यश्री सूर्योदयसागरसूरीजी का कालधर्म दिन
4-	फाल्गुन वदी-7	बुधवार	23/2/2022	गुरु अस्त पश्चिम में
5-	फाल्गुन वदी-11	रविवार	27/2/2022	श्री आदिनाथ दादा का केवल ज्ञान कल्याणक

पंचक :–

आरम्भः-माघ सुदी-2, बुधवार, दिनांक 02/02/2022, समय- 06.46 बजे से

समाप्तः-माघ सुदी-6, रविवार, दिनांक 06/02/2022, समय- 17.11 बजे तक

पुष्प नक्षत्र :

आरम्भः-माघ सुदी-14, मंगलवार, दिनांक 15/02/2022, समय- 11.54 बजे से

समाप्तः-माघ सुदी-15, बुधवार, दिनांक 16/02/2022, समय- 13.50 बजे तक

सत्पुरुष की आज्ञा में चलने का जिसका दृढ़ निश्चय रहता है और जो उस निश्चय की आराधना करता है, उसे ही ज्ञान सम्यक् परिणामी होता है, यह बात आत्मार्थी जीव को खास लक्ष में रखने योग्य है।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

✲ आत्मचिन्तन से आप में दुर्गुणों का प्रवेश नहीं होगा और शरीर एवं हृदय को शुद्धता प्राप्त होगी।

सादर आमंत्रण

✲ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✲ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✲ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✲ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

विश्व विख्यात श्री नागेश्वर महातीर्थ में

गुरु कृपाप्राप्त परम पूज्य आचार्य देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा द्वारा

21 दिवसीय परमप्रभावी, विशिष्ट फलदायी, विघ्न विनाशक

श्री नमिऊण पार्श्वनाथ कल्प साधना प्रारंभ

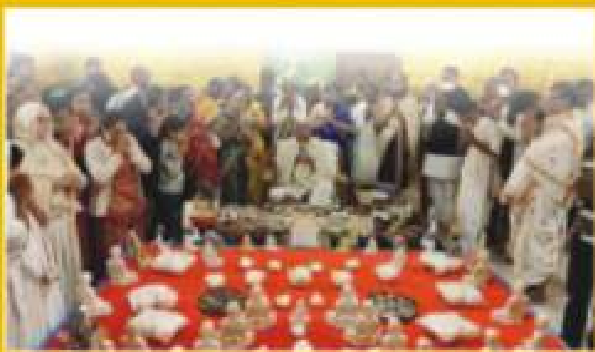

वर्ष 26 | माघ-फाल्गुन | फरवरी-2022 | अंक 1 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्रति, बुक पोस्ट

श्रीमान् ....

....

....

स्टाम्प टिकिट

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)

46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)

मो. 94250-91012, 8770884897

Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897